जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

का मासिक मुखपत्र

स्थापित - 1906

नवम्बर 2025, पृष्ठ : 50, मूल्य 6:00 रूपये

।। श्रमण संघ जयवन्त हो।।

।। श्रमण संघ हो अविचल मंगल।।

जय आत्म

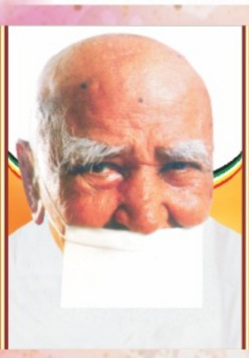

जय आनन्द

जय देवेन्द्र

जय शिव

चातुर्मास - 2025

के सफल एवं मंगल समापन पर

परम पूज्य संत - साध्वी जी महाराज

तथा समस्त चतुर्विध संघ को

सादर वंदन, नमन, अभिनंदन

ज्ञान, दर्शन और तप की इस पावन साधना के पूर्णत्व पर सम्पूर्ण श्रीसंघ हर्ष और श्रद्धा से अभिभूत है।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार

की ओर से

आपके मंगल विहार यात्रा हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

अहिंसा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अहिंसा

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

।। श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ ।।

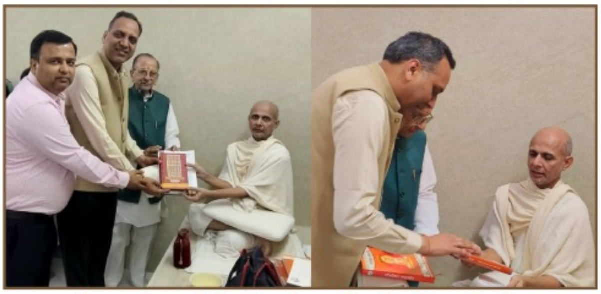

जैन भवन में आचार्य श्रीमद् विजय हंसरत्नसूरीश्वरजी म.के 180 दिवसीय उपवास व्रत के पारणोत्सव पर आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. द्वारा प्रेषित अभिनंदन पत्र एवं धार्मिक साहित्य भेंट करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण श्री सुभाषजी ओसवाल जैन, श्री महेन्द्रजी बोकरिया जैन, प्रो. डॉ. अमितराय जी जैन।

महाराष्ट्र प्रवर्तक पूज्य श्री कुंदनऋषिजी म.सा. के 92वें जन्मोत्सव की शुभकामनायें देते हुए जैन कॉन्फ्रेंस महाराष्ट्र के राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं प्रांतीय महिला पदाधिकारीगण तथा साथ में उपस्थित प्रबुद्ध विचारक पू. श्री आदर्शऋषि जी म.सा.।

वाचनाचार्य उपाध्याय पू. श्री विशालमुनिजी म. सा. उपप्रवर्तक पू. श्री अभिषेक मुनि जी एवं उपप्रवर्तक पू. श्री आशीष मुनि जी आदि ठाणा को त्रिनगर दिल्ली से विहार करवाते हुए युवा अध्यक्ष श्री विनीत जैन एवं युवा अन्य युवा पदाधिकारीगण।

चातुर्मास समापन के पश्चात् विहार करते हुए बदनापुर, महाराष्ट्र में श्रावको को मंगलपाठ प्रदान करते हुए श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री रमणीकमुनिजी म.सा. आदि ठाणा।

नादौन, हिमाचल में श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में वैरागन बहन शीतलजी जैन का भव्य बहुमान एवं तिलक समारोह के अवसर पर उपस्थित श्रावक-श्राविकाएं अनुमोदना प्रदान करते हुए।

नवकार आराधिका महाराष्ट्र प्रवर्तिनी पू. डॉ. प्रतिभाकंवरजी म.सा. से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए रतलाम श्रीसंघ अध्यक्ष श्री अजय जी खमेसरा जैन एवं श्री सुरेशजी कटारिया जैन, श्री गुनवंतजी मालवी आदि

वरिष्ठ उपाध्याय, वाचनाचार्य पू. डॉ. विशालमुनिजी म.सा. के 73वें पावन जन्मोत्सव के अवसर पर कानपुर में विशाल भंडारे के आयोजन के अवसर पर मौजूद उप-प्रवर्तक पू. श्री सतीशमुनिजी म.सा., राष्ट्रसंत पू. श्री सौरभमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, राजाजीनगर, बैंगलोर में वीर लोकाशाह जयंती एवं चातुर्मास कृतज्ञता दिवस के अवसर पर श्रमण संघीय उपप्रवर्तिनी तप कौमुदी महासती श्री निर्मलाजी म.सा. के पावन सान्निध्य में मौजूद श्रद्धालुजन।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 69 अंक - 11 नवम्बर - 2025 मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक

प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन
बड़ौत / दिल्ली

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट,
नई दिल्ली-110 001

011-23363729, 23365420

+91 90197 31906

E-mail : aissjc1906@gmail.com

Website : www.jainconference.org

youtube.com/@aissjc

facebook.com/aissjc1906

x.com/aissjc1906

instagram.com/aissjc1906

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

aissjc137342@cnrb

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

अनुक्रमणिका

अध्यक्षीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	09-10
सम्पादकीय	- प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	11
परिवार की आवश्यकता क्यों ?	- आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा.	12
मन के विहार को...	- आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	13
श्रमण संघीय विज्ञप्ति		14
अपना विकास अपने साथ	- युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.	15-16
मेरे भाग्य विधाता...	- पू. श्री आलोकऋषि जी म.सा.	17
चातुर्मास समापन...	- पू. श्री सुखदर्शन मुनि जी म.सा.	18-20
राष्ट्रसंत, आचार्य सम्राट्...	- श्री विशालऋषि जी म.सा.	21-23
विनम्रता का मूल्य	- श्री विजय जैन, पानीपत	23
नाम के नहीं काम के जैन...	- पू. श्री विमलकुमारी जी म.सा. 'निर्मल'	24-25
पन्द्रह कर्मादान और श्रावक धर्म	- डॉ. बी. रमेश गादिया जैन, बैंगलोर	25
जैन धर्म की विशेषतायें	- डॉ. शैली जी म.सा.	26
सभ्य समाज की नींव	- श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	27-28
1966 में गौभक्तों की हत्या	- श्री जसवंत जैन, दिल्ली	29
मानव सभ्यता की सबसे बड़ी...	- डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	32-33
अमृत वचनों के धनी...	- श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	34
शिक्षा का महत्व...	- श्री अमित कुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	35-37
धर्मवीर लोकाशाह...	- डॉ. दिलीप धींग जैन, चेन्नई	38-40
पूज्य प्रवर्तक प्रकाशमुनिजी...	- श्री हेमंत बागरेचा जैन, राजगढ़	40
विहार सेवा हेतु सूचना		41
समाचार प्रकाश		42-48

समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश'
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817	09.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
02.	श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838	10.	श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
03.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015	11.	श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
04.	श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440	12.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	13.	श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
06.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	14.	श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
07.	डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448	15.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
08.	श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795	16.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली - मो. : 98110 75336

राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली
मो. 98373 94448	मो. 83968 00000	मो. : 98116 14567

राष्ट्रीय चेयरमैन	राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री विजय जैन, पानीपत : 98966 00022	श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई : 76665 40600	श्री जसवंत जैन, दिल्ली : 98104 35108

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति

राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	98151 84811
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति

श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1)	98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2)	98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3)	94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर (ज़ोन - 4)	98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5)	98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर	98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98102 78217

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर	98440 58123

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्षः श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	93021 27805

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	98101 63165

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, वैजापुर	94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, औरंगाबाद	94207 64456

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

हर प्रांत जैन भवन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली	93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़बाहा	98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर	98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली	97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा

श्री विपुल जैन, दिल्ली - अध्यक्ष	87662 14456
श्री अंकुर जैन, दिल्ली - चेयरमैन	98711 98111
श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद - कार्याध्यक्ष	93767 37111
श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत - वरिष्ठ उपाध्यक्ष	93745 44138
श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद - महामंत्री	91522 11555
श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली - कोषाध्यक्ष	99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा

श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली - अध्यक्षा	98687 04326
श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत - चेयरमैन	94278 08401
श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली - वाईस चेयरमैन	98187 44166
श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत - वरिष्ठ उपाध्यक्षा	92515 74016
श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना - महामंत्री	79737 96548
श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली - कोषाध्यक्षा	92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष

श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98490 11350
श्री बी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	93710 75787
श्री सम्पत खाबिया जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली	98100 66701
श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, औरंगाबाद	98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, औरंगाबाद	93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे	98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय संगठन मंत्री	
श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदम्', दिल्ली	93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली	98681 06607
संविधान संशोधन समिति	
श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
डॉ. अशोक पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री एस. के. जैन, दिल्ली	98102 78217
श्री सुनील चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अनुशासन समिति	
राष्ट्रीय संयोजक : श्री एस. के. जैन 'सी. ए.', दिल्ली	98102 78217
सदस्य : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
सदस्य : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
सदस्य : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
सदस्य : श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
सदस्य : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
सदस्य : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456
जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति	
एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097
राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति	
सदस्य : श्री संजय ताराचंद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे	80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824
:: प्रांतीय महामंत्री ::	
श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764

जैन प्रकाश के पाठकों से अनुरोध है

आप जैन प्रकाश के सम्माननीय पाठक हैं। इसमें आपकी भी सहभागिता है। अतः समय पर रचनात्मक सुझाव तथा प्रकाशित रचनाओं पर मन्तव्य की अपेक्षा हम आपसे करते हैं।

समाचार प्रेषकों से - जैन कॉन्फ्रेंस व स्थानीय श्रीसंघ से सम्बन्धित प्रकाशन योग्य समाचार कृपया अविलम्ब भेजें। समाचार स्पष्ट व अक्षरों में सारपूर्ण ही लिखें। या टाईप करके भेजें। अन्यत्र प्रकाशित उन समाचारों की कतरन या फोटो कॉपी भी भिजवाई जा सकती है, जो आपको **'जैन प्रकाश'** में छापने योग्य लगे, पर इसमें विलम्ब न करें।

रचनाकारों से - रचना साफ अक्षरों में कागज के एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर लिखें। कृपया सारगर्भित व स्पष्टभाव वाली रचनाएँ प्रेषित करने का प्रयास रखें। अन्यत्र प्रकाशित उन सारगर्भित रचनाओं की कतरन या फोटो कॉपी भी भिजवाँ सकते हैं, जो आपको **'जैन प्रकाश'** के अनुकूल लगे। उनके स्रोत व प्रकाशन तिथि अवश्य दें।

प्रकाशकों / लेखकों से - 'साहित्य परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत हम प्रकाशनों का परिचय देने का क्रम प्रारम्भ कर रहे हैं। इसके लिए आप अपने प्रकाशनों की प्रतियाँ भिजवा सकते हैं। कृपया साथ ही यह अनुमति प्रदान करें कि उनमें से यदि हम किसी अंश का अवलोकन या उसका अंश प्रकाशित करना चाहें तो आपको आपत्ति न होगी।

Whatspapp On : 9019731906, E-mail : aissjc1906@gmail-com

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन : राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय वरिष्ठ मार्गदर्शक समिति - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

:: वरिष्ठ मार्गदर्शक ::

श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तद प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 78626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहमदनगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाबिया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

अध्यक्षीय

चातुर्मास की गौरवमयी उपलब्धियाँ एवं युवा शक्ति का आह्वान

E-mail : ajvk1973@gmail.com

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रिय पाठकों सादर जय जिनेन्द्र!

नवम्बर मास के प्रथम सप्ताह में चातुर्मास की पूर्णाहुति के साथ ही हमारे संत-सतीगण पुनः धर्म-प्रभावना की दृष्टि से ग्राम-ग्राम एवं नगर-नगर विचरण के लिए अग्रसर हो रहे हैं। उनके श्री चरणों का यह विहार न केवल जैन समाज के लिए, बल्कि समग्र मानव समाज के लिए आध्यात्मिक उत्थान का दिव्य अवसर होता है। चातुर्मास का यह पावन काल, आत्मशोधन, तप, स्वाध्याय और संयम का सौभाग्यपूर्ण अवसर प्रदान करता है।

पिछले चार महीनों में श्रद्धालुओं, भाई-बहनों ने गुरुदेवों की प्रेरणाओं से शास्त्रानुसार धर्माराधना के अनेक सार्थक प्रयास किए। अनेक स्थानों पर समाज के श्रावक-श्राविकाओं ने सुदीर्घ उपवास, अनशनों, प्रतिक्रमणों एवं विविध तपों के माध्यम से न केवल आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि जैन समाज के मस्तक को भी गौरवान्वित किया है। समाज में जागृत इस तपश्चर्या की भावना, आज भी हमारी परम्पराओं की उज्ज्वल जीवंतता का प्रमाण है।

यदि चातुर्मास के दौरान हमारे आचार-विचार, व्यवहार और जीवन-पद्धति में यत्किंचित् भी धार्मिकता, नैतिकता और आत्मिक सुधार आया है, तो यही चातुर्मास की वास्तविक उपलब्धि है। केवल आयोजन, सजावट और परम्परागत उत्सव ही धर्म का लक्ष्य नहीं, बल्कि जीवन के मूल्यों को निर्मल करना, विचारों को शुद्ध करना और व्यवहार को धर्मोक्त सिद्धांतों पर स्थापित करना, यही धर्म की आत्मा है।

इस अवधि में जहाँ व्यक्तिगत आत्मशोधन की दिशा में उत्कृष्ट प्रयास हुए, वहीं कई स्थानों पर सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं नैतिक उत्थान हेतु नई संस्थाओं की स्थापना, नई योजनाओं की शुरुआत और समाजिक गतिविधियों का सशक्तीकरण देखने को मिला। यह सब हमारे समाज की सक्रियता, जीवंतता और उज्ज्वल भविष्य के संकेत हैं। किन्तु, इन सबके साथ एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है-**श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज का सुदृढ़ संगठन। चातुर्मास की उपलब्धियों का मूल्यांकन तभी सार्थक होगा जब हम देखें कि साधु-साध्वियों के समूह ने समाज को संगठित, सशक्त और एकसूत्र में बांधने के लिए क्या-क्या प्रयास किए। समाज का संगठन ही वह शक्ति है जो हमारी परम्पराओं, मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुँचाती है।**

युवा शक्ति-समाज का भविष्य एवं वर्तमान : युवा साथियों! मैं आपको सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों हेतु सादर आह्वान करता हूँ। किसी भी समाज के विकास में युवाशक्ति ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उत्साह, नवाचार, कार्यशक्ति और साहस, इन चारों गुणों से युक्त युवा पीढ़ी हर परिवर्तन की धुरी रही है। इतिहास साक्षी है कि चाहे क्रान्ति का युग रहा हो, समाज-सुधार का आंदोलन हो या किसी बड़े लक्ष्य की प्राप्ति, युवाओं ने अग्रिम पंक्ति में रहकर ही सफलता को सम्भव बनाया है।

हमारा जैन समाज तो विशेष रूप से सौभाग्यशाली है कि यहाँ बुद्धि, प्रतिभा, उच्च शिक्षा, विशाल उद्योग-व्यवसाय और सात्विक संस्कारों से युक्त असंख्य युवा मौजूद हैं। यह भी सत्य है कि हमारी युवा पीढ़ी धर्म से विमुख नहीं है। वह धर्म के वैज्ञानिक, तर्कसम्मत और आडम्बर रहित स्वरूप की ओर गहन आकर्षण रखती है। उनके चिंतन, संस्कार

और शालीनता उनकी उत्कृष्ट परवरिश और श्रेष्ठ परम्परा का प्रतिबिम्ब है।

आज आवश्यकता है कि युवा अपने ज्ञान, ऊर्जा और क्षमता को समाज उत्थान की दिशा में समर्पित करें। हम वरिष्ठजन तो अपने अनुभव साझा कर सकते हैं, परन्तु उन्हें क्रियान्वित करने की शक्ति, नवीनता और गति केवल युवाओं में ही है। युग बदल रहा है, चुनौतियाँ बदल रही हैं, इसलिए कार्यक्रमों में भी नवीनता, तकनीकी क्षमता और युवा नेतृत्व आवश्यक है।

जैन कॉन्फ्रेंस के कार्यक्रम-युवाओं के सहयोग से ही सफल : जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आगामी वर्षों के लिए जो योजनाएँ बनाई गई हैं, वे **"जैन प्रकाश"** में प्रकाशित हो रही हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य समाज को अधिक संगठित, अधिक सशक्त और अधिक रचनात्मक बनाना है। कार्यक्रम तो अनेक हो सकते हैं, परंतु उन्हें क्रियान्वित करने वाला श्रम, समय, संकल्प और समर्पण युवाओं के बिना सम्भव नहीं।

अतः युवा साथियों! समाज आपको आदर, विश्वास और अपार आशाओं के साथ देख रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन की व्यस्तता के बीच से थोड़ा समय समाज-सेवा, संगठन-निर्माण और धर्म-प्रभावना के लिए भी निकालें। यही समय है जब आप अपने ज्ञान और क्षमताओं से जैन समाज के भविष्य को नवीन दिशा दे सकते हैं।

अंत में हम सबका लक्ष्य होना चाहिए व्यक्तित्व का शोधन, समाज का सुदृढ़ संगठन, युवाशक्ति का सक्रिय योगदान, धर्म-प्रभावना का विस्तार और जैन समाज को आधुनिक समय में भी आदर्श एवं प्रेरणास्रोत बनाना। हमें विश्वास है कि गुरु भगवंतो की अनन्त प्रेरणाओं के साथ, हम सभी मिलकर जैन समाज को और अधिक संगठित, सशक्त और प्रगतिशील बनाएँगे।

युवा शक्ति से अपील-विहार सेवा - एक सतत् त्यौहार : प्रिय युवा साथियों ! हम सभी वर्ष भर अनेक त्यौहार मनाते हैं-एक दिन, दो दिन, पाँच दिन या आठ दिन तक। परंतु चातुर्मास के समापन के साथ ही अब एक ऐसा सतत् आठ माह का त्यौहार प्रारम्भ हो रहा है, जिसकी हर क्षण में आनंद, अनुभूति और आत्मिक उल्लास का अमूल्य खजाना छिपा है, यह है विहार सेवा का त्यौहार।

विहार सेवा केवल एक कर्तव्य नहीं, बल्कि आत्मा के उत्थान और कर्मक्षय का अद्भुत माध्यम है। यह सेवा हमारे मन को विनम्र बनाती है, तन को चुस्त रखती है और जीवन में स्थिरता तथा संतुलन का वातावरण निर्मित करती है। विहार सेवा आनंद है, विश्वास है, निःस्वार्थ समर्पण है। यह वह साधना है जिसमें सेवा भी है और आत्मा का अवलोकन भी।

गुरुभक्त हृदय जब साधु-साध्वियों के विहार में तन-मन से सहयोग करता है, तो उस क्षण का पुण्य और अनुभूति शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती। इसलिए, जैन कॉन्फ्रेंस के सभी युवा साथियों से मेरा हार्दिक आह्वान है, आने वाले इस विहार-काल में अधिक से अधिक संख्या में सहभागी बनें। अपने क्षेत्र में विहार करने वाले पूज्य संत-साध्वीजी महाराज की सेवा में तन, मन और समय का अंश समर्पित करें।

गुरुभक्ति, सेवा और संयम का यह अनूठा अवसर जीवन में परम शांति, सौभाग्य और आत्मसंतोष का कारण बनेगा। विहार सेवा वास्तव में केवल साधु-साध्वियों की सहायता नहीं, यह अपने आप को देखने, सुधारने और उन्नत करने का पवित्र माध्यम है। **आइए, इस आठ महीनों के निरंतर त्यौहार में हम सब मिलकर भागीदार बनें और अपने जीवन को धर्म, सेवा एवं संस्कारों से आलोकित करें।**

❖❖

विहार सेवा क्या है ?

विहार सेवा कर्म काटने का माध्यम है।
विहार सेवा आपके मन को विनम्र बनाती है।
विहार सेवा तन को चुस्त रखती है।
विहार सेवा मन में स्थिरता का माहौल पैदा करती है।
विहार सेवा खुशी है, सेवा और विश्वास है।
विहार सेवा निःस्वार्थ सेवा।
विहार सेवा जीवन में सुख-शांति लाने का माध्यम है।
विहार सेवा सर्वश्रेष्ठ माध्यम है अपने आप को देखने का।
विहार सेवा प्यार है, सम्मान है।

सम्पादकीय

धर्म धारण करने की कला

- प्रो. (डॉ.) अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री

E-mail : amitraijain78@gmail.com

प्रिय पाठक बंधुओं एवं बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र!

चातुर्मास का पावन काल - आत्मचिंतन, तप, साधना और आत्मशुद्धि का काल - अब संपन्न हो चुका है। चार माह तक देशभर में अनेक स्थानकों में धर्म की गूंज रही। जहाँ-जहाँ चातुर्मास गतिमान रहे, वहाँ श्रद्धालुओं ने सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना में अपनी पूरी निष्ठा से सहभागिता निभाई।

सभी साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं और समर्पित गुरूभक्तों को इस महान आध्यात्मिक प्रयास हेतु कोटिशः धन्यवाद।

परंतु प्रश्न यह है कि - क्या यह चार माह की साधना केवल चातुर्मास तक सीमित रह जानी चाहिए? क्या धर्म केवल श्रवण करने, प्रवचन सुनने या स्थानक में बैठने तक का विषय है? नहीं! धर्म केवल करने की क्रिया नहीं, बल्कि 'धारण करने की कला' है।

जैसे सुगंधित फूल की पहचान उसकी खुशबू से होती है, वैसे ही सच्चे श्रावक की पहचान उसके आचरण से होती है। धर्म केवल पूजा, सामायिक या उपवास का नाम नहीं - यह तो हमारे व्यवहार, वाणी और विचार की पवित्रता में झलकता है।

यदि हम यह निश्चय करें कि -'आज मैं कटु वचन नहीं बोलूंगा, किसी के दिल को ठेस नहीं पहुँचाऊँगा, किसी जीव को दुःख नहीं दूँगा।' तो यही हमारा सच्चा धर्म है।

सामायिक हमारी व्यक्तिगत साधना है, परंतु हमारा सद्व्यवहार हमारे पूरे परिवार और समाज के लिए प्रेरणा बनता है। जब हमारा आचरण संयमित हो, जब हमारे जोश में होश शामिल हो जाए, तब हमारे जीवन की हर घड़ी धर्ममय बन जाती है।

भगवान महावीर ने कहा था - 'संसार के सभी जीवों को सुखी करना तुम्हारे बस की बात नहीं है, पर इतना अवश्य करो कि तुम्हारे कारण किसी भी जीव को दुःख न पहुँचे।' यही सच्चा धर्म है, यही आत्मधर्म है।

चातुर्मास की समाप्ति के साथ ही कई पूज्य साधु-साध्वियों के आगामी चातुर्मास की घोषणाएँ भी हो चुकी हैं। आठ माह तक वे पुनः पदयात्रा करते हुए जन-जन में अहिंसा, संयम और सदाचार का संदेश फैलाएँगे। अब हमारी श्रावकधर्म की परीक्षा है -विहार के दौरान हम उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखें, मार्गदर्शन में सहयोग करें और अगले स्थल के श्रावक-श्राविकाओं को यह जिम्मेदारी सौंपें।

विशेष आग्रह हमारे युवा वर्ग से - आप धर्म के इस सत्कार्य में आगे बढ़ें, साधु-साध्वियों के विहार में सहयोग दें, सेवा और सुरक्षा का दायित्व निभाएँ।

सर्दियों में धुंध और ठंड के कारण विहार करना कठिन हो जाता है, अतः सतर्कता और संवेदनशीलता दोनों आवश्यक हैं। यह केवल सेवा नहीं - यह हमारी धर्मभावना की परीक्षा है।

आइए, चातुर्मास के समापन के साथ साधना को विराम न दें, बल्कि उसे जीवन की प्रत्येक सांस में उतारें। हमारा हर कार्य, हर विचार, हर व्यवहार धर्म से जुड़ा हो - यही सच्चा 'धर्म धारण करने की कला' है।

सभी साधु-साध्वियों के मंगलमय विहार की हार्दिक शुभकामनाओं सहित आप सभी के जीवन में समता, संयम और सच्चे धर्म की सुगंध सदा बनी रहे-यही मंगल भावना।

परिवार की आवश्यकता क्यों ?

- द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा.

प्रत्येक मनुष्य प्रायः अपने परिवार के सान्निध्य में ही जन्म लेता है, किसी का परिवार छोटा सा-केवल एक या दो सदस्यों का होता है और किसी का बड़ा होता है। परिवार से वह सुरक्षा और उपकार की आशा रखता है। समय आने पर परिवार मनुष्य की बड़े से बड़े संकट से रक्षा करता है, उसे सहायता देता है। परिवार का निःस्वार्थ प्रेम ही परस्पर सहयोग और सहायता के लिए एक दूसरे को प्रेरित करता है। परन्तु कई बार परिवार एकदम छोटा होता है, या परिवार में कोई कमाने वाला नहीं होता, या परिवार में महिलाएँ रुग्ण, अशक्त, वृद्ध या धनोपार्जन करने योग्य नहीं होती, बच्चे छोटे होते हैं, अबोध लड़कों पर कोई आजीविका का भार नहीं डाला जाता अथवा परिवार में दो ही सदस्य हैं, पिता और बच्चा या माता और बच्चा, ऐसे समय में बीमार पिता या बीमार माँ को दूसरे की सहायता की अपेक्षा रहती है। अथवा मनुष्य बड़े परिवार वाला ही क्यों न हो, विदेश चला गया वहाँ बीमार हो गया, अथवा अकस्मात् रास्ते में कोई दुर्घटना हो गई अथवा अत्यन्त दरिद्र हो गया, ऐसे समय में भी उसे किसी बन्धु की अपेक्षा रहती है, जो उसे समय पर तत्काल सहायता दे सके।

संसार तो संकटों का घर है, शरीर बीमारियों का घर है, सांसारिक मनुष्य अनेक चिंताओं को लिए फिरता है, ऐसे समय में एकाकी चलना सहज नहीं होता। एकाकीपन के कष्ट या अन्य चिंताओं, संकटों या रोगों से त्रास पाने, सहानुभूति और सहयोग पाने के लिए उसे किसी न किसी बन्धु बान्धव की आवश्यकता रहती है, जो उसे संकट के समय आश्वासन दे सके, उसके दुःख को सहानुभूतिपूर्वक सुनकर हलका कर सके। मनुष्य को अपनी जीवन यात्रा सुख-शान्तिपूर्वक सरलता के साथ पूर्ण करने के लिए बान्धवों की कितनी आवश्यकता है ? यह किसी से छिपा नहीं है। जीवन यात्रा का लंबा पथ अनेकों उतार-चढ़ावों, अनुकूलता-प्रतिकूलताओं, सुखद-दुःखद परिस्थितियों से मिला-जुला होता है। जब मनुष्य के सामने दुःखद परिस्थितियाँ, प्रतिकूलताएँ या पतनावस्था आती है, उस समय केवल परिवार से काम नहीं चलता, उस समय उसे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता रहती है, जो उसको ऐसी संकट की घड़ियों में सहायता दे सके। उसे दुःख और विपत्ति के समय एक ऐसे सहयात्री की जरूरत रहती है, जो उसकी उस कठिन जीवन यात्रा को सरल, सुखद बनाने में मदद कर सके। भरा-पूरा परिवार होते हुए भी आकस्मिक संकट की घड़ियों में मनुष्य को किसी न किसी साथी की जरूरत पड़ती है।

व्यावहारिक जीवन में तो ऐसे किसी निःस्वार्थ बन्धु की अपेक्षा रहती ही है, आध्यात्मिक जीवन में भी ऐसे निःस्वार्थ हितैषी बन्धु की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता। मान लो, आप किसी न किसी दुर्व्यसन से ग्रस्त हैं और इतने ग्रस्त हैं कि उसके कारण आपका जीवन पतित हो गया है, आपके परिवार वाले कुछ भी सहायता नहीं कर पा रहे हैं, आपके व्यसन को मिटाने में वे असहाय होकर देख रहे हैं, ऐसी स्थिति में आपको एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है, तो आपके प्रति सहानुभूति रखकर आत्मीयता के साथ आपके दुर्व्यसन को मिटाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा सके, आपको उक्त दुर्व्यसन से मुक्त करके या उक्त दोष या बुराई से छुटकारा दिलाकर आपका जीवन-पथ धर्मयुक्त सरल सरस बना सके। क्या आप उस व्यक्ति को आध्यात्मिक बन्धु नहीं कहेंगे? क्या दोषों में फँस जाने पर आपकी आत्मा को उनसे उबार कर सच्चे मान में उद्धार करने वाले हितैषी बन्धु की आपको आवश्यकता नहीं रहती।

क्या ऐसे निःस्वार्थ परम हितैषी उपकारी व्यक्ति को आप अपना आत्म-बन्धु नहीं मानेंगे और समय आने पर उससे अध्यात्म जीवन को शुद्ध बनाने में सहायता नहीं लेंगे? परमात्मा को भी दीनबन्धु कहा जाता है, क्यों ? वे दीनों, असहायों एवं पतितों को सच्चे हृदय से की हुई पुकार को शीघ्र सुनते हैं। सुनते क्या हैं ? ऐसे व्यक्ति के अन्तःकरण में पड़ी हुई मलिनताओं को दूर करने की प्रबल प्रेरणा जगा देते हैं।

साभार : आनंद प्रवचन

मन के विहार को रोकना महत्वपूर्ण है

- अध्यात्मयोगी, आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा.

चातुर्मास अंतिम चरण में चल रहा है। यह सन्देश आप तक पहुंचेगा तब तक चातुर्मास सम्पन्न हो चुका होगा। चातुर्मासिक पक्खी हमारे अवलोकन की है। इस चातुर्मास काल में हमने अपने समय का उपयोग कैसे किया? क्या मैं नियमित धर्म की कुछ क्रियाएं करके तृप्त हुआ? धर्म प्रभावना के कुछ कार्य करके चातुर्मास की सफलता मान रहा हूँ या निश्चय में अपने जीव को समय दिया? सभी धर्म क्रियाओं में एवं शारीरिक क्रियाओं में 'मैं' जीव कहा था? प्रमाद में समय बीता या अप्रमत होकर एक-एक समय का उपयोग जीव के लिए कर पाया? उक्त बातों का अवलोकन करें और जहाँ कहीं कमीं रही हो उसका प्रतिक्रमण कर उसे दूर करने का प्रयास करते हुए आत्मार्थी साधक बने।

अरिहंत परमात्मा फरमाते हैं - शरीर का विहार तो चार माह के लिए रुका हुआ था, किन्तु मन का विहार रुका या नहीं? कल्प मर्यादा में शरीर के विहार का चिन्तन है। प्रभु फरमाते हैं उससे कहीं अधिक महत्व है मन के विहार को रोकने का। व्यक्ति बाह्य दृष्टि से ध्यान में स्थिर बैठा है, किंतु भीतर मन क्रियाशील रहता हुआ विचारों के पीछे विहार करता रहता है। मन कभी भूत में ले जाता है, कभी भविष्य में ले जाता है। कभी काम गुणों का चिन्तन करता है, अर्थात् शब्द, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श के चिन्तन में मन जुड़ा रहता है, जिससे कर्मों का बंधन होता रहता है।

चातुर्मास समापन के पश्चात् उदय कर्म के अधीन विभिन्न क्षेत्रों में विचरण होगा। प्रत्येक साधक अपनी दैनिक धर्माराधना की क्रिया भी करेगा, किन्तु यह सब करते हुए हमें मन के विहार को रोकना है, इसका अनंत गुणा महत्त्व है।

कहा भी है 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः।' अगर आप आत्मार्थी साधक हो तो आपको आत्म ध्यान के अन्तर्गत अपना मन दिखेगा, मन के विचार दिखेंगे, मन की दशा देखकर घबराना नहीं, मन पर ज्ञान का अंकुश लगाना। भेदज्ञान से मन को पराया देखकर, उपयोग लगाकर मन के पार जाने का पुरुषार्थ करेंगे तो आप धर्म ध्यान से शुक्ल ध्यान में प्रवेश कर जाएंगे। शेषकाल में शरीर विचरेगा, पर मन को अध्यात्म में लीन करके अस्तित्व की साधना में संलग्न करेंगे तो आपके विहार का समय आपके जीवन की बड़ी उपलब्धि बन जाएगा। चतुर्विध संघ का प्रत्येक सदस्य, साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका आत्मार्थी बने, भेद विज्ञानी बने। एकत्व व अन्यत्व भावना से भावित होते हुए अपने लक्ष्य सिद्धालय की ओर बढ़े।

नए कर्मों के बंधन को रोके व सतत् कर्म निर्जरा करते हुए एक-एक समय का उपयोग करें। 'समयं गोयम मा पमायए' सूत्र को सार्थक करें, जीवन का धागा असंस्कृत है, कभी भी टूट सकता है, अतः अनित्य भावना से भावित होते हुए, इस नश्वर संसार को समय न देकर निज आत्मा को समय दें। मिथ्यात्व भरे संसार से अपने को बचाते हुए, सम्यक्त्व के संस्कारों से, आत्म ज्ञान से, भेद विज्ञान से, मिथ्यात्व व सम्यक्त्व के मध्य की जंग को जीतने का पुरुषार्थ करो सम्यक्त्व को विजयी बनाएं, अपने जीवन को सार्थक बनाएं।

चातुर्मासिक पक्खी पर स्व का अवलोकन कर आलोचना -प्रतिक्रमण करते हुए अंतर्हृदय से आत्मशुद्धि करें। आने वाले शीतकालीन चातुर्मास में विवेक को विकसित करते हुए एक-एक समय का उपयोग अपने जीव के लिए करें। सभी धर्म की क्रियाएं जप, तप आदि जीव के उद्धार के लिए हों।

चातुर्मास के पश्चात् साधु-साध्वीवृंद के विहार गतिमान होंगे, श्रावक-श्राविकाएं साधु-साध्वियों की विहार सेवा का लक्ष्य रखते हुए उत्तम निर्जरा में सहभागी हों। साधु-साध्वीवृंद भी भगवान की आज्ञा के अनुसार ग्रामानुग्राम विहार करें, अधिक लम्बे विहार से बचने का प्रयास करें। प्रत्येक क्षेत्र में समय देते हुए स्वयं की धर्म साधना के साथ चतुर्विध श्रीसंघ को धर्माराधना से जोड़ें। व्यक्तित्व को मुख्यता न देते हुए संघ-हित का चिंतन कर अस्तित्व की ओर आगे बढ़ें। ❖❖

जय सीमन्धर श्रमण संघ जयवंत हो जय महावीर
॥ जय आत्म ॥ ॥ जय आनन्द ॥ ॥ जय देवेन्द्र ॥ ॥ जय ज्ञान ॥ ॥ जय शिव ॥

आचार्य शिवमुनि

श्रमण संघीय विज्ञप्ति

पक्खी पर्व की एकरूपता के लिए समस्त स्थानकवासी सम्प्रदायों के पूज्यवरों एवं श्रमण संघीय पदाधिकारी वर्ग को एक पत्र प्रेषित किया गया।

सभी सम्प्रदायों के पूज्यवरा के एवं श्रमण संघीय पदाधिकारियों के पत्र प्राप्त हुए। अधिकांश ने हमारे भेजे हुए विचारों पर गंभीरता से चिन्तन कर उत्तर भेजे। उन सभी पत्रों का सर्वांगीण विचार विमर्श कर, बहुमत, व्यवहारिकता व धारणाओं को लक्ष्य में रखकर निम्न निर्णय लिया गया।

तिथि निर्णायक समिति द्वारा पक्खी पत्र सम्बन्धित सर्वमान्य निर्णय

1. पाक्षिक पर्व एवं चातुर्मासिक पर्व निकालने के लिए एक सूत्र निर्धारित किया गया है– यदि उदय एवं अस्त तिथि दोनों में पूर्णिमा, अमावस्या प्रतिक्रमण के समय मिलती है तो पाक्षिक एवं चौमासी पक्खी पर्व, पूर्णिमा, अमावस्या के दिन किया जाए। यदि पूर्णिमा, अमावस्या में प्रतिक्रमण के समय एकम की घड़ियां आ रही है तो चौदस के दिन पाक्षिक चौमासी पर्व कर लिया जाए। इसमें दिनों की गिनती को गौण कर दिया गया है।

2. संवत्सरी महापर्व के दिन भी सूर्यास्त के समय जिस दिन 5 (पंचमी) हो उस दिन सवत्सरी महापर्व की आराधना की जाए।

3. परम्परागत पक्खी पर्व सम्बन्धित अवधारणाओं को यथोचित् विराम दिया जाता है।

4. क्षय, वृद्धि तिथि लौकिक पंचागानुसार ही मान्य रहेगी।

5. ओली पर्वाराधना, महावीर जन्म कल्याणक, अक्षय तृतीया एवं अन्य पर्व उदय तिथि अनुसार ही किये जाएंगे।

इस अनुसार वर्तमान में यह निर्णय लिया गया है। सभी पक्खी पत्र बनाने वाले इस आधार पर पक्खी पत्र बनाएं, जिससे सभी पक्खी पत्रों में पक्खियां एक समान हो।

सहमंगल मैत्री,

शिवमुनि
(आचार्य शिवमुनि)

दिनांक : 5–11–2025
स्थान : आत्म भवन, अवध संगरीला, सूरत (गुजरात)

www.jainacharya.org
shivacharyaji@yahoo.co.in
09350111542
http://www.facebook.com/shivmuni
http://www.twitter.com/jainacharya
http://acharyashivmuni.blogspot.in/
http://www.youtube.com/jainacharyaji
JAINACHARYA

अपना विकास अपने साथ

- युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

समग्र संसार में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो अपनी आन्तरिक शक्ति का परम विकास कर सकता है। बाहरी विकास तो अनेक प्राणियों का प्रत्यक्ष में तथा अवशेष रूप में देखने में आता ही आता है। आन्तरिक विकास बौद्धिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्तर पर होता है। यह आन्तरिक विकास मनुष्यों में ही संभव है। इसलिए इन्सान को अनन्त संभावनाओं के रूप में जाना जाता है। आन्तरिक स्तर पर विकसित प्राणी संसार का सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति होता है। वह अपने सामर्थ्य से चराचर को नियंत्रित कर सकता है।

बौद्धिक सामर्थ्य के बल पर इन्सान ने विज्ञान के माध्यम से ऐसे साधन निर्माण किए कि वह जल-थल-नभ में तेजी से बेरोकटोक गति करने लगा है। पृथ्वी-पानी-अग्नि-वायु इन तत्वों को नियंत्रित करने की दिशा में वह आगे बढ़ा है। खेती तथा फसल के भिन्न-भिन्न प्रयोगों से उसने एक क्रांति का प्रारंभ कर दिया। ये तथा इसी तरह के कई संसाधन मानव की सोच एवं बौद्धिक विकास ने दिये हैं। अन्य प्राणियों पर मनुष्य का वर्चस्व बनाने में मात्र बौद्धिक विकास ही पूर्णतः सक्षम है।

मनुष्य का दूसरा विकास मानसिक स्तर पर है। जो वह वातावरण और संस्कारों से प्राप्त करता है। मानसिक स्तर पर विकसित व्यक्ति खूब संवेदनशील होता है। वह औरों के दुःख, कष्ट, तकलीफ तथा खुशी को अपने भीतर अनुभव करता है। आस-पास की घटनाओं से प्रभावित होकर वह अपनी प्रतिक्रिया देता है। वह प्रतिक्रिया भी तीव्र, तीव्रतर होती है। आधुनिक युग का संगणक (कम्प्यूटर), बौद्धिक स्तर पर मनुष्य को चुनौती दे सकता है। मानसिक स्तर पर मनुष्य को चुनौती देने वाला कोई तत्व सारे संसार में नहीं है। यहां मोनोपली (एकाधिकारिता) चलती है। इसमें बाधक तत्व मात्र एक ही है और वो है 'स्वयम्' (खुद ही)। जब मानव का मन एक ही समय में दो विपरीत दिशाओं में गति की कोशिश करता है तो मानसिक रूप से कमज़ोर हो जाता है। इस दुविधा से बचकर विविध उपायों के माध्यमों से जो एकाग्रता साध लेता है वह मानसिक सामर्थ्य से मानवों के बड़े समुदाय में अपना प्रभाव बना लेता है। सैंकड़ों, हज़ारों मानव उसका अनुकरण करते हैं।

मानसिक से बढ़कर आध्यात्मिक विकास, यह अत्यन्त दुर्गम पथ है। अनेक शक्ति संपन्न, प्रबुद्ध तथा दृढसंकल्पी भी इस राह पर नहीं चल पाते हैं या तो वे थक जाते हैं या अपना रास्ता बदल लेते हैं। इस स्तर पर श्रम अधिक है फल थोड़ा है। बहुत दूर तक तथा देर तक चलते रहने के पश्चात इस मार्ग में कोई पड़ाव प्राप्त होता है। इस पर चलने के लिए उत्कण्ठा, उत्साह तथा दुर्दम्य साहस की ज़रूरत होती है। इस यात्रा का पथिक संसार के समस्त प्राणियों के लिए दीपस्तंभ की तरह प्रेरणा स्तम्भ और आलंबन बनता है। उसे समग्र संसार महामानव के रूप में स्वीकार करता है। बौद्धिक स्तर पर प्रगत प्राणी को यदि मानव माने तो मानसिक स्तर पर विकसित को विशिष्ट मानव एवं आध्यात्मिक स्तर पर विकसित व्यक्तित्व को हम महामानव के रूप में सम्बोधित कर सकते हैं। मानव से महामानव होने तक की यात्रा के पड़ाव भी यही हैं। जब तक व्यक्ति की सोच शारीरिक स्तर तक ही सीमित रहती है तब तक उसका जीवन 'सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्' उक्ति के अनुसार पशुवत् निम्न स्तर का जीवन कहलाता है। शारीरिक भोग, सुविधाएं ही उसका जीवन लक्ष्य रहती हैं। क्षुद्र बातों मे ही वह अपने जीवन की इतिश्री मान लेता है। उससे आगे बढ़कर इन्सान अपने आप को ज्ञान के क्षेत्र में जोड़ लेता है। वह पढ़-लिखकर चिंतन-शोध कर अपने बुद्धि को विकसित करता है। घो-चि. पू.लि. मंत्र की आराधना करना है। घो अर्थात घोकना (कंठस्थ करना), चि अर्थात चितारना (याद किये को दोहराना), पू अर्थात पूछना (शंका समाधान करना), लि अर्थात लिखना (पढ़े हुए को अपनी भाषा में प्रस्तुत करना) बच्चा हो युवा, स्त्री हो या पुरुष सभी अपने बौद्धिक सामर्थ्य बढ़ा सकते हैं। बौद्धिक स्तर पर विकसित मानव साकारात्मक सोच, सात्विक जीवन और सज्जनों का सहवास पाता है तो मानसिक विकास

प्रारम्भ हो जाता है। आज के घोर भौतिकता की आपाधापी में इस प्रकार की स्थिति, परिस्थिति का मिलना कठिन होता जा रहा है । अर्थ और स्वार्थ के कारण मानव की बुद्धि का उपयोग व सोच संकीर्ण है । अर्थ तथा स्वार्थ पूर्ति में वह अपनी बुद्धि का उपयोग करने में जीवन की सार्थकता मानता है । मानसिक स्तर पर यदि मानव विकसित होता है तो वह स्व की परिधि से बाहर आकर सर्व का विचार करता है । उसके लिए व्यष्टि से ज़्यादा महत्वपूर्ण समष्टि बन जाती है । 'बहुजन-हिताय, बहुजन-सुखाय' वह अपनी शक्ति का उपयोग करता है । ऐसा व्यक्तित्व परिवार, समाज एवं राष्ट्र के लिए वरदान स्वरूप होता है । मानसिक स्तर पर विकसित व्यक्तित्व, जीवन पथ पर ऐसा मील का पत्थर होता है जो पीढ़ियों तक पथ प्रदर्शन करता है ।

मानसिक स्तर पर पहुंचा हुआ व्यक्तित्व संसार एवं परिस्थिति का भी अनेक अंशों में आभारी रहता है तथापि, आध्यात्मिक स्तर पर आगे बढ़ने का पुरुषार्थ एकान्त रूप से स्व पर निर्भर होता है । ''जब तोर डाकशुने कोई न आशे एकला चलो रे'' रवीन्द्र बाबू की इन पंक्तियों को साकार करता यह मार्ग है । अध्यात्म की राह एकाकी और आत्मबल पर सम्पन्न होती है । इस पथ पर सिर्फ पराये ही नहीं अपने भी छूट जाते है, छोड़ जाते हैं । लेकिन इस स्तर को प्राप्त व्यक्तित्व सदैव 'शिवमस्तु सर्व जगतः' समस्त संसार का कल्याण हो इसी भाव में रमयमाण होता है ।

मानव के लिए सभी पर्याय उपलब्ध हैं । वह अपनी रुचि, शक्ति, बुद्धि के अनुसार चुनाव कर सकता है । सही चुनाव हमारे इस जीवन को अधिक रूप दे सकता है ।

❖❖

जो धारण पोषण करे, सुखमय करे समाज

भारतीय संस्कृति की नींव धर्म पर टिकी हुई है। भारत के धर्मों ने मानव जीवन की प्रत्येक प्रवृत्ति के साथ धर्म को श्वासोच्छ्वास की तरह जोड़ा। उनका कहना है खाना, पीना, उठना, बैठना, सोना, चलना, विवाह करना आदि प्रत्येक प्रवृत्ति को करने की मनाही नहीं है, परन्तु उस पर धर्म का नियंत्रण रखो, धर्म की मर्यादा को देखो। साथ ही महाभारत में चारों वर्णों के व्यावसायिक धर्म अलग-अलग बताये हैं। डॉक्टर, वकील, व्यापारी, किसान, मजदूर, उद्योगपति, स्वामी-सेवक, पति-पत्नी, माता-पुत्र, भाई-बहन, भाई-भाई आदि पारिवारिक एवं सामाजिक क्षेत्र के सभी व्यक्तियों के नैमित्तिक धर्म अलग-अलग हो सकते हैं, परन्तु इन सबके नित्य धर्म-अहिंसा, सत्य आदि तो एक ही हैं, ये शाश्वत हैं। धर्म के इन दोनों रूपों को देखते हुए अर्थ और काम-सम्बन्धी प्रवृत्ति हो तो समाज, राष्ट्र परिवार एवं व्यक्ति का जीवन, सुव्यवस्थित, सुरक्षित, सुसंस्कृत बना रह सकता है। यही धर्म का चमत्कार है, जिसे धार्मिक परिवारों में देखा जा सकता है। धर्म पुरुषार्थी के लिए प्रमुख मार्गदर्शक हैं। जीवन के समस्त आदर्शों का समावेश धर्म में हो जाता है। फिर यह धर्म केवल इहलोक के सुख के लिए ही नहीं है, परलोक में भी धर्म सुख-साधनों को प्राप्त करता है। इसीलिए जैन शास्त्रों में धर्म के लिए कहा है -

'इहलोग-परलोग हियाए निस्सेसाए, खेमाए, अणुगामियत्ताए भवह'

धर्म इहलोक एवं परलोक के हित के लिए, निःश्रेयस के लिए, क्षमता प्राप्ति के लिए और अनुगामित्व के लिए है। 'पंचाध्यायी में धर्म को एक विशिष्ट आत्मशक्ति का संचालक माना है।

शक्तिः पुण्यं, पुण्यफलं संपच्च, सम्पदः सुखम् ।
अतो हि चयनं शर्क्तेर्यतो धर्मः सुखावहः ।।

'शक्ति (नियम, त्याग, व्रताचरण आदि से प्राप्त आत्मबल) पुण्य है, पुण्य का फल वैभव है और वैभव से सुख प्राप्त होता है। इसलिए शक्ति का संचय अवश्य ही धर्म है और वह सुखावह है।' निष्कर्ष यह है कि अगर आपकी प्रत्येक गति-प्रगति, प्रवृत्ति में धर्म का स्पर्श बना रहेगा तो पथभ्रष्ट नहीं होंगे, इधर-उधर भटकेंगे नहीं। धर्म आपके मनमाने व्यवहार पर अंकुश है। आप किसी भी प्रवृत्ति को करते समय धर्म की अंगुलि पकड़े रहेंगे तो आपकी आत्मा की सुरक्षा भी होगी, आपके जीवन में सुखशान्ति भी।

साभार : आनंद प्रवचन

मेरे भाग्य विधाता-प्रवर्तक प.पू. गुरुदेव श्री कुंदनऋषि जी म.सा.

- संस्कार दिवाकर श्री आलोकऋषिजी म.सा.

राष्ट्रसंत आचार्य भगवन् पू. गुरुदेव श्री आनंदऋषिजी म.सा. के जन्म से पवित्र पावन हुई चिचोंडी की भूमि में बचपन बीता तथा शिक्षण वहीं पूरा किया। बाद में वैद्यकीय शिक्षण और कुछ वर्ष प्रैक्टिस भी की, लेकिन दूसरों के शरीर के रोगों को दूर करते-करते स्वयं के आत्मा के रोगों को दूर करने की चाह से संसार से विरक्ति हो गयी।

तपस्वी रत्न पू. श्री मगनमुनिजी म.सा. के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से 8 मई 2003 के दिन आपश्री जी के चरणों में दीक्षित हुआ। बचपन में चिचोंडी में शिक्षा के साथ-साथ धर्म संस्कार का भी बीजारोपन हुआ। वे बीज आपश्री जी के चरणों में आकर पल्लवित हुये। यह मेरा परम सौभाग्य है कि आचार्य भगवन् के ज्येष्ठ सुशिष्य, उन्हीं की प्रतिकृति जिनमें झलकती है ऐसे पूज्य गुरुदेव की सेवा करने का मौका मुझे प्राप्त हुआ है। **दीप से दीप जलते हैं, चमन में फूल खिलते हैं। आप जैसे गुरु बड़ी मुश्किल से मिलते हैं।**

अहमदनगर जिले के मिरी ग्राम में जो आचार्य भगवंत की दीक्षा भूमि है, बाल्यावस्था में माताजी का और बाद में पिताजी का देहावसन होने से आपके बालमन पर गहरा असर हुआ, लेकिन धैर्य-धारण करते हुये आपने सातवीं कक्षा तक पढ़ाई की। बाद में व्यवसाय करने में लग गये। छोटी उम्र में बहुत कष्ट उठाने पड़े। कमजोरी के कारण अस्वस्थ रहने लगे। इसी दौरान पूज्य आचार्य भगवन् का स्थानक उद्घाटन हेतु मिरी गांव में पधारना हुआ। अपनी कमजोरी को मिटाने के लिये, स्वास्थ्य लाभ मिलने हेतु आप गुरुदेव से मंगलपाठ सुनाने का निवेदन करने गये। लेकिन अनायास आप कह बैठे, 'मैं आपकी सेवा में दीक्षा लेना चाहता हूँ।"

गुरुदेव ने परिवार आदि की पूछताछ कर, आपकी प्रामाणिकता को जानकर साथ रहने की आज्ञा दी। आप वैरागी के रूप में गुरु सेवा में रहने लगे। गुरुदेव ने हर प्रकार की शिक्षा देकर योग्य बनाया और मार्गशीर्ष सुदी नवमी विक्रम संवत् 1970 में आपश्री को संयम प्रदान किया। तब से आचार्य भगवन् के अंतिम समय तक आपने उत्कृष्ट समर्पण भावों के साथ गुरु सेवा में संलग्न रहें।

आपकी जीवन यात्रा कृपा आशीष से ज्ञान ध्यान, जप-तप, सेवा-परोपकार के साथ आगे बढ़ने लगी। आचार्य भगवन्, आचार्य पद पर आसीन होने के बाद श्रमण संघ का पत्र व्यवहार, भक्तगणों से वार्तालाप, गुरुदेव और गुरु भ्राताओं की गोचरी व्यवस्था आदि कार्य आनंद गुरु सेवा में रहकर आनंद के साथ संपन्न किये। आपकी शालीनता, परिश्रम, सेवाभाव को देखते हुए आपको श्रमण संघ का मंत्रीपद और बाद में प्रवर्तक पद प्रदान किया गया। आचार्य भगवंत के देवलोकगमन के बाद भी आपका मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रांतों में विचरण हुआ।

आपको आनंद कुल कमल दिवाकर की उपाधि से इंदौर में अलंकृत किया गया। आपने 111 दिन की मौन साधना भी की है। आपश्री जी की प्रेरणा से मिरी में श्री आनंद गुरु गौशाला द्वारा गौपालन हो रहा है। अहमदनगर में आपने प्रारंभ की हुई प्रति रविवार सामूहिक सामायिक निरन्तर गतिमान है। आपकी ही प्रेरणा से ग्राम-ग्राम में आनंद जैन पाठशाला द्वारा बालक-बालिकायें सुसंस्कारित करने का आचार्य भगवंत का सपना साकार करना, इसी श्रृंखला में आपके आशीष से केडगांव, अहमदनगर में श्री आनंद पार्श्व गुरुकुल का कार्य गतिमान है। शांत-दांत स्वभाव, सेवा, करूणा सहनशीलता, सहिष्णुता, सरलता, सहजता आदि अनेक सद्गुण आप में विद्यमान हैं।

"गुरु कुंदन है जिनशासन की शान,
गुरु सेवा समर्पण से जीवन बनाया महान।
सागर, बादल, वृक्ष की उपमा भी लघु जान,
शिष्य आलोक करें गुरु का गुणगान।।"

चातुर्मास समापन : आत्मशुद्धि, संयम और साधना का पवित्र उत्सव

- पू. श्री सुखदर्शनमुनि जी म.सा.

भारत एक धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक देश है। यहाँ वर्ष भर विविध त्योहार, व्रत, तप और साधनाओं के पर्व मनाए जाते हैं। इन सबका एक ही उद्देश्य होता है, 'आत्मा की शुद्धि, मन का संयम और जीवन में सदाचार का विकास।'

ऐसे ही पावन पर्वों में से एक है **'चातुर्मास'**, जो जैन, वैदिक, बौद्ध और अन्य सनातन परंपराओं में अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। चार महीने का यह कालखंड केवल वर्षाऋतु का समय नहीं है, बल्कि 'आत्मिक साधना, तपस्या, चिंतन और आत्मावलोकन' का मौसम है और जब यह पवित्र काल समाप्त होता है, तब उसे 'चातुर्मास समापन' कहा जाता है, एक ऐसा अवसर जब साधक अपनी तपस्या की पूर्णाहुति करता है और समाज उसके त्याग, संयम और साधना का उत्सव मनाता है।

चातुर्मास का अर्थ और पौराणिक पृष्ठभूमि : 'चातुर्मास' शब्द दो शब्दों से बना है, चतुः (चार) और मास (महीने)। इसका शाब्दिक अर्थ है- चार महीनों की अवधि। यह अवधि सामान्यतः **'आषाढ़ शुक्ल एकादशी'** से आरंभ होकर **'कार्तिक शुक्ल एकादशी'** तक मानी जाती है। हिन्दू धर्म में यह समय भगवान विष्णु के 'शयन काल' का होता है। कहा जाता है कि इस काल में भगवान विष्णु 'क्षीरसागर' में योगनिद्रा में रहते हैं और 'कार्तिक शुक्ल एकादशी (प्रबोधिनी एकादशी)' के दिन जागते हैं। इसलिए यह समय विशेष रूप से तप, संयम और धर्मानुष्ठान के लिए उपयुक्त माना गया है।

जैन परंपरा में हमारी चातुर्मास का विशेष महत्व है। वर्षा ऋतु के दौरान जैन मुनि अनावश्यक भ्रमण नहीं करते, ताकि असंख्य जीवों को हानि न पहुँचे। वे एक स्थान पर ठहरकर 'स्वाध्याय, प्रवचन, ध्यान और आत्मशुद्धि' के कार्य में लग जाते हैं। इस अवधि में समाज भी अधिक धार्मिक बनता है- प्रवचन सुनता है, व्रत रखता है, संयम का पालन करता है और दान-पुण्य करता है।

चातुर्मास का आध्यात्मिक उद्देश्य : चातुर्मास केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि 'आध्यात्मिक अनुशासन का प्रतीक' है। इसका मुख्य उद्देश्य है -

1. मन और इंद्रियों पर संयम रखना।
2. सदाचार और आत्मनियंत्रण का अभ्यास करना।
3. अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के आदर्शों का पालन।
4. ध्यान, स्वाध्याय और साधना के माध्यम से आत्मा की शुद्धि।'

इस अवधि में शरीर को आराम देने के बजाय आत्मा को जागृत करने का कार्य होता है। महावीर स्वामी ने कहा था- 'संयम ही जीवन का आभूषण है और तप ही आत्मा का शुद्धिकरण।' वास्तव में चातुर्मास वह काल है जब साधक अपने भीतर झाँकता है, मन के विकारों को पहचानता है और उन्हें जीतने का प्रयास करता है।

जैन परंपरा में चातुर्मास : जैन धर्म में चातुर्मास का अत्यंत विशिष्ट स्थान है। जैन मुनि सामान्यतः लगातार विहार करते रहते हैं, परंतु 'वर्षा ऋतु' में असंख्य सूक्ष्म जीव-जंतु भूमि, जल और आकाश में प्रकट होते हैं। ऐसे समय में भ्रमण करना हिंसा का कारण बन सकता है। इसलिए महावीर स्वामी के उपदेशानुसार, जैन मुनि वर्षा ऋतु में एक स्थान पर रुक जाते हैं और वहीं 'चार महीनों तक धर्म, साधना और प्रवचन' का कार्य करते हैं।

इस अवधि में समाज के लोग भी संत-साध्वियों की उपस्थिति से लाभान्वित होते हैं। वे प्रवचन सुनते हैं, क्षमावाणी करते हैं, तपस्या करते हैं और आचार्यों के संपर्क में रहकर अपने जीवन को सुधारते हैं। चातुर्मास के दौरान प्रमुख धार्मिक आयोजन होते हैं जैसे :-

पर्युषण पर्व, संवत्सरी (क्षमा दिवस), दश लक्षण पर्व, पौषध, उपवास, अष्टाह्निका, नवपद आदि तप।

ये सभी आत्मशुद्धि के साधन हैं जो व्यक्ति को कर्मबंधन से मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

चातुर्मास का अनुशासन : आचार्य और साधु का जीवन- जैन आचार्यों और साधुओं के लिए चातुर्मास एक कठोर साधना का काल होता है। वे चार महीने तक एक ही नगर या गाँव में रहते हैं और अत्यंत संयमित जीवन जीते हैं -

1. व्रत और उपवास का पालन।
2. स्वाध्याय और ध्यान की निरंतर साधना।
3. सामूहिक प्रवचन और धर्मचर्चा।
4. लोककल्याण हेतु आत्मशुद्धि का संकल्प।

उनका जीवन इस काल में समाज के लिए आदर्श बन जाता है। लोग उनसे धर्म, नीति, सदाचार और जीवन मूल्यों की प्रेरणा लेते हैं। यह समय साधुओं के साथ-साथ गृहस्थों के लिए भी आध्यात्मिक शिक्षा का होता है। गृहस्थजन अपने व्यवहार में संयम लाते हैं -

जमीकंद का त्याग करते हैं, उपवास, एकासन, ब्रह्मचर्य जैसे व्रतों का पालन करते हैं और दान-पुण्य, सत्संग और सेवा में रत रहते हैं।

चातुर्मास समापन : साधना का फल और समाज का उत्सव - चार महीनों की तप, साधना और संयम के पश्चात जब चातुर्मास की अवधि समाप्त होती है, तो यह दिन अत्यंत पवित्र और उल्लासपूर्ण होता है। इसे 'चातुर्मास समापन समारोह' कहा जाता है। इस दिन साधु-संतों की तपस्या पूर्ण होती है। समाजजन उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, क्योंकि उनके प्रवास से नगर का वातावरण धार्मिक और शांतिमय बनता है।

चातुर्मास समापन का अर्थ केवल एक अवधि का अंत नहीं, बल्कि एक नई आध्यात्मिक यात्रा का आरंभ है। यह दिन साधक के लिए आत्ममंथन का भी दिन होता है - कि उसने इन चार महीनों में क्या पाया, किन दोषों को त्यागा और किन गुणों को अपनाया।

समापन का धार्मिक महत्व : चातुर्मास समापन केवल अंत नहीं, बल्कि संस्कार है। जैसे कोई छात्र शिक्षा पूर्ण कर दीक्षा प्राप्त करता है, वैसे ही साधक चार महीने की साधना के बाद आत्मिक उन्नति प्राप्त करता है। इस दिन साधुजन और श्रावक-श्राविकाएँ मिलकर 'पारणा' करते हैं - अर्थात तपस्या के समापन पर अन्न ग्रहण करते हैं। जैन स्थानकों व मंदिरों में 'मंगल आरती', 'आचार्य प्रवचन', 'आत्म-परामर्श' और कृतज्ञता दिवस जैसे धार्मिक अनुष्ठान होते हैं। कई स्थानों पर 'सामूहिक क्षमायाचना' का आयोजन होता है, जहाँ सभी एक-दूसरे से विनम्रतापूर्वक क्षमा मांगते हैं - 'मिच्छामि दुक्कडम्' - अर्थात 'यदि मेरे वचन, कर्म या विचार से किसी को दुःख पहुँचा हो, तो मैं क्षमा चाहता हूँ।' यह विनम्रता और आत्मशुद्धि का सर्वोच्च प्रतीक है।

चातुर्मास समापन का सामाजिक पक्ष : चातुर्मास समाज में नैतिकता और शुद्धता का संस्कार स्थापित करता है। चार महीनों तक लोगों ने अपने जीवन में जो अनुशासन अपनाया, वही उनके व्यवहार में स्थायी बनता है। समापन दिवस पर सभी एकत्र होकर यह संकल्प लेते हैं कि वे वर्ष भर धर्माचरण, करुणा, सेवा और संयम की भावना बनाए रखेंगे। इस अवसर पर समाज में अनेक कार्यक्रम होते हैं -

- संतों की विदाई या नई विहार यात्रा का आरंभ
- समाज के कार्यों का प्रतिवेदन
- धार्मिक सभाएँ, भक्ति गीत, कवि सम्मेलन
- सामूहिक भोजन या अहिंसा यात्रा।

यह दिन समाज को एकता, सद्भाव और आध्यात्मिक जागरण की दिशा में प्रेरित करता है।

5. श्रावक-श्राविका व्रत - उपवास, पौषध, एकासन, आयंबिल, त्याग और संयम के संकल्प। इन सभी पर्वों के पश्चात जब साधना का यह अध्याय पूर्ण होता है, तब चातुर्मास समापन का पर्व अत्यंत भावनापूर्ण बन जाता है।

चातुर्मास समापन का दार्शनिक अर्थ : चातुर्मास समापन हमें यह स्मरण कराता है कि आध्यात्मिक जीवन एक निरंतर यात्रा है। चार महीनों की साधना केवल एक चरण है इसका वास्तविक लक्ष्य आत्मा की मुक्ति है। महावीर स्वामी ने कहा - 'सच्ची विजय बाहरी शत्रुओं पर नहीं, बल्कि अपने भीतर के राग-द्वेष पर होती है।' चातुर्मास के चार महीने इसी आंतरिक युद्ध की साधना हैं और समापन दिवस उस विजय का प्रतीक है जहाँ साधक अपने भीतर के अंधकार पर विजय प्राप्त करता है।

चातुर्मास समापन का नैतिक और पर्यावरणीय

संदेश : जैन दर्शन में 'अहिंसा का सिद्धांत' केवल मनुष्य के प्रति नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति भी लागू होता है। चातुर्मास के दौरान जैन संत-साध्वी भ्रमण नहीं करते ताकि जीव-जंतुओं को हानि न पहुँचे। इसका गहरा पर्यावरणीय संदेश है - प्रकृति का सम्मान करो, उसकी रक्षा करो।

चातुर्मास समापन और क्षमायाचना : 'अहंकार से मुक्त होने का दिवस' चातुर्मास समापन का सबसे कोमल पक्ष है - **'क्षमायाचना।'** साधक अपने चार महीने के व्यवहार का पुनरावलोकन करता है और यदि किसी से भूल हुई हो तो क्षमा मांगता है।

यह केवल शब्दों का नहीं, बल्कि हृदय का उत्सव है। 'मिच्छामि दुक्कडम्' - यह जैन संस्कृति की आत्मा है। इस एक वाक्य में ही समग्र मानवता की भावना समाई हुई है - यदि मेरे कारण किसी को दुःख हुआ हो, तो मैं हृदय से क्षमा चाहता हूँ। यही वह क्षण है जब अहंकार मिटता है और आत्मा शुद्ध होती है।

संतों का विहार और नई यात्रा का आरंभ : चातुर्मास समापन के पश्चात साधु-संत अपनी 'विहार यात्रा प्रारंभ करते हैं। वे पुनः भ्रमण पर निकलते हैं ताकि धर्म का संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचा सकें। उनके चरण जिस भूमि पर पड़ते हैं, वह पवित्र बन जाती है। वे जहां जाते हैं, वहाँ शांति, अहिंसा और नैतिकता का प्रकाश फैलाते हैं। इसलिए चातुर्मास समापन केवल एक समाप्ति नहीं, बल्कि 'नई शुरुआत' का प्रतीक है - नई यात्राओं, नए संकल्पों और नए धर्मप्रसार की शुरुआत है।

चातुर्मास समापन अंत नहीं, आरंभ है। चातुर्मास समापन एक साधारण धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि 'जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति' है। यह हमें सिखाता है कि तपस्या, संयम और आत्मनिरीक्षण ही मानव जीवन का वास्तविक सौंदर्य हैं। जब साधु-संत चार महीने की साधना पूरी कर समाज को आशीर्वाद देते हैं, तो यह केवल उनके त्याग की प्रशंसा नहीं होती, बल्कि यह समाज के आत्मजागरण का क्षण होता है। इस दिन का संदेश स्पष्ट है 'चार महीनों का संयम तभी सार्थक है जब हम उसे अपने जीवन का स्थायी हिस्सा बना लें।' इसलिए चातुर्मास का समापन वास्तव में धर्म की यात्रा का पुनः आरंभ है - एक ऐसी यात्रा जो बाहर नहीं, भीतर की ओर जाती है। जो हमें आत्मा के प्रकाश तक पहुँचाती है।

भगवान महावीर के वचन स्मरणीय हैं - 'जो स्वयं को जीत लेता है, वही सच्चा विजेता है।' चातुर्मास का समापन उसी विजेता का उत्सव है - वह जो अपनी वासनाओं, इच्छाओं, राग-द्वेष और अहंकार पर विजय प्राप्त कर लेता है। आइए, इस पावन अवसर पर हम भी यही संकल्प लें कि हम भी अपने जीवन में संयम, करुणा, क्षमा और सत्य के दीप जलाएँ। अपने भीतर की अशांति को समाप्त करें और धर्म, अहिंसा तथा आत्मशुद्धि के मार्ग पर चलें। यही होगा 'चातुर्मास समापन का सच्चा उत्सव' और यही होगी आत्मा की परम विजय।

❖❖

धर्माचरण क्यों करें ?

बहुत से लोग धर्म का उपहास करते हुए कहते हैं हमारे पास सभी प्रकार के साधन हैं, पैसा है, बंगला है, कार है, परिवार अच्छा है, रोजगार-धन्धा अच्छा चलता है, शरीर स्वस्थ है, फिर क्या जरूरत है ध र्माचरण करने की या हमारे अर्थ-काम के क्षेत्र में धर्म को बीच में लाने की ? धर्म करना होगा तो हम बुढ़ापे में कर लेंगे या जिंदगी के अंतिम दिनों में कर लेंगे, अभी तो हमें अपने कमाने-खाने से ही फुरसत नहीं है, परन्तु उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि ये सब सांसारिक पदार्थ या उनका उपभोग तभी उपलब्ध ा हो सकता है, जब पुण्य प्रबल हो, इसके अतिरिक्त इन चीजों का भी कोई ठिकाना नहीं है कि वे सदा ही बनी रहें। धन आदि पदार्थ जैसे नाशवान हैं, वैसे शरीर भी नाशवान है। बुढ़ापा आएगा तब कैसी मनःस्थिति रहेगी, कौन जानता है? बुढ़ापा भी आएगा, इसकी भी कौन-सी गारंटी है? अतः इन सब नाशवान धातुओं के चक्कर में पड़कर धर्माचरण करने की लापरवाही नहीं दिखाना चाहिए। ❖❖

दीक्षा दिवस पर विशेष...

राष्ट्रसंत, आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषि जी म.सा.

- श्री विशालऋषि जी म.सा.

भारत की भूमि सदैव संतों और आचार्यों की कर्मभूमि रही है। इसी संत-परंपरा में 20वीं शताब्दी में एक ऐसा तेजस्वी संत अवतरित हुआ, जिसने आध्यात्मिकता को समाज-सेवा से जोड़ा, संयम को आधुनिकता से संतुलित किया और धर्म को मानवता का आधार बनाया - वे थे राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषि जी म.सा.। उनका जीवन केवल एक साधु का नहीं, बल्कि एक समाज-निर्माता का जीवन था। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य, धार्मिक-संवाद, नैतिकता और मानवीय मूल्यों के क्षेत्र में वह कार्य किया, जिसने जैन समाज ही नहीं, पूरे देश को दिशा दी।

1. प्रारंभिक जीवन और पारिवारिक पृष्ठभूमि : आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. का जन्म 27 जुलाई 1900 को महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले के पाथर्डी तालुका स्थित चिंचोडी ग्राम में हुआ। उनके पिता का नाम देवीचंद जी गुगले, माता का नाम हुलसाबाई था। उनका जन्म नाम नेमिचंद जी गुगलिया रखा गया। उनका परिवार धार्मिक, श्रावक परंपरा वाला था। बचपन से ही वे आध यात्मिक प्रवृत्ति के थे। खेल-कूद में भी संयमित रहते और विद्यालय में अध्यापकों के प्रिय विद्यार्थी थे। उनकी जिज्ञासा-वृत्ति, गंभीरता और नम्रता देखकर सभी उन्हें 'छोटा साधु' कहा करते थे। बचपन से ही उन्होंने मुनि-संघों के संपर्क में समय बिताया। एक साधु के जीवन की सादगी और आत्म-संयम ने उन पर गहरा प्रभाव डाला। यही वह बीज था जिसने आगे चलकर उन्हें आचार्य-पद तक पहुँचाया।

2. शिक्षा और बौद्धिक विकास : आचार्यश्री जी का शिक्षा-जीवन साधारण परिवेश में प्रारंभ हुआ। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा मराठी में प्राप्त की। बचपन से ही उनकी स्मरणशक्ति तीव्र और अभिव्यक्ति-कला प्रखर थी। बाद में उन्होंने संस्कृत, प्राकृत और हिंदी का अध्ययन किया। उनके शिक्षा गुरु पंडित राजधारी त्रिपाठी थे, जिनसे उन्होंने जैन आगम, दर्शन, व्याकरण और न्यायशास्त्र का गहन अध्ययन किया। उनकी भाषाओं पर पकड़ असाधारण थी। उन्होंने मराठी, हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती और उर्दू भाषाएँ भी सीखी। वृद्धावस्था में भी ज्ञान की प्यास बनी रही। कहा जाता है कि 90 वर्ष की आयु में उन्होंने फारसी भाषा सीखना प्रारंभ किया था। उनका मानना था - 'शिक्षा वह साधन है जो व्यक्ति को आत्म-जागृति और समाज-जागरण दोनों में सक्षम बनाती है।' उन्होंने अपने प्रवचनों में ज्ञान को केवल शास्त्रीय नहीं, बल्कि व्यावहारिक शक्ति माना।

3. दीक्षा और आध्यात्मिक आरंभ : सिर्फ 13 वर्ष की आयु में, 7 दिसंबर 1913 (मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी) को महाराष्ट्र के मिरी गाँव में, उन्होंने दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के समय उनके गुरु आचार्य रत्नऋषि जी महाराज थे। दीक्षा के साथ ही उन्हें नया नाम मिला - आनंदऋषि। 'आनंद' उनके व्यक्तित्व का सार था और 'ऋषि' उनके जीवन का मार्ग। दीक्षा के बाद उन्होंने कठोर साधना आरंभ की। वे प्रातः चार बजे उठते, ध्यान-साधना करते और दिनभर अध्ययन व प्रवचन में लगे रहते। उन्होंने जैन धर्म के सिद्धांतों - अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, संयम को न केवल सीखा, बल्कि जीवन में उतारा।

4. साधना और संघ-सेवा का विस्तार : दीक्षा के पश्चात आचार्यश्री जी ने अपने गुरु के साथ भारतभर में धर्म-यात्राएँ की। उन्होंने महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक में व्यापक प्रवचन दिए। 1927 में उनके गुरु आचार्य रत्नऋषि जी महाराज का देहावसान हुआ। इसके बाद उन्होंने संपूर्ण संघ-कार्य की जिम्मेदारी संभाली। उसी वर्ष उन्होंने हींगणघाट में अपना पहला स्वतंत्र चातुर्मास किया। यह उनके नेतृत्व की परीक्षा थी, जिसे उन्होंने दृढ़ता से निभाया। उन्होंने सैकड़ों दीक्षा-समारोहों का संचालन किया और अनेक मुनियों-साध्वियों को दीक्षा दिलवाई। उनके संघ में अनुशासन, अध्ययन और सेवा तीनों का समान महत्व था। उनका साधना-जीवन केवल आत्म-कल्याण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समाज-कल्याण का माध्यम

बना।

5. समाज-सुधार के क्षेत्र में योगदान : आचार्य सम्राट् पूज्य आनंदऋषि जी महाराज केवल धार्मिक नेता नहीं थे, वे एक व्यावहारिक समाज-सुधारक थे। उन्होंने अपने समय में समाज की ज्वलंत समस्याओं पर खुलकर विचार रखे।

5.1 शिक्षा के क्षेत्र में सुधार : 1936 में उन्होंने 'श्री तिलोकरत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड' की स्थापना की, ताकि युवाओं में जैन दर्शन का शास्त्रीय ज्ञान प्रसारित हो। उन्होंने 'धार्मिक परीक्षा पद्धति' आरंभ की, जिससे समाज में धार्मिक शिक्षा का औपचारिक स्वरूप बना। उनके प्रयासों से अनेक जैन पाठशालाएँ, संस्कार-केंद्र, छात्रावास और विद्यालय स्थापित हुए।

5.2 महिला-शिक्षा और समानता : उन्होंने स्त्री-शिक्षा को धर्म-संस्कार का अंग बताया। साध्वियों के संघ-शिक्षण को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने कहा, 'नारी को धर्म की शिष्या नहीं, सह-संघ-नेत्री के रूप में देखें।'

5.3 व्यसन-मुक्ति और नैतिकता : उन्होंने शराब, तंबाकू और मांसाहार के विरोध में जन-अभियान चलाया। 'व्यसन-मुक्त समाज, स्वस्थ समाज' उनका प्रमुख नारा रहा।

5.4 जाति-भेद और रूढ़ियों का विरोध : उन्होंने धार्मिक-रूढ़ियों का विरोध किया। कहा - 'धर्म पूजा में नहीं, व्यवहार में जीवित रहता है।'

6. धार्मिक-दर्शन और विचारधारा : आचार्यश्री जी का दर्शन गहन, तर्कसंगत और मानवीय था। उन्होंने धर्म को व्यक्ति की अंतःशुद्धि का मार्ग बताया। उनका कहना था - 'धर्म विभाजन का नहीं, समन्वय का सूत्र है।' उन्होंने जैन आगमों के साथ-साथ संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, कबीर और गुरुनानक की शिक्षाओं का भी अध्ययन किया। इससे उनका दृष्टिकोण व्यापक और समन्वित बना। उनके प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार हैं - अहिंसा सर्वोच्च मूल्य है, जो केवल शरीर से नहीं, विचारों से भी अपनाना चाहिए। सेवा ही साधना है। धर्म को आडंबर-रहित और मानव-केन्द्रित बनाना चाहिए। शिक्षा और संयम एक दूसरे के पूरक हैं। उनकी शिक्षाएँ आज भी धर्म-संतुलन और सामाजिक सौहार्द का आदर्श प्रस्तुत करती हैं।

7. संस्थागत कार्य और निर्माण : आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज ने अनेक सामाजिक और धार्मिक संस्थाएँ स्थापित कीं। प्रमुख संस्थान - **1.** आनंदऋषि जी अस्पताल (अहमदनगर) - आधुनिक चिकित्सा और धर्म-सेवा का संगम। **2.** आनंदऋषि नेत्रालय - गरीबों को निःशुल्क नेत्र-उपचार की सुविधा। **3.** आनंदधाम - प्रवचन, ध्यान और साधना का केंद्र। **4.** आनंद फाउंडेशन (1975) - उनकी 75वीं जयंती पर स्थापित ट्रस्ट, जो शिक्षा, स्वास्थ्य और धार्मिक परियोजनाओं को संचालित करता है। उनकी संस्थाओं का उद्देश्य था - 'धर्म, शिक्षा और समाज-सेवा का त्रिवेणी संगम।'

8. नेतृत्व, सम्मान और राष्ट्रीय पहचान : 13 मई 1964 को उन्हें जैन श्रमण संघ का द्वितीय आचार्य घोषित किया गया। उनके नेतृत्व में संघ ने देशभर में नई चेतना पाई। 1975 में महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें 'राष्ट्रसंत' की उपाधि से विभूषित किया। उनके प्रवचनों और सेवा-कार्य के कारण वे सर्वधर्म-सम्मानित संत बने। 9 अगस्त 2002 को भारत सरकार ने उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया - यह इस बात का प्रमाण है कि उनका प्रभाव धर्म-सीमाओं से ऊपर था।

9. साहित्यिक और प्रवचन-योगदान : आचार्यश्री जी ने अनेक प्रवचन, पत्र और शास्त्रीय व्याख्यान दिए। उनके कुछ ग्रंथ और प्रवचन-संग्रह आज आनंद प्रवचन के नाम से कई भागों में भी प्रकाशित हैं। मुख्य विषय रहे - जैन दर्शन का व्यावहारिक पक्ष, संयम और सेवा का समन्वय, व्यसन-मुक्ति और समाज-नीति, धर्म में विज्ञान का स्थान। उनके प्रवचन सरल भाषा में, भावनात्मक प्रभाव के साथ प्रस्तुत होते थे।

10. अंतिम साधना और महाप्रयाण : आचार्यश्री जी ने 92 वर्ष की आयु तक सक्रिय जीवन जिया। उनकी साधना-शक्ति, वाणी-संयम और सेवा-भाव अंतिम क्षण तक बने रहे। 28 मार्च 1992 को उन्होंने अहमदनगर में देह-त्याग किया। उनकी समाधि स्थल आज 'आनंद धाम' के नाम से प्रसिद्ध है - जो श्रद्धा और प्रेरणा का केंद्र है।

11. प्रेरणा-सूत्र - आज के युग के लिए संदेश :

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. का जीवन केवल अतीत नहीं, वर्तमान की आवश्यकता है। उनके विचार आज भी हर पीढ़ी के लिए दिशा-सूचक हैं - संयम को आत्म-शक्ति बनाओ, दबाव नहीं। शिक्षा को जीवन-साधना बनाओ, केवल डिग्री नहीं। सेवा को सामाजिक-कर्तव्य मानो, उपकार नहीं। धर्म को जोड़ने वाला माध्यम बनाओ, पहचान का झंडा नहीं। भाषा, विचार और कर्म में एकरूपता रखो - यही सच्चा तप है।

12. उपसंहार : आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज ने जैन धर्म को आधुनिक चेतना से जोड़ा। उन्होंने बताया कि धर्म केवल पूजा का विषय नहीं, बल्कि जीवन-नीति है। उनका योगदान भारत की आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना के इतिहास में स्थायी रहेगा। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि 'मानव बने बिना मोक्ष की खोज अधूरी है।' आज जब समाज भौतिकता की ओर झुक रहा है, तब आचार्यश्री जी की शिक्षाएँ हमें संतुलन और संयम की ओर लौटने का आह्वान करती हैं। उनकी वाणी, उनका जीवन और उनके संस्थान, सब मिलकर यह संदेश देते हैं - धर्म मानवता का पर्याय है और सेवा उसका सर्वोच्च रूप।

❖❖

विनम्रता का मूल्य

- विजय जैन-राष्ट्रीय चेयरमैन-जैन कॉन्फ्रेंस, पानीपत (हरियाणा)

भगवान महावीर एक दिन अपने शिष्यों के साथ विहार पर निकले तो एक गाँव में कुछ समय के लिए रुक गए, भगवान महावीर की उपस्थिति पाकर सभी गाँव वाले भाव विभोर हो गए। गाँव वाले भगवान की एक झलक पाना चाहते थे, उन्हें सुनना चाहते थे। ग्रामीणों की उत्सुकता को देख भगवान महावीर उन्हें मना नहीं कर सके, गाँव वालों को दर्शन देने के लिए भगवान सामने आए, गाँव वालों की उत्सुकता को देखते हुये भगवान ने प्रवचन प्रारम्भ किया।

तभी एक एक घमंडी व्यक्ति वहां आया और बोला -

'महावीर! तुम कहते हो कि अहंकार दुख देता है। क्या तुम यह साबित कर सकते हो?'

भगवान शांत स्वर में बोले, 'हाँ, लेकिन पहले तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो।

अगर कोई व्यक्ति तुम्हें मूर्ख कहे, तो तुम्हें कैसा लगेगा?'

घमंडी व्यक्ति बोला, 'मुझे गुस्सा आएगा।'

भगवान महावीर ने कहा, 'अगर कोई तुम्हें ज्ञानी कहे तो?'

घमंडी बोला, 'मुझे प्रसन्नता होगी।'

भगवान सहजता से मुस्कराए और बोले, 'देखो, तुम वही हो, पर तुम्हारा सुख और दुख दूसरों के शब्दों पर निर्भर है। यही अहंकार है। जब तुम अपने भीतर स्थिर हो जाओगे, तब कोई शब्द तुम्हें हिला नहीं पाएगा।'

भगवान महावीर का उत्तर पाकर घमंडी व्यक्ति मौन रह गया। वह भगवान के चरणों में गिर गया और सहृदय भाव से बोला, 'अब मैं समझ गया कि विनम्रता ही सच्चा बल है।'

सीख :

- जो व्यक्ति स्वयं को जानता है, उसे बाहरी प्रशंसा या निंदा प्रभावित नहीं करती।
- विनम्रता हर स्थिति में मन को शांत रखती है।
- सच्चा ज्ञान अहंकार को मिटा देता है।

❖❖

नाम के नहीं काम के जैन बनें

- श्री विमलकुमारी जी म.सा. 'निर्मल'

''जैन'' शब्द अपने आप में बेहद महत्वपूर्ण एवं शिक्षाप्रद है। वस्तुतः जिनेश्वर भगवान के बताये हुए मार्ग पर चलने वाले, अहिंसा धर्म को आत्मसात् करने वाले व्यक्ति को ही जिनशासन में 'जैन' माना गया है। एक जैन व्यक्ति यदि अपने वास्तविक जैनत्व के गुणों का पालन करता है तो वह अपने आप में बहुत बड़ा सुधारक, आराधक, सेवक, समाज व राष्ट्र हितैषी और प्रेरणादायी व्यक्तित्व वाला बन सकता है।

वस्तुतः दया, करुणा, अनुकम्पा, मैत्री, सहयोग, उदारता, नैतिकता, सदाचार, मानवता, पापभीरूता में विश्वास करने वाला साधक ही जैन है। जिस प्रकार हीरे में कोहिनूर हीरा सर्वश्रेष्ठ है, उसी प्रकार जिन प्ररूपित जैन धर्म सर्वश्रेष्ठ तथा सर्व सुखदायी है। हमें सदैव चिंतन यही करना चाहिए कि

मेरा पुण्य उदय आया कि मैंने जैन धर्म पाया ।
रोम-रोम में खुशियाँ छाई, धर्म-रतन है पाया ।।

आज हम बार-बार उद्‌घोष करते हैं - ''गर्व से कहो, हम जैन है ।'' जैन शब्द पर दो मात्राएं हैं - एक विनय की और दूसरी विवेक की। जिसमें विनय और विवेक हो वही जैन है। हमें जैन होने पर गर्व तो है ही, साथ-साथ हमें जैन धर्म की मान्यताओं को जीवन्त बनाये रखने के लिए उसी के अनुरूप अपना जीवन व्यवहार भी बनाना होगा। जैन मान्यताओं पर खरा उतरना हमारा परम कर्त्तव्य बन जाता है किन्तु आज दिनों दिन हमारी इच्छा, तृष्णा, आकांक्षा, अभिलाषा बढ़ती ही जा रही है। धन लोलुपी मानसिकता के साथ-साथ स्वयं को जैन कहने वाले व्यक्ति अनैतिक, अमानवीय, हिंसक तथा क्रूर से क्रूर कार्य करने में भी शर्म महसूस नहीं कर रहे हैं।

आज आवश्यकता है - **नाम के नहीं, काम के जैन बनने की।** वस्तुतः सच्चा जैनी वही है, जो "सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय" के अनुरूप अपने जीवन व्यवहार को चलाता है। अपने सुख के लिए दूसरों को दुःखी नहीं करता है तथा अनैतिक, अमानवीय हिंसक और बुरे कर्मों से परहेज करता है किन्तु वर्तमान में इसे पीड़ाजनक विडम्बना ही कहा जाएगा कि आज का जैन स्मैक, ब्राउन शूगर और अफीम जैसे मादक पदार्थ बेचने में तथा रिश्वत लेने और भ्रष्टाचार को पनपाने में अग्रणी है। आज का जैन ज़हर का सौदागर, गर्भपात करने वाला डॉक्टर, ब्याज लेने वाला साहूकार, गरीबों को लूटने वाला तथा नशाखोरी को प्रोत्साहित करने वाला व्यापारी मात्र बन कर रह गया है।

अतीत में राजा का एक विश्वसनीय सलाहकार, मत्री, अधिकारी, खजांची, प्रामाणिक और विश्वास की प्रतिमूर्ति, सत्य का प्रतीक 'जैन', आज के इस युग में मानो कहीं खो गया है। धार्मिकता का चोला धारण करके चापलूसी, स्वार्थ परायणता तथा लोभवृत्ति ने आज जैनत्व के संस्कारों के साथ कुठाराघात किया है, वस्तुतः कल तक एक विशेष प्रेरणादायी आदर्श माना जाने वाले जैन, आज मात्र हंसी का पात्र बनकर रह गया है, क्या इतना परिवर्तन उचित है ? आज जैन वर्ग की स्थिति देख कर यही भाव मन में आते हैं -

भरोसे के रिश्ते आज, कमज़ोर हो रहे हैं,
पंख लगाकर कौवे भी, मोर हो रहे हैं ।
हैरान है मन दुनिया का रंग देखकर,
कहें तो किससे कि पहरेदार ही चोर हो रहे हैं ।।

आज का जैन - आँखें बंद किये, दुर्गति तथा भविष्य की चिन्ता किये बगैर, अपनी ही धुन में मस्त, उद्देश्यविहीन होकर चकाचौंध भरी जिन्दगी जीने में व्यस्त है। अपने आप को सुपर स्मार्ट तथा बेहद समझदार समझ रहा है। आवश्यकता हैं, चिंतन के झरोखे में बैठकर अपने जीवन-व्यवहारों के निरीक्षण करने की।

स्वयं को गर्व से जैन कहने से पहले, हम 'जैनत्व' के गुणों को अवश्य ही धारण करें। अपने जीवन व्यवहार में सुधार की आवश्यकता ही, आज के समय की सर्वप्रथम मांग है।

तड़पते - मरते प्राणी को प्राण दीजिये ।
'स्व' के साथ 'पर' का भी कल्याण कीजिये ।।
पेट और पेटी भरकर तो खो गए कितने ही ।
जीवन निर्वाह के साथ, जीवन का निर्माण कीजिए ।।

अंग्रेजी के JAIN शब्द के एक-एक अक्षर पर विचार कीजिए।

J- Justice (न्याय) - जो सच्चाई की ओर ले जाए, वह न्याय है। न्यायी सत्य की आय पर ही निर्भर रहता है। सत्य की आय में व्यक्ति के मन को अपना बना लेने की ताकत होती है। न्याय को प्रेस, प्रेशर, पैसा, पक्षपात और पहचान से परे रहना चाहिए। न्याय जब इन पाँच प्रपंचों में फंस जाता है, तब वह न्याय नहीं रहता।

A- Affection (प्रेम) - प्रेम की धारा पृथ्वीतल में बहने वाली जलधारा के समान है, जो ऊँची-नीची सतहों को पार कर सदा अपना प्रवाह सम बनाये रखती है। जिसने हृदय की आँख से दूसरों को देखने की समझ विकसित कर ली है, वह नेत्रहीन होकर भी सबको नेतृत्व देता है।

I- Introspection (अन्तर निरीक्षण) - लोग पश्चाताप करते हैं परन्तु अपने पुराने दोषों को छोड़ने का प्रयत्न नहीं करते, अपने को नहीं परखते। बल्कि लोग यह सोचकर चुप रह जाते हैं कि अन्य लोग भी तो ऐसा ही करते हैं और फिर जब भाग्य में ही ऐसा लिखा है तो हम क्या कर सकते हैं। यदि इससे भी एक कदम और आगे बढ़ते हैं तो दूसरों की आलोचना करके अपना बचाव करने का ही सदैव प्रयत्न करते हैं, जब कि छिद्रान्वेषण की अपेक्षा अन्तर-निरीक्षण ही मानवता है।

N- Noble (महान बनो) - महान वही है, जिसमें सरलता का निवास हो। भगवान महावीर ने कहा है - "सो ही उज्जय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई" अर्थात सरल आत्मा में ही धर्म ठहर सकता है। सरलता मन का ऐसा प्रकाश है, जिसमें अन्तर का एक-एक कोना स्पष्ट झलकता है। "जिसकी सोच, वाणी और कर्म एक जैसे हैं तथा जैसा सोचता है, वैसा ही बोलता है और जैसा बोलता है, वैसा ही करता है।" ऐसा पारदर्शी जीवन मेरा भी हो। सरल व्यक्ति सब चीजें सरल भाव से देखता है। उसकी गति, मति, भावना एवं आचरण सब सरलता से युक्त होते हैं। सब तीर्थों में स्नान करना और सब प्राणियों के साथ सरलता का व्यवहार करना - ये दोनों एक समान हैं। जब तक मन में बालक जैसी निष्कपटता और निश्छलता पैदा न हो, जब तक धर्म का बीज मन की भूमि में नहीं बोया जा सकता। ❖❖

पन्द्रह कर्मादान और श्रावक धर्म

- डॉ. बी. रमेश गादिया जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)

जैन धर्म में आगार धर्म और अणगार धर्म की सूक्ष्म व्याख्या मिलती है। अणगार निर्ग्रंथ मुनि, याजीवन तक, मन, वचन और काया से कोई भी सांसारिक कार्य न करता न ही कराता है और न ही अनुमोदन करता है। लेकिन आगार धर्म में वीतरागी भगवन् ने श्रमणोपासक को सांसारिक कार्य करने की अनुमति दी। लेकिन साथ ही एक बात कही कि श्रमणोपासक, आरम्भी हिंसा न करें और श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी ने ऐसे संसारिक कार्य करने से उन्हें भी मना किया जिससे महा आंरभ हों। इसे जैन धर्म में 15 कर्मादान कहा। अर्थात जिस व्यवसाय से बहुत गाढ़े कर्म बंधते हो, श्रावक ऐसे व्यापार न करें।

जैन संत-सतियाँ ऐसे व्यवसाय और व्यापार नहीं करने की प्रेरणा देते हैं और उनसे महा कर्मादान से बचने के लिए प्रत्याख्यान भी करवाते हैं।

श्रमणोपासक के लिए 3 मनोरथ के चिंतन, सप्त कुव्यसन, 14 नियम, आदि व्रत नियम के साथ साथ 15 कर्मादान न करने की मौलिक बात कही गई है। लेकिन विडंबना है कि आज धन दौलत के नशे में चूर श्रमणोपासक, 15 कर्मादान में ऐसे कई व्यवसाय कर रहा है जो उसकी मर्यादा के अनुकूल नहीं है। ऐसे श्रेष्ठी को, बड़े बड़े विद्वान ज्ञानी साधु भी आदर सम्मान देते हैं और तो और उन्हें संघ संस्थाओं में उच्च स्थान भी प्रदान करते हैं। इस प्रसंग पर एक घटना याद आ रही है कि एक गुजराती महासती, गोचरी के लिए संघ के पदाधिकारी के यहां गई। रसोई घर में उन्होंने अंडे देखें तो गोचरी लेने से साफ मना कर दिया। लेकिन संघ के उस पदाधिकारी को क्रोध आ गया कि उसके यहां से महासती गोचरी क्यों नहीं लेती? दबाव में आकर उन्होंने थोड़ा सा दूध लिया लेकिन उपाश्रय आकर बाहर ही परठ दिया।

आज जैन संघ संस्थाओं में कई पदाधिकारी है, जिनका व्यवसाय ही 15 कर्मादान का है। आइए इस विकट और विषम परिस्थितियों पर चिंतन करें। हम कहा जा रहें हैं? ❖❖

जैन धर्म की विशेषतायें

- आगम ज्ञानार्थी डॉ. श्री शैली जी म.

1. जैन साधु-साध्वी जैसे त्यागी, तपस्वी, वैरागी, संयमी और समताधारी साधु-साध्वी दुनिया में कोई नहीं हैं। वे जिन्दगी भर किसी प्रकार की सवारी नहीं करते।

2. जैन साधु-साध्वी बिना कारण एक स्थान पर टिक कर नहीं रहते, विचरण करते रहते हैं और जन कल्याणार्थ उपदेश देते जाते हैं।

3. जैन साधु-साध्वी एक स्थान पर एक साथ नहीं रह सकते और न एक-दूसरे को छू ही सकते हैं।

4. जैन साधु-साध्वी अपने पास धन-दौलत, पैसा और किसी भी प्रकार के धातु का सामान नहीं रखते।

5. जैन धर्म ने कहा पहले कर्मों का क्षय कर कर्मवीर बनो, फिर धर्मवीर।

6. विश्व में केवल जैन धर्म ही है जो यह कहता है कि हमारा कोई शत्रु ही नहीं है। चौरासी लाख जीव योनि हमारे मित्र हैं, अतः किसी भी मित्र की हत्या करने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता, तो फिर जियो और सभी प्राणियों को निर्भय हो जीने दो।

7. जीव रक्षा व स्वास्थ्य की दृष्टि से विश्व में केवल जैन धर्म में ही रात्रि भोजन का निषेध किया है।

8. जैन धर्म ने सर्वप्रथम कहा है कि पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पति काय के जीव होते हैं और आज विज्ञान भी इस तथ्य को मानने लगा है। विज्ञान ने पानी की एक बूँद में 36430 जीव गिनकर बताते हैं और, जल, हवा, वनस्पति के जीवों के चित्र भी लिये हैं। सुई के अग्र भाग के बराबर हवा में विज्ञान-वेत्ताओं ने मैकसस् नाम के दस लाख जीवों की गिनती की है।

9. चौरासी लाख जीवों की विस्तृत गिनती केवल जैन धर्म ने ही बताई हैं।

10. यह केवल जैन धर्म ने बताया है कि एक शब्द की आवाज चौदह शत्रु लोक तक टक्कर खाती है। यह बात वर्तमान के वैज्ञानिकों ने वायरलेस के आविष्कार से सिद्ध कर दी है।

11. जैन धर्म ने कहा-सुखी जीवन यापन के लिए अपरिग्रह ही बनो, कल की चिन्ता न करो।

12. बुरे का फल अवश्य बुरा होता है। यदि तुम किसी जीव की जान बूझकर हत्या करोगे तो निःसन्देह यह जीव तुम्हारी हत्या अवश्य करेगा इस जन्म में अथवा अगले जन्म में कोई जीवन बदले से बच नहीं सकता।

13. आत्मबुद्धि व तन्दुरुस्ती की अचूक औषधि है नियमित उपवास।

14. जैन धर्म ने कहा किसी भी प्राणी का दिल मत दुःखाओ, दिल दुःखाओगे तो बद्दुआएँ मिलेंगी और बद्दुआओं से दिल का दौरा पड़ेगा। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है।

15. करुणा, विनम्रता और मृदु वचन त्रिरत्न है जो इनसे दूर रहता है, दुःख ही पाता है।

16. मौन बड़ा तप है। मौनी ही मुनि कहलाता है।

17. मनोबल बड़ा बल है।

18. स्वयं का अध्ययन उत्कृष्ट अध्ययन है।

19. धन से बड़ा धर्म है जो मुक्ति का मार्ग है।

20. सापेक्षवाद का आविष्कार जैन धर्म ही है।

21. पापों व भूलों से बचने का उपाय है प्रायश्चित और प्रायश्चित ही जीवन सुधार का मूल है।

22. राग द्वेष की जीत सबसे बड़ी जीत है। वीतरागी पुनः जन्म नहीं लेते।

23. संथारा भव सुधार का भाग है।

24. ब्रह्मचर्य ही जीवन है और वीर्य क्षय ही मृत्यु। जीवन को सुखी बनाने के लिए प्रामाणिकता व वैज्ञानिकता के आधार पर ब्रह्मचर्य पर जितना ज्ञान जैनधर्म ने दिया है उतना विश्व के किसी धर्म ने नहीं दिया।

25. जैन धर्म सदा से समन्वयवादी रहा है जबकि इतर धर्मों ने सदा जैन धर्म पर प्रहार किये हैं अतः बेधड़क निःसंकोच अपना धर्म जैन कहिये तथा धर्म को आचरण में उतारिये, जिससे दोनों भव सुधर सकें।

❖❖

सभ्य समाज की नींव

- **नरेश बोहरा जैन**-राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन-जैन कॉन्फ्रेंस, मुंबई (महाराष्ट्र)

हर सुबह जब सूरज उगता है, वह किसी देश की सीमाओं को नहीं देखता। वह केवल यह देखता है कि कौन-सी धरती पर लोग अपने कर्म से उसे सार्थक बना रहे हैं। किसी राष्ट्र की असली ताकत उसकी सेनाओं या उसकी ऊँची इमारतों, चौड़ी सड़कों या तकनीकी ताकत से नहीं होती, बल्कि उसके नागरिकों के आचरण और व्यवहार से होती है। सभ्य समाज की नींव एक-एक नागरिक के व्यवहार, सोच और जिम्मेदारी पर टिकी होती है। संविधान, कानून और नीतियाँ तभी सार्थक होती हैं जब नागरिक उनके प्रति सजग और संवेदनशील हों। सभ्य नागरिक वह है जो अपने अधिकार से पहले समाज के प्रति अपने कर्तव्य को सर्वोपरि रखता है। जो अधिकार मांगने से पहले अपने कर्तव्य निभाता है। जो नियमों से नहीं, अपने विवेक से चलता है। एक-एक नागरिक से मिलकर समाज बना है यदि सभी व्यक्ति अपने-अपने कर्तव्य का ईमानदारी से निर्वहन करेंगे तो समाज स्वयं ही सही दिशा की ओर अग्रसर होगा।

सभ्यता कोई वस्त्र नहीं जो ओढ़ ली जाए। यह मन का संस्कार है, विचार की शालीनता है, व्यवहार की मर्यादा है। सभ्य होना बोलने से अधिक, सुनने की क्षमता रखना है। एक सच्चा सभ्य नागरिक वही है जो - दूसरों की भावनाओं का सम्मान करे, अपने व्यवहार में संयम रखे और हर परिस्थिति में मानवता को सर्वोपरि माने

सभ्यता का पैमाना यह नहीं कि आपके पास क्या है, बल्कि यह है कि आप जो भी हैं, उसमें दूसरों के लिए कितना स्थान है। सभ्यता परोपकार प्रधान होती है न की अपकारवादी।

बच्चा अपने माता-पिता के आचरण से सीखता है। जब पिता सिग्नल पर रुकते हैं, जब माँ फेंका हुआ कचरा उठाती है, जब घर में झूठ बोलने की जगह सत्य की सराहना होती है - तब एक नया सभ्य नागरिक तैयार होता है। संस्कार किसी किताब से नहीं, वातावरण से आते हैं। यदि परिवार जिम्मेदार है, तो समाज स्वतः जिम्मेदार हो जाएगा।

शिक्षा केवल नौकरी पाने का साधन नहीं, बल्कि सोचने का तरीका है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था, 'शिक्षा का लक्ष्य अच्छे मानव बनाना है।' सभ्य नागरिक वही है जो शिक्षा को केवल अपनी उन्नति नहीं, बल्कि समाज की सेवा का माध्यम बनाए। विद्यालयों में जब बच्चों को गणित के साथ करुणा, विज्ञान के साथ संयम और इतिहास के साथ जिम्मेदारी सिखाई जाएगी, तब हम सच में शिक्षित समाज कहलाएँगे।

सभ्यता का अर्थ केवल 'मैं' नहीं, 'हम' है। सभ्य नागरिक वह है जो यह समझता है कि सड़क पर फैला कचरा उसकी गली की छवि नहीं, उसके देश की पहचान है। वह किसी की मदद के लिए हाथ बढ़ाने में देर नहीं करता, चाहे वह वृद्ध को सड़क पार कराने में हो या रक्तदान में। समाज की सुंदरता तभी बढ़ती है जब हर व्यक्ति अपनी भूमिका समझे, किसी के लिए प्रेरणा बनना भी नागरिकता का एक रूप है।

आज नागरिकता की परीक्षा सड़क पर नहीं, स्क्रीन पर होती है। सभ्य नागरिक वह है जो सोशल मीडिया पर संयम रखता है। जो शब्दों से नहीं, विचारों से असर डालता है। फेक न्यूज, नफरत और ट्रोलिंग से बचना अब नैतिक नहीं, नागरिक जिम्मेदारी है। सच साझा करना, झूठ को रोकना और संवाद को सम्मानजनक बनाए रखना।

सभ्यता का सबसे बड़ा पैमाना है कानून का सहृदय सम्मान करना। जिस देश में लोग बिना डर के कानून और व्यवस्था का पालन करते हैं, वह सच्चे अर्थों में विकसित देश कहलाता है। लाल बत्ती पर रुकना, कर समय पर देना, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना, वातावरण को स्वच्छ रखना, संयमित रहना दूसरों का सम्मान करना, वाणी और व्यवहार संतुलित रखना आदि। ये छोटी बातें लगती हैं, लेकिन यही राष्ट्र की आत्मा हैं। अनुशासन नागरिकता की रीढ़ है। जब हर व्यक्ति अपने कर्तव्य को ईमानदारी से निभाए, तो किसी नियंत्रण की जरूरत नहीं रहती।

भारत की पहचान उसकी विविधता है। सभ्य नागरिक वह है जो अपने धर्म से प्रेम करे, पर दूसरों के धर्म का सम्मान भी करे। वह त्योहारों को आनंद का अवसर मानता

है, विवाद का नहीं। सच्ची श्रद्धा धर्म स्थलों में नहीं, बल्कि उस मन में होती है जो दूसरों के लिए करुणा रखता है।

युवा केवल भविष्य नहीं, वर्तमान की शक्ति हैं। उनकी सोच, ऊर्जा और कर्म ही देश की दिशा तय करते हैं। यदि युवाओं में अनुशासन, सहानुभूति और ईमानदारी होगी, तो राष्ट्र स्वाभाविक रूप से ऊँचा उठेगा और उचाइयों की बुलंदियों के शिखर पर सुशोभित होगा।

आज के युवाओं को चाहिए कि वे :-

- स्वयंसेवा में भाग लें।
- पर्यावरणीय अभियानों में जुड़ें।
- तकनीक का जिम्मेदारी से उपयोग करें।
- राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखें।
- अच्छा साहित्य पढ़ें।
- अच्छे साहित्य की रचना करें
- कौशल सीखें, कुशल बनें।
- सभ्य नागरिकता का नया चेहरा युवाओं में छिपा है।

मीडिया समाज का दर्पण होती है। जब मीडिया निष्पक्षता और सत्य को प्राथमिकता देता है, तब समाज में पारदर्शिता आती है। सभ्य नागरिक को चाहिए कि वह सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास न करे, बल्कि तथ्य तलाशे। वास्तविकता की खोज करें। हर नागरिक जब जानकारी को सोच-समझकर ग्रहण करेगा, तब लोकतंत्र मजबूत होगा।

आज सभ्यता की सीमाएँ देश की सीमाओं से आगे बढ़ चुकी हैं। वैश्विक नागरिक वह है जो पूरी मानवता के हित में सोचता है। जलवायु परिवर्तन, मानवाधिकार, गरीबी और शांति जैसे विषय अब किसी एक राष्ट्र के नहीं रहे। 'वसुधैव कुटुंबकम्' - यही भारतीय सभ्यता का वैश्विक दर्शन है। सभ्य नागरिक वही है जो स्थानीय होकर भी वैश्विक दृष्टि रखे।

सभ्यता को आज कई मोर्चों से चुनौती मिल रही है :-

- नैतिक पतन
- मीडिया और सोशल मीडिया की अराजकता
- भ्रष्टाचार
- पर्यावरण प्रदूषण
- और मूल्यहीनता आदि।

इनसे लड़ने का एक ही उपाय है - स्वयं में सुधार। जब नागरिक स्वयं जिम्मेदार बनता है, तो समाज स्वतः बदल जाता है। सभ्य समाज निर्माण के लिए कुछ ठोस कदम आवश्यक हैं :-

1. स्कूलों में मूल्य आधारित शिक्षा को अनिवार्य किया जाए।

2. नागरिक शास्त्र को व्यवहारिक स्तर पर सिखाया जाए।

3. परिवार में नैतिक चर्चाओं की परंपरा वापस लाई जाए।

4. मीडिया और सोशल प्लेटफॉर्म पर सकारात्मक नागरिक अभियानों को प्रोत्साहित किया जाए।

5. हर व्यक्ति हर वर्ष किसी एक सामाजिक कार्य को अपनाए - जैसे वृक्षारोपण या सफाई अभियान। छोटे कदम, बड़े परिणाम लाते हैं।

6. सभ्य नागरिक बनना एक दिन का कार्य नहीं, यह जीवनभर का अनुशासन है।

7. सभ्यता किसी डिग्री से नहीं मिलती, यह रोज के व्यवहार में दिखाई देती है।

8. जब कोई बच्चा स्कूल जाते समय झंडे को झुककर प्रणाम करता है।

9. जब कोई व्यक्ति सड़क पर गिरी चीज किसी अनजान को लौटाता है।

10. जब कोई नागरिक अपने वोट को एक जिम्मेदारी मानता है तब सभ्यता साँस लेती है।

सभ्य नागरिक वही है जो अपने कर्त्तव्यों को उतनी ही गंभीरता से निभाए जितनी अपने अधिकारों को मांगने में दिखाता है। ऐसे ही नागरिक मिलकर एक महान राष्ट्र का निर्माण करते हैं। ❖❖

अर्थ और काम को अध्यात्ममनीषियों ने मुख्य स्थान नहीं दिया है, न अर्थ काम को नेतृत्व ही सौंपा है। इसका अर्थ है, मानव जीवन में अर्थ और काम गौण हैं, धर्म मुख्य है। धर्म के नेतृत्व या अंकुश में ही अर्थ और काम रहें, यही भारतीय धर्मों और दर्शनों ने उचित माना है। ●●

1966 के गौरक्षा आंदोलन में जैन कॉन्फ्रेंस का सेवा योगदान

- **जसवंत जैन**-राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली

दुनिया को अहिंसा का मंत्र देने वाले भगवान महावीर के देश में, शांति के पाठ पढ़ाने वाले बुद्ध के देश में, करुणा का पाठ सीखने वाले भगवान राम के देश में जहां जीव पर दया करना सिखाया गया हो, उस भूमि पर पवित्र पशु गाय एवं गौवंश की हत्याओं से सभी गौप्रेमी आहात थे। समय-समय पर वर्तमान सरकारों से गौ हत्या को रोकने के लिए वार्तालाप भी किए गए परंतु सरकारों की इस अति गंभीर विषय पर उदासीनता ने गौ भक्तों में सरकारों के प्रति अविश्वास को बढ़ा दिया। कटती गाय और सोती सरकारों को जगाने के लिए गौ प्रेमी और संतों ने 7 नवंबर 1966 के दिन एक शांतिपूर्वक मार्च निकाला। मार्च को अपने तय स्थान, संसद भवन परिसर के बाहर तक जाना था। आंदोलनकारियों की एक शाखा का नेतृत्व पूज्य संत आचार्य श्री सुशील कुमार जी कर रहे थे और एक दल का नेतृत्व स्वामी करपात्री जी महाराज कर रहे थे। आंदोलनकारियों का दल जैसे ही संसद भवन परिसर के गेट नंबर 2 पर पहुँचा सुरक्षाबलों ने निहत्थे साधु-संतों पर लाठी, आँसू गैस के गोले और गोलियों से हमला कर दिया। इस हमले में कई संतो की मृत्यु हो गयी और सैकड़ों गौ प्रेमी गंभीर रूप से घायल हो गए।

क्यूँ मनाया जा रहा है? : 7 नवंबर 1966 के दिन गौ संकल्प यात्रा में वीरगति को प्राप्त हुये संतों को श्रद्धांजलि देने के लिए और उन सैकड़ों घायलों के लिए यह बलिदान दिवस मनाया जा रहा है जिसने गौवंश को बचाने के लिए सरकार के दमनकारी डंडे खाए। सरकार को पुनः जागृत करने के लिए और गौ हत्या को रोकने के लिए। सभी कत्लखाने जिसमें गौहत्या होती हो बंद करने, देश को भगवान महावीर के अहिंसा के रास्ते पर ले जाने के लिए यह मनाया जा रहा है। भविष्य में भी प्रतिवर्ष 7 नवंबर को यह बलिदान दिवस के रूप मे मनाया जाता रहेगा।

❖❖

भारतीय धर्मों में गाय का महत्व

जैन धर्म में गाय : जैन धर्म अहिंसा, करुणा और जीव मात्र के प्रति सम्मान भाव पर आधारित है। इस सिद्धांत के केंद्र में 'जीव दया' है, जो सभी प्राणियों के प्रति सम्मान और संवेदना सिखाता है। गाय जो भारतीय संस्कृति में मातृस्वरूप मानी जाती है, जैन धर्म के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में विशेष स्थान रखती है।

1. अहिंसा का प्रतीक : जैन धर्म का मूल सिद्धांत हैकृअहिंसा परमोधर्मः। गाय इस सिद्धांत की सजीव प्रतिमा है। वह न हिंसा करती है, न किसी को हानि पहुँचाती है। उसका जीवन संयम, सहनशीलता और सेवा का उदाहरण है। जैन संतों और श्रावकों के लिए गौ को मारना, पीड़ा देना या उसका दुःख सहना, गंभीर अधर्म माना गया है। इसलिए जैन समाज में गोहत्या का विरोध नैतिक कर्तव्य के रूप में देखा जाता है।

2. करुणा और दया का भाव : गाय जैन धर्म में करुणा का प्रतीक है। उसकी ममता, सहनशीलता और त्याग भावना मनुष्य को दया और करुणा के मार्ग पर प्रेरित करती है। जैन आगमों में कहा गया है कि जो जीवों के प्रति दया रखता है, वही आत्मकल्याण का पात्र है। गाय की सेवा करना, उसे संरक्षण देना, गौशालाएँ बनाना, ये सभी दया के अभ्यास के रूप में माने गए हैं।

3. पंचमहाव्रत और गौ संरक्षण : जैन साधु और श्रावक पाँच महाव्रतों का पालन करते हैं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। गाय की रक्षा इन व्रतों से जुड़ी हुई है। **अहिंसाः** गौ पर हिंसा वर्जित है। **अपरिग्रहः** गाय को केवल भोग की वस्तु न मानना, उसका उपयोग सीमित रखना। **अचौर्य** : उसके दूध या श्रम का अनुचित दोहन न करना। इन सिद्धांतों के अनुसार गाय की रक्षा धर्म और तप का रूप ले लेती है। **प्राणीमात्र की समानता** : जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक जीव, चाहे वह सूक्ष्म हो या स्थूल, आत्मा रखता है और मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी है। गाय भी एक संवेदनशील जीव है, इसलिए उसकी हत्या

या शोषण आत्मिक पतन का कारण माना गया है। गाय के प्रति यह दृष्टिकोण जैन धर्म की उस सर्वजीव समभाव की भावना को दर्शाता है जो आत्मकल्याण के मार्ग में अनिवार्य है।

4. आर्थिक और सामाजिक पक्ष : जैन समाज में गोपालन और गौशालाओं की परंपरा रही है। कई जैन मुनि प्रेरणा देकर श्रावकों के दान को 'जीव दया निधि' के रूप में गौशालाओं में लगाते हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में जैन समाज द्वारा संचालित सैकड़ों गोशालाएँ हैं, जहाँ वृद्ध, बीमार या त्यागी गई गायों की सेवा की जाती है। यह न केवल धार्मिक भावना का प्रतीक है बल्कि समाज में मानवीय मूल्यों के संरक्षण का कार्य भी है।

5. आध्यात्मिक प्रेरणा : गाय को मातृभाव से देखना जैन साधना का हिस्सा है। जैसे माँ निस्वार्थ भाव से देती है, वैसे ही गाय भी देती है। यह भावना आत्मसंयम, त्याग और परोपकार की ओर ले जाती है, जो जैन तप का मूल है। गाय की सरलता और शांति, साधक को मन की स्थिरता और अहिंसक जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा देती है।

6. जैन ग्रंथों और परंपराओं में उल्लेख : जैन आगमों में गौ का उल्लेख दया और जीव संरक्षण के संदर्भ में मिलता है। आचार्य हेमचंद्र और आचार्य तुलसी जैसे अनेक महान आचार्यों ने अपने उपदेशों में गाय सहित सभी प्राणियों के प्रति करुणा को धर्म का प्रथम चरण बताया है। 'जीवो जीवस्य जीविका' का सिद्धांत, इस चेतावनी के साथ दिया गया है कि मनुष्य को अपनी जीविका भी इस प्रकार अर्जित करनी चाहिए कि किसी अन्य जीव को कष्ट न पहुँचे।

7. आधुनिक परिप्रेक्ष्य : आज के औद्योगिक समाज में जहाँ पशुओं का शोषण बढ़ रहा है, जैन धर्म का यह दृष्टिकोण संतुलित जीवन का आदर्श प्रस्तुत करता है। गाय संरक्षण केवल धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि पर्यावरण और नैतिकता की आवश्यकता भी है। गाय के माध्यम से जैन धर्म हमें सिखाता है कि संवेदना और करुणा से भरा समाज ही स्थायी रूप से समृद्ध हो सकता है।

हिंदू धर्म मे गाय : हिन्दू धर्म में गाय को 'गौमाता' कहा गया है। वह केवल एक पशु नहीं, बल्कि मातृत्व, पवित्रता और अहिंसा का प्रतीक मानी जाती है। गाय का सम्मान धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सभी स्तरों पर गहराई से जुड़ा हुआ है।

1. वेदों में गाय का स्थान : ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद में गाय को 'अघ्न्या' कहा गया है, जिसका अर्थ है 'जिसे मारा न जाए।' गाय को धन, शांति और समृद्धि का स्रोत माना गया है। वेदों में गाय को 'सर्वदेवमयी' कहा गया है, यानि सभी देवताओं का वास उसमें माना गया है।

2. धार्मिक प्रतीक के रूप में गाय : गाय का दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर-इन पाँच तत्वों को 'पंचगव्य' कहा गया है। इनका प्रयोग यज्ञ, पूजा और शुद्धिकरण में होता है। माना जाता है कि पंचगव्य शरीर और मन दोनों को पवित्र करता है। गाय का गोबर और मूत्र भी धार्मिक दृष्टि से शुद्ध माने गए हैं और अनेक औषधियों में उपयोग किए जाते हैं।

3. देवी स्वरूप : गाय को पृथ्वी का प्रतीक माना गया है। जैसे धरती सभी का पालन करती है, वैसे ही गाय भी सभी को पोषण देती है। पुराणों में कहा गया है कि गाय के शरीर में सभी देवी-देवता निवास करते हैं। भगवान श्रीकृष्ण का जीवन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। उन्होंने गोकुल में गौ-सेवा की और 'गोविंद' नाम पाया।

4. सामाजिक और नैतिक दृष्टि : गाय पालन हिंदू समाज में सेवा और दान का कार्य माना गया है। 'गौदान' को सर्वोच्च दान कहा गया है। मनुस्मृति और धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि गौ-रक्षा धर्म की रक्षा के समान है। गाय से प्राप्त उत्पाद न केवल आहार का स्रोत हैं, बल्कि पारिवारिक अर्थव्यवस्था का भी आधार रहे हैं।

5. अहिंसा और करुणा का प्रतीक : गाय अहिंसा की भावना को मजबूत करती है। उसका स्वभाव शांत और सहनशील है। हिन्दू धर्म में जीवों के प्रति दया को धर्म का मूल माना गया है। गाय की रक्षा और सेवा इस करुणा भाव का व्यावहारिक रूप है।

6. आधुनिक संदर्भ : आज भी हिन्दू समाज में गौ-पूजन, गाय-सेवा और गौशालाओं की परंपरा जीवित है। यह न केवल धार्मिक कर्तव्य है, बल्कि पर्यावरण और

मानवता के संतुलन का भी प्रतीक है। गाय के संरक्षण से कृषि, स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी सभी को लाभ होता है।

बौद्ध धर्म में गाय : बौद्ध धर्म का मूल आधार है करुणा, अहिंसा और सम्यक दृष्टि। प्रत्येक जीव के प्रति दया और संवेदना रखना बौद्ध आचरण का मुख्य सिद्धांत है। इस दृष्टि से गाय, जो शांत, सहनशील और पालनकारी स्वभाव की प्रतीक है, बौद्ध मत में विशेष सम्मान की पात्र रही है।

1. अहिंसा और दया का प्रतीक : गाय बौद्ध धर्म में अहिंसा की मूर्त रूप मानी जाती है। बुद्ध ने सिखाया कि कोई भी जीव हिंसा का पात्र नहीं है, क्योंकि प्रत्येक जीव में जीवन की समान ज्योति है। 'सभी प्राणी दुख से मुक्त हों' इस बौद्ध प्रार्थना का भाव गाय की रक्षा में निहित है। इसलिए गौहत्या या पशु हिंसा को बौद्ध धर्म में गंभीर पाप माना गया है।

2. बौद्ध ग्रंथों में उल्लेख : त्रिपिटक और जातक कथाओं में गौ का उल्लेख करुणा और सेवा के उदाहरण के रूप में मिलता है। बुद्ध ने कई प्रसंगों में पशुओं, विशेषकर गाय जैसे जीवों के प्रति दया का उपदेश दिया। कुछ जातक कथाओं में गाय को त्याग और सहनशीलता का प्रतीक बताया गया है, जो साधक को संयम और करुणा की शिक्षा देती है।

3. आजीविका और नैतिकता : बौद्ध धर्म में 'सम्यक आजीविका' (Right Livelihood) का सिद्धांत है, जिसके अनुसार व्यक्ति को ऐसे कार्य से आजीविका नहीं चलानी चाहिए जिससे किसी जीव को कष्ट पहुँचे। इसलिए गाय या अन्य पशुओं की हत्या, मांस व्यापार या शोषण, बौद्ध दृष्टि से अनुचित माने गए हैं। इसके विपरीत, गाय की सेवा, पालन और सुरक्षा को पुण्य कर्म समझा गया है।

4. पर्यावरणीय और सामाजिक दृष्टि : गाय बौद्ध समाज में पर्यावरण संतुलन की प्रतीक मानी जाती है। प्राचीन बौद्ध विहारों में गौपालन के उदाहरण मिलते हैं, जहाँ गाय का उपयोग दूध और कृषि के लिए किया जाता था, बिना किसी हिंसा के। यह जीवनशैली 'मध्यम मार्ग' का अनुसरण करती थी - जहाँ उपयोग है, पर अत्याचार नहीं।

5. नैतिक और आध्यात्मिक प्रेरणा : बुद्ध ने बार-बार कहा कि दया और मैत्री ही धर्म का सार हैं। गाय का शांत स्वभाव इस मैत्री भावना का प्रत्यक्ष उदाहरण है। वह न केवल समाज को पोषण देती है, बल्कि मनुष्य को करुणा, संयम और सेवा का संदेश देती है। गाय की सेवा से साधक में 'मैत्रीभाव' (Loving-kindness) और 'करुणा भाव' (Compassion) विकसित होता है, जो निर्वाण की ओर ले जाने वाले चार अपरिमाण भावों में से दो हैं। बौद्ध मत में गाय का महत्व किसी पूजा या प्रतीक तक सीमित नहीं है, बल्कि नैतिकता, अहिंसा और करुणा के व्यवहारिक अनुप्रयोग में निहित है। गौ की रक्षा बौद्ध जीवनदर्शन की उस भावना को मजबूत करती है जिसमें हर जीव के प्रति सम्मान और शांति का भाव समाहित है।

सिख धर्म में गाय : सिख धर्म में किसी विशेष पशु या प्रतीक की पूजा का प्रावधान नहीं है, परंतु अहिंसा, करुणा और सेवा को सर्वोच्च माना गया है। गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाः सभी जीवों में एक ही 'जोति' (ईश्वर का प्रकाश) माना गया है। इसलिए गाय सहित सभी जीवों के प्रति सम्मान और दया का भाव सिख आचार का हिस्सा है।

गाय-रक्षा की दृष्टि : सिख परंपरा में गाय की हत्या का विरोध उस कारण से किया गया कि वह एक जीवित आत्मा है, जो मनुष्य की तरह ही जीवन का अधिकारी है।

व्यावहारिक पहलू : ऐतिहासिक रूप से सिख गुरुओं ने गौशालाएँ स्थापित कीं। उदाहरणस्वरूप, गुरु हरगोबिंद और गुरु तेग बहादुर के काल में पशुओं की सेवा और संरक्षण को धर्म सेवा का अंग माना गया। ❖❖

!! स्वाध्याय !!

अचानक आ शरीर म्हां, रोग उपज जावे।
जड़ी बूटी औषध सेवन सू, जीवन आरोग्य होवे।
जीवन आरोग्य होवे, स्वाध्याय कीजे रे हो जान।
अज्ञान रूपी रोग निवारवा, संजीवनी के समान।
मन स्वस्थ निर्मल, पलायन है कुत्सित भाव।
निर्जरा है स्वाध्याय सेती, जीवन माय बदलाव।।

मानव सभ्यता की सबसे बड़ी क्रांति शिक्षा

- **डॉ. अशोक कुमार एन. पगारिया जैन**-राष्ट्रीय अध्यक्ष-हर प्रांत जैन भवन योजना, पुणे (महाराष्ट्र)

शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि मानव चेतना के विकास की सबसे प्राचीन और शक्तिशाली प्रक्रिया है। हम देखते हैं इतिहास में जो भी समृद्ध सभ्यताएं पायी गई हैं उस सभ्यता के लोगों ने शिक्षा को महत्व दिया या ये कहें कि वो लोग शिक्षित थे तो यह बात गलत नहीं होगी। इतिहासकार के रूप में जब मैं मानव विकास की कहानी पढ़ता हूँ, तो पाता हूँ कि हर युग, हर सभ्यता और हर परिवर्तन की जड़ में शिक्षा की कोई न कोई धारा प्रवाहित होती रही है। यह लेख शिक्षा के महत्व को ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक दृष्टिकोण से परखने का प्रयास है।

शिक्षा का ऐतिहासिक विकास : मानव सभ्यता की शुरुआत तब हुई जब मनुष्य ने प्रकृति को समझने की कोशिश की। यह समझ ही शिक्षा का आरंभ थी। गुफाओं की दीवारों पर उकेरी गई चित्रकथाएँ, मिट्टी के बर्तन बनाना, अग्नि का प्रयोग - ये सब प्रारंभिक शिक्षा के रूप थे।

भारत में वैदिक काल से ही शिक्षा को 'विद्या' कहा गया है। 'स या विद्या या विमुक्तये' - अर्थात शिक्षा वह है जो मनुष्य को अज्ञान के बंधन से मुक्त करे। तक्षशिला और नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय इस विचार के जीवंत प्रमाण हैं। वहाँ केवल ग्रंथ नहीं पढ़े जाते थे, वहाँ जीवन के हर पक्ष पर विचार-विमर्श होता था। गणित, चिकित्सा, व्याकरण, तर्कशास्त्र, राजनीति, खगोलशास्त्र - सभी विषयों में ज्ञान का सृजन होता था।

मध्यकाल में शिक्षा का स्वरूप सीमित हुआ पर गुरुकुल और मदरसे समाज को बौद्धिक आधार देते रहे। औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय समाज में नई सोच उत्पन्न की, जिसने सामाजिक सुधार आंदोलनों को जन्म दिया।

शिक्षा और समाज का संबंध : शिक्षा समाज की आत्मा है। यह व्यक्ति को नहीं, समुदाय को परिवर्तित करती है। एक शिक्षित समाज अधिक सहिष्णु, विचारशील और रचनात्मक होता है। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले जैसे महान व्यक्तित्वों ने शिक्षा को सामाजिक न्याय का हथियार बनाया। उन्होंने शिक्षा को केवल उच्चवर्ग तक सीमित नहीं रहने दिया। महिलाओं, दलितों और वंचितों के लिए शिक्षा का द्वार खोलना उस समय क्रांतिकारी कदम था।

महात्मा गांधी ने 'नई शिक्षा' का सिद्धांत दिया। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के हाथ, दिमाग और दिल-तीनों का विकास करना है। नेहरू और टैगोर ने भी शिक्षा को रचनात्मकता और स्वाधीनता से जोड़ा। आज भी शिक्षा वह शक्ति है जो समाज में समान अवसर पैदा करती है। यह जाति, धर्म और लिंग की दीवारों को तोड़ती है।

आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका : इतिहास साक्षी है कि आर्थिक उन्नति का सबसे बड़ा आधार शिक्षा ही रही है। औद्योगिक क्रांति का बीज तकनीकी शिक्षा ने बोया। 18वीं और 19वीं शताब्दी में यूरोप में जब वैज्ञानिक शिक्षा का प्रसार हुआ, तो उत्पादन, व्यापार और नवाचार का विस्फोट हुआ। आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था ज्ञान आधारित है। तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विज्ञान और डिजिटलीकरण-इन सभी का मूल शिक्षा है। यूनिसेफ की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, प्रत्येक अतिरिक्त वर्ष की शिक्षा से व्यक्ति की औसत आय में लगभग 10% की वृद्धि होती है।

भारत में भी जब साक्षरता दर 1951 के 18% से बढ़कर आज लगभग 77% के आसपास पहुँची, तो GDP में स्थायी वृद्धि देखी गई। शिक्षा ने कृषि से उद्योग और उद्योग से सेवा क्षेत्र को आसान बनाया। शिक्षित श्रमिक अधिक उत्पादक होते हैं और शिक्षित उद्यमी अधिक नवाचार लाते हैं। इसीलिए कहा गया है -'शिक्षा सबसे बड़ा पूंजी निवेश है।'

शिक्षा और लोकतंत्र : लोकतंत्र केवल चुनावों का तंत्र नहीं है, यह विचारों की स्वतंत्रता पर आधारित व्यवस्था है। और विचारों की स्वतंत्रता शिक्षा से आती है। भारत का संविधान शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार करता है। अनुच्छेद 21-A के तहत 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया। यह कदम इसलिए आवश्यक था क्योंकि बिना शिक्षित नागरिकों के लोकतंत्र अधूरा रहता है। एक शिक्षित मतदाता सही निर्णय ले सकता है, नीति को समझ सकता है और शासन को जवाबदेह बना सकता है। शिक्षा नागरिक को केवल अधिकार नहीं, जिम्मेदारी का बोध कराती है।

शिक्षा और मानवता का नैतिक पक्ष : शिक्षा केवल बुद्धि नहीं, संवेदना का भी विकास करती है। यह व्यक्ति को 'मैं' से 'हम' तक ले जाती है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था-'शिक्षा का अर्थ है मनुष्य के भीतर पहले से मौजूद पूर्णता

को बाहर लाना।' यह शिक्षा का नैतिक दृष्टिकोण है। एक सच्चा शिक्षित व्यक्ति ईमानदारी, सहानुभूति और सेवा जैसे मूल्यों को अपनाता है। इतिहास बताता है कि जब शिक्षा ने नैतिकता खो दी, तो ज्ञान विनाश का कारण बना। द्वितीय विश्व युद्ध में वैज्ञानिक ज्ञान ने मानवता पर आघात किया क्योंकि उसे नैतिक दिशा नहीं मिली। इसलिए आज की शिक्षा को तकनीकी दक्षता के साथ नैतिक दृष्टि भी देनी होगी।

आधुनिक शिक्षा की चुनौतियाँ : वर्तमान समय में शिक्षा की पहुँच बढ़ी है, पर गुणवत्ता और उद्देश्य दोनों पर प्रश्न हैं। शिक्षा अधिक परीक्षा-केंद्रित हो गई है, सोचने और प्रश्न करने की क्षमता घट रही है, डिजिटल माध्यम ने अवसर तो बढ़ाए हैं, पर गहराई घटाई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में सुधार का प्रयास किया है। यह नीति लचीलापन, बहुविषयकता और कौशल आधारित शिक्षा पर बल देती है। परंतु नीतियों से अधिक आवश्यक है उनका ईमानदार क्रियान्वयन। ग्रामीण भारत में अब भी लाखों बच्चे उचित शिक्षण संसाधनों से वंचित हैं। शहरी विद्यालयों में भी शिक्षा व्यवसाय बनती जा रही है। ऐसे में शिक्षा का मानवीय पक्ष फिर से स्थापित करना समय की माँग है।

महिला शिक्षा - परिवर्तन की धुरी : इतिहास के हर युग में जब महिलाओं को शिक्षा मिली, समाज ने प्रगति की। सावित्रीबाई फुले ने जब पुणे में पहला बालिका विद्यालय खोला, तो उन्हें सामाजिक विरोध झेलना पड़ा। पर उनके प्रयास ने भारत में महिला शिक्षा की नींव रखी। आज शिक्षित महिलाएँ न केवल घर की दिशा बदल रही हैं, बल्कि उद्योग, राजनीति, विज्ञान और प्रशासन के हर क्षेत्र में नेतृत्व कर रही हैं। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार, किसी देश में महिलाओं की साक्षरता दर में 10% वृद्धि से शिशु मृत्यु दर में लगभग 6% की कमीं आती है। महिला शिक्षा केवल समानता का प्रश्न नहीं, समाज के सर्वांगीण विकास की शर्त है।

डिजिटल युग में शिक्षा का नया चेहरा : 21वीं सदी में शिक्षा सीमाओं से परे जा चुकी है। इंटरनेट ने ज्ञान को लोकतांत्रिक बना दिया है। कोई भी व्यक्ति, किसी भी स्थान से, विश्वस्तरीय शिक्षा तक पहुँच सकता है।

Coursera, edX और SWAYAM जैसे प्लेटफॉर्म ने उच्च शिक्षा को सुलभ बनाया है। AI और वर्चुअल क्लासरूम ने व्यक्तिगत शिक्षण संभव किया है। परंतु यह परिवर्तन तभी सार्थक है जब तकनीक को साधन के रूप में देखा जाए, लक्ष्य के रूप में नहीं। ऑनलाइन शिक्षा में मानव संवाद, मूल्य और संवेदना को बनाए रखना अगली बड़ी चुनौती है।

भविष्य की दिशाः शिक्षा और आत्मनिर्भरता : भारत आज 'ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था' की ओर बढ़ रहा है। इस दिशा में शिक्षा को उद्योग और अनुसंधान से जोड़ना आवश्यक है।

स्कूल स्तर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण : विश्वविद्यालयों में नवाचार केंद्र, स्थानीय समस्याओं पर आधारित परियोजनाएँ, कौशल विकास को शिक्षा का हिस्सा बनाना, शिक्षा को केवल नौकरी का साधन नहीं, राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया बनाना होगा। आत्मनिर्भर भारत का सपना तभी साकार होगा जब शिक्षा विचार, कौशल और नैतिकता - तीनों को संतुलित रूप से विकसित करेगी। शिक्षा ही संस्कृति की आत्मा है। इतिहासकार के रूप में मैं यह कह सकता हूँ कि सभ्यता का उत्थान शिक्षा से और पतन अज्ञान से हुआ है। जब भी समाज ने शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी, उसने इतिहास में स्वर्ण युग रचा। शिक्षा वह बीज है जिससे संस्कृति, विज्ञान, अर्थव्यवस्था और लोकतंत्र सभी पल्लवित होते हैं। यह वह प्रक्रिया है जो मनुष्य को मनुष्य बनाती है। आज जब दुनिया असमानता, तकनीकी निर्भरता और नैतिक संकट से जूझ रही है, तब शिक्षा ही वह शक्ति है जो भविष्य को सही दिशा दे सकती है। आपके लिए शिक्षा केवल करियर की सीढ़ी नहीं, जीवन की चेतना बननी चाहिए। ज्ञान का अर्थ परीक्षा में अंक नहीं, विचार में विस्तार है और यही शिक्षा का असली अर्थ है-मनुष्य के भीतर छिपे प्रकाश को प्रज्वलित करना।

शिक्षा और परिवार : हम सभी ने इस बात का अनुभव किया होगा कि किसी भी परिवार में चाहे वह देहात का हो या शहर का, कोई पहला सदस्य उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेता है और खुद के साथ-साथ परिवार के विकास में जुड़ जाता है, तो उसके परिवार की अगली जनरेशन के सभी सदस्यों का शिक्षा लेने का मन होता है, संकल्प होता है और एक शिक्षित सदस्य पूरे परिवार का नक्शा बदल देता है। आर्थिक रूप से परिवार को सुदृढ़ बनाता है, यही शिक्षा का महत्व होता है। और आज के डिजिटल युग में हमें टेक्नोलॉजी तंत्रज्ञान की शिक्षा लेना आवश्यक है। आज हम देख रहे हैं हमारे युवा साथी इस तंत्रज्ञान की शिक्षा के बारे में आगे बढ़ रहे हैं। हमारे लिए यह बड़ी सौभाग्य की बात है। कई छात्र नए बिजनेस शुरू कर रहे हैं, फैक्ट्रियां शुरू कर रहे हैं और बड़ी कंपनी में अच्छी पोस्ट पर कार्य कर रहे हैं, विदेश में काम कर रहे हैं, यह केवल और केवल शिक्षा का परिणाम है इसलिए हर परिवार में शिक्षा होना जरूरी है।

❖❖

जन्म जयंती पर विशेष...

अमृत वचनो के धनी : वाचनाचार्य पू. उपाध्याय श्री विशालमुनिजी म.सा.

- **संतोष सुरेश जैन**-राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा-जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली

जैन साधना-परंपरा में अनेक विभूतियाँ हुई हैं, परंतु कुछ संत ऐसे होते हैं जिनकी सरलता, तपस्या, मधुरवाणी और गहन आध्यात्मिक ज्ञान उन्हें विशिष्ट बना देता है। वाचनाचार्य पूज्य डॉ. श्री विशालमुनि जी महाराज ऐसी ही विलक्षण विभूति हैं, जिनका सम्पूर्ण जीवन जैन आगमों की मर्यादा, गुरु-भक्ति, आत्मानुशासन और अध्यात्म-सेवा का उज्ज्वल उदाहरण है।

नेपाल के एक छोटे से गाँव में 12 नवंबर 1953 गुरुवार संवत् 2010, कार्तिक शुक्ल 6 को ब्राह्मण कुल में जन्मे पूज्य श्री का बाल्यकाल सादगी, अध्ययन और संस्कारों से ओत-प्रोत रहा। किशोरावस्था से ही अध्यात्म के प्रति गहरी रुचि विकसित हुई और 22 जनवरी 1972 शनिवार संवत् 2028, माघ सुदी 7 को उन्होंने जैन भागवती दीक्षा ग्रहण कर अपना जीवन पूर्णतः गुरुचरणों में समर्पित कर दिया। यह वह क्षण था जिसने उनकी तपस्या, सेवा और ज्ञान-यात्रा को दिशा और दिव्यता प्रदान की।

पूज्य श्री का व्यक्तित्व सरलता, विनय और मधुरता का अद्भुत संगम है। उनकी वाणी मधुर, ओजस्वी और गूढ़ ज्ञान से परिपूर्ण होती है। जैन दर्शन की सूक्ष्मताओं पर उनकी पकड़ और आगमों की व्याख्या करने की क्षमता उन्हें वर्तमान युग के श्रेष्ठ जैन विद्वानों में स्थान दिलाती है। उनकी हर शिक्षा जैन धर्म के मूल सिद्धांतों - अहिंसा, संयम, आत्मशुद्धि और करुणा - को जनमानस तक सरल रूप में पहुँचाती है।

उनकी तपस्या अत्यंत प्रेरणादायक है। कठोर साधना, आत्म-नियंत्रण और व्रतों की निष्ठा के कारण वे जैन साधु-जीवन के आदर्श प्रतिनिधि माने जाते हैं। किंतु उनके दिव्य व्यक्तित्व का सबसे बड़ा स्तंभ है - अद्वितीय गुरु-भक्ति। अपने गुरु, तपस्वी-राज पूज्य श्री सुमतिप्रकाश जी म.सा. की सेवा में बिताया गया उनका समय उतना ही पवित्र है जितना प्रेरक। गुरुसेवा को उन्होंने साधना का सर्वोच्च रूप माना और उसी माध्यम से जैन धर्म के गूढ़ रहस्यों को आत्मसात किया।

उनकी तपस्या, सेवा, विनम्रता और ज्ञान की गहराई ने उन्हें संपूर्ण जैन समाज में एक आदर्श संत, एक श्रेष्ठ वचन-विभूति और एक प्रभावशाली उपाध्याय के रूप में स्थापित किया है। उनकी जीवन-यात्रा में कई उतार-चढ़ाव आए, किंतु न तो उनका संकल्प डिगा और न ही उनकी साधना की तीव्रता कम हुई। दृढ़ता, समर्पण और पवित्रता - यही उनके जीवन के तीन स्तंभ हैं।

पूज्य उपाध्याय श्री ज्ञान-विज्ञान के महासागर है। आपकी शिक्षा और अध्ययन की साधना अत्यंत व्यापक है - एम. ए. , शास्त्री, पीएच.डी., आगम, निगम, वेद-वेदांत, जैन दर्शन एवं षड्दर्शन का गहन अध्ययन। आपकी पीएच.डी. (1900)- गंगोत्री विश्वविद्यालय, मैसूर से, अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर हुई। 'पउमचरिउ एवं रामचरितमानस के पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन' यह शोध आपकी व्यापक दृष्टि, गहन चिंतन और निष्पक्ष दार्शनिक परिपक्वता को प्रमाणित करता है। पूज्यश्री की वाणी मधुर, ओजस्वी, मर्मस्पर्शी और ज्ञान-गर्भित है। आगामों की व्याख्या, दर्शन की गहराई और जीवन मूल्यों को सहज भाषा में प्रस्तुत करने की आपकी क्षमता अद्वितीय है। इसी कारण समाज ने उन्हें सम्मानित उपाधियों से अलंकृत किया - वाचनाचार्य, प्रवचन भास्कर, नेपाल हिंद गौरव आदि।

आज, जन्मदिवस अवसर पर, हम उनके अमृत-वचनों, सरलता, गुरु-भक्ति और आध्यात्मिक जीवन से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। पूज्य उपाध्याय डॉ. विशालमुनिजी म.सा. का सम्पूर्ण जीवन जैन धर्म की मर्यादा, गुरुभक्ति, ज्ञान, तपस्या और सेवा का दिव्य संगम है। आज उनके जन्मदिवस पर हम सब उकनी आध्यात्मिक दीप्ति से प्रेरणा लेते हैं।

हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि पूज्य श्री को दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य और सतत् आध्यात्मिक तेज का आशीर्वाद प्राप्त रहे तथा उनका स्नेह, मार्गदर्शन और उपदेश जैन समाज को यूँ ही आलोकित करता रहे।

पूज्य श्री को कोटि-कोटि वंदन, नमन और जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

●●

शिक्षा का महत्व, गुणवत्ता, कौशल और आधुनिक दृष्टिकोण

- **अमित कुमार लोढ़ा जैन**-राष्ट्रीय युवा महामंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

शिक्षा मनुष्य के जीवन की सबसे आवश्यक जरूरत है। यह केवल पढ़ना-लिखना सिखाने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि सोचने, समझने और जीवन जीने की कला का विकास करती है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे व्यक्ति अज्ञानता से ज्ञान की ओर, निर्भरता से आत्मनिर्भरता की ओर और पराधीनता से स्वतंत्रता की ओर बढ़ता है। इतिहास गवाह है कि जिन समाजों ने शिक्षा को प्राथमिकता दी, वे समाज आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सबसे अधिक प्रगतिशील बने।

भारत जैसे विशाल देश में शिक्षा का महत्व और भी अधिक है। यहाँ विविधता, जनसंख्या, भाषाएँ और सामाजिक असमानताएँ हैं, इसलिए शिक्षा को विकास का सबसे प्रभावी साधन माना जाता है। शिक्षा व्यक्ति को न केवल बेहतर जीवन जीने का अवसर देती है, बल्कि उसे जिम्मेदार नागरिक बनाती है, जो समाज और राष्ट्र के प्रति सजग और संवेदनशील होता है।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ : शिक्षा केवल विद्यालयों या विश्वविद्यालयों की चार दीवारी में सीमित नहीं है। यह जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है। किसी महान विचारक ने कहा था, 'शिक्षा वह है जो विद्यालय के बाद भी हमारे साथ रहती है।' इसका मतलब स्पष्ट है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि जीवन में सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना है।

सच्ची शिक्षा व्यक्ति के अंदर जिज्ञासा, आत्मविश्वास और सृजनात्मकता जगाती है। यह उसे समाज के लिए उपयोगी बनाती है। जो व्यक्ति शिक्षित होता है, वह समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है। शिक्षा मनुष्य के मस्तिष्क को दिशा देती है और उसके विचारों को रचनात्मक बनाती है।

शिक्षा की गुणवत्ता का प्रश्न : भारत में शिक्षा का विस्तार तो हुआ है, परंतु शिक्षा की गुणवत्ता अब भी एक चुनौती है। भारत की शिक्षा प्रणाली आज भी वही परतंत्रता वाले ढर्रे पर चल रही है, मैकाले की उस शिक्षानीति का उद्देश्य ही केवल मानसिक गुलाम पैदा करना था या ये कह सकते हैं की ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए नौकरों की पूर्ति करना था। यूनिसेफ और यूनेस्को की रिपोर्टों में बार-बार यह बात जोर-शोर से उठाई जाती है कि केवल स्कूलों की संख्या बढ़ा देने से शिक्षा का स्तर नहीं बढ़ता। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा वह होती है जो विद्यार्थियों को वास्तविक और व्यवहारिक जीवन के लिए तैयार करे।

गुणवत्ता शिक्षा के कुछ प्रमुख तत्व हैं : प्रशिक्षित और प्रेरित शिक्षक हो, शिक्षक शिक्षा की आत्मा है। यदि शिक्षक में उत्साह, ज्ञान और नैतिकता है तो शिक्षा स्वाभाविक रूप से प्रभावी बनती है।

संतुलित पाठ्यक्रम : पाठ्यक्रम केवल ज्ञान नहीं, बल्कि मूल्यों और जीवन कौशल को भी शामिल करे।

व्यावहारिक दृष्टिकोण : बच्चों को केवल रटने के बजाय समझने और प्रयोग करने का अवसर मिले।

मूल्य आधारित शिक्षा : ईमानदारी, अनुशासन, सहयोग और संवेदना जैसे मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना चाहिए।

तकनीकी संसाधन : डिजिटल माध्यमों से शिक्षण को अधिक प्रभावी, आकर्षक और सुलभ बनाया जा सकता है।

भारत में नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने इस दिशा में नए रास्ते खोले हैं। यह नीति शिक्षा को लचीला, बहु-आयामी और कौशल-उन्मुख बनाने पर बल देती है।

कौशल विकास और शिक्षा का संबंध : आज के वैश्विक एवं एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंट) युग में केवल सैद्धांतिक ज्ञान से रोजगार पाना कठिन हो गया है। उद्योग और संस्थान ऐसे युवाओं की तलाश में हैं जो व्यवहारिक और तकनीकी रूप से सक्षम हों। इसलिए शिक्षा प्रणाली को कौशल विकास से जोड़ना समय की मांग है।

कौशल विकास का मतलब है : कार्यक्षेत्र की वास्तविक आवश्यकताओं को समझना, संवाद, प्रबंधन और

समस्या समाधान की क्षमता विकसित करना, तकनीकी उपकरणों और नई तकनीकों का ज्ञान हासिल करना, स्व-रोजगार के अवसरों को पहचानना।

भारत सरकार ने 'स्किल इंडिया मिशन' जैसी पहले शुरू की हैं, जो युवाओं को रोजगार योग्य कौशल देने पर केंद्रित हैं। उदाहरण के लिए, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI), प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम ग्रामीण युवाओं को आत्मनिर्भर बना रहे हैं।

आधुनिक युग में शिक्षा का रूपांतरण : बीसवीं सदी के अंत और इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में शिक्षा प्रणाली ने एक बड़ा बदलाव देखा। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ अब डिजिटल और संवादात्मक रूप में बदल रही हैं।

ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म्स : Coursera, Byju's, Khan Academy जैसे प्लेटफॉर्म्स ने सीखने को सीमा रहित बना दिया है।

स्मार्ट क्लासरूम और ई-लर्निंग : ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में डिजिटल बोर्ड और ऑडियो-वीडियो शिक्षण ने शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया है।

ओपन एजुकेशन रिसोर्सेज (OER) : अब विद्यार्थी किसी भी विषय की सामग्री इंटरनेट पर मुक्त रूप से प्राप्त कर सकते हैं। इन तकनीकी परिवर्तनों ने शिक्षा को लोकतांत्रिक बना दिया है। अब ज्ञान किसी विशेष वर्ग या स्थान तक सीमित नहीं। हर व्यक्ति, चाहे वह गाँव का छात्र हो या महानगर का, समान रूप से सीख सकता है।

शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन : शिक्षा सामाजिक सुधार की सबसे बड़ी शक्ति है। जब समाज के हर वर्ग तक शिक्षा पहुँचती है, तो असमानता, भेदभाव और अंधविश्वास घटते हैं। भारत में शिक्षा ने महिलाओं की स्थिति को भी मजबूत किया है। आज महिलाएँ डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक और प्रशासक के रूप में देश का गौरव बढ़ा रही हैं। यह शिक्षा की सफलता है।

शिक्षित समाज में अपराध दर कम होती है, नागरिक अधिकारों की समझ बढ़ती है और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा होती है। शिक्षा व्यक्ति को केवल नौकरी नहीं देती, बल्कि उसे जिम्मेदार नागरिक बनाती है।

ग्रामीण भारत में शिक्षा की स्थिति : भारत की लगभग 65 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है। इसलिए जब तक ग्रामीण भारत शिक्षित नहीं होगा, तब तक समग्र विकास संभव नहीं। ग्रामीण शिक्षा की स्थिति में सुधार के लिए कई प्रयास हुए हैं, जैसे :- सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन योजना, शिक्षा का अधिकार अधिनियम आदि। इन योजनाओं से विद्यालयों में नामांकन दर तो बढ़ी, लेकिन गुणवत्ता अब भी चुनौती है। ग्रामीण शिक्षकों की कमीं, संसाधनों का अभाव और डिजिटल असमानता आज भी समस्या बने हुए हैं।

सरकार और निजी क्षेत्र दोनों को मिलकर ग्रामीण शिक्षा में निवेश बढ़ाना होगा, ताकि हर बच्चा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सके।

उच्च शिक्षा और अनुसंधान की दिशा : भारत के विश्वविद्यालयों और संस्थानों को केवल डिग्री प्रदान करने वाले केंद्र नहीं, बल्कि नवाचार और अनुसंधान के केंद्र बनना होगा।

IITs, IIMs और IISc जैसे संस्थान वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, लेकिन ग्रामीण और छोटे कॉलेजों में अनुसंधान संस्कृति अब भी कमजोर है।

उच्च शिक्षा में उद्योग-शिक्षा सहयोग बढ़ाना जरूरी है, ताकि छात्र वास्तविक समस्याओं पर काम करें।

छात्रवृत्तियों और अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी कार्यक्रमों से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को अवसर मिल सकते हैं।

शिक्षा में मूल्य और नैतिकता का स्थान : ज्ञान तब तक सार्थक नहीं जब तक उसमें नैतिकता न हो। आज जब समाज भौतिकवाद की दिशा में बढ़ रहा है, शिक्षा को नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना करनी होगी। इसके लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर कार्य करने की आवश्यकता है :-

विद्यालयों में चरित्र निर्माण, सामुदायिक सेवा और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों को शामिल किया जाना चाहिए।

विद्यार्थियों को सहानुभूति, सत्य, अनुशासन और सम्मान जैसे मूल्यों का प्रशिक्षण मिलना चाहिए।

यह भी जरूरी है कि शिक्षा केवल सफलता की नहीं, बल्कि जिम्मेदारी की भावना विकसित करे।

भविष्य की शिक्षा - दृष्टिकोण और चुनौतियाँ : भविष्य की शिक्षा व्यक्तिगत, तकनीकी और रचनात्मक होगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा एनालिटिक्स और मशीन लर्निंग शिक्षा के क्षेत्र में गहरा प्रभाव डाल रहे हैं। लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं।

तकनीकी असमानता से आर्थिक रूप से पिछड़े छात्र पीछे छूट सकते हैं।

शिक्षा का व्यावसायीकरण बढ़ने से गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं पर तकनीकी प्रभाव नकारात्मक हो सकता है।

जिस तरह से अमीर-गरीब का संतुलन बिगड़ा है वैसे ही साक्षारता-निरक्षरता का संतुलन बिगड़ सकता है।

इन चुनौतियों का समाधान संतुलित नीति, मानवीय दृष्टिकोण और सामूहिक सहयोग से ही संभव है। जिसमें सरकार और जनता दोनों को पारदर्शी भूमिका निभानी होगी।

शिक्षक की भूमिका : शिक्षक केवल पाठ्यपुस्तक का माध्यम नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के जीवन का मार्गदर्शक होता है। वह अपने आचरण और विचारों से समाज को सकारात्मक दिशा देता है।

एक अच्छा शिक्षक विद्यार्थी में आत्मविश्वास और जिज्ञासा पैदा करता है।

शिक्षक को निरंतर प्रशिक्षण और नई शिक्षण तकनीकों की जानकारी मिलनी चाहिए।

डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका 'सूचना देने वाले' से 'मार्गदर्शन करने वाले' में बदल रही है।

अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण : विकसित देशों में शिक्षा को आर्थिक विकास की आधारशिला माना गया है। फिनलैंड, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने शिक्षा में निवेश कर समाज को समृद्ध बनाया।

फिनलैंड में शिक्षक पेशा सबसे सम्मानित माना जाता है। जापान ने तकनीकी शिक्षा से उद्योग जगत को मजबूत किया। भारत को भी शिक्षा के क्षेत्र में दीर्घकालिक रणनीति अपनानी चाहिए जो स्थानीय जरूरतों के साथ वैश्विक प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखे।

शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि जीवन निर्माण की प्रक्रिया है। गुणवत्ता, कौशल और नैतिकता का संतुलन ही शिक्षा को पूर्ण बनाता है। जब समाज में हर व्यक्ति शिक्षित, कुशल और संवेदनशील होगा, तब ही एक सशक्त और समृद्ध भारत का निर्माण संभव होगा। शिक्षा में निवेश सबसे लाभदायक निवेश है। यह राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी है, जो आने वाली पीढ़ियों को बेहतर भविष्य देती है।

जिह्वा में अमृत बसै

आज के युग में हम जिधर भी दृष्टिपात करते हैं, उधर ही वैर-विरोध और संघर्ष दिखाई देता है। राष्ट्र में, समाज में, परिवार में, बाजार में और स्कूल या कॉलेजों में, सभी जगह अशांति और कलह का बातावरण बना रहता है। इसके मूल कारणों को खोजा जाए तो लगता है कि अधिकांशतया संघर्षों का कारण वाणी का दुरुपयोग करना ही है। मनुष्य अपनी भाषा की मधुरता से जहां आस-पास के सम्पूर्ण वातावरण को अपने अनुकूल बना लेता है तथा सर्वत्र सम्मान का पात्र बनता है, वहाँ भाषा के दुरुपयोग से अपमान और निन्दा का भाजन बन जाता है। इसीलिए कहा जाता है -

अमृत और विष दोनों ही जिव्हा में विद्यमान रहते हैं। जो व्यक्ति अमृतमयी अर्थात मधुर और प्रियवाणी का उच्चारण करता है, वह अनेक प्रकार का लाभ प्राप्त कर लेता है और जो अपनी जिव्हा से विष-रूप कटुवचनों का उच्चारण करता है, वह अपने पास रहा हुआ वैभव भी खो देता है।

स्पष्ट है कि मनुष्य की भाषा में महान् शक्ति निहित होती है। अपनी इस छोटी-सी जीभ से ही वह चाहे तो महाभारत के समान युद्ध ठनवा दे और अपने चारों ओर शत्रुओं को भी मित्र बना ले और घोर कलह को पलक झपकते ही शांत कर दे।

अपनी जबान मधुर हो तो गैर भी अपने बन जाते हैं और तीखी जबान होने से मित्र भी शत्रु के रूप में बदल जाते हैं।

तो वाणी का प्रयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए, इस संबंध में हमारे और अन्य धर्मों के शास्त्र भी एक ही बात कहते हैं कि मनुष्य सदा मधुर वचन बोले। ●●

जन्म जयंती पर विशेष...

धर्मवीर लोकाशाह का तथ्यात्मक जीवन

- डॉ. दिलीप धींग जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

1. परिवार :- माता : सुश्राविका गंगा बाई,
पिता : सुश्रावक हेमाशाह चौधरी (ओसवाल),
पत्नी : सुदर्शना (सुनंदा), पुत्र : पूर्णचंद्र (पूनमचंद)
2. जन्म :- स्थान : अरहट्टवाड़ा (गुजरात),
तिथि : कार्तिक पूर्णिमा, विक्रम संवत् 1472
(सन् 1415)
3. लोकाशाह अथवा लोंकाशाह का पूर्व नाम लोकचन्द्र था। वे व्यसनमुक्त, अनासक्त, धर्मनिष्ठ, नीतिवान, व्रती, माता-पिता के आज्ञाकारी और अध्ययनशील प्रवृत्ति के थे।
4. एकान्तप्रिय और वैराग्यवृत्ति वाले होने के बावजूद वे धर्म के संघीय स्वरूप को महत्त्व देते थे और धार्मिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते व सहयोग करते थे।
5. लोकाशाह व्यापार में अहिंसक मूल्यों के प्रति सजग रहते थे। उनका किसानों के साथ लेन-देन भी था। यदि दुष्काल या किसी कारण से किसानों की फसलें नष्ट हो जाती तो लोकाशाह स्थिति व परिस्थिति के अनुसार उनके कभी ब्याज तो कभी ऋण माफ कर देते थे। वे कभी भी मद्य, मांस जैसे निन्दित व्यापारों के लिए धन उपलब्ध नहीं करवाते थे।
6. लोकाशाह जब मात्र 23-24 वर्ष के थे, तब वर्षभर के अन्तराल में ही उनके माता और पिता का देहावसान हो गया। इससे उन्हें संसार की क्षणभंगुरता का तीव्र अहसास हुआ। इसके पश्चात् वे अपनी पत्नी और पुत्र के साथ अहमदाबाद में रहने लगे। अहमदाबाद में लोकाशाह ने जवाहरात का कार्य किया। वे रत्नों व मोतियों के कुशल पारखी थे।
7. अहमदाबाद नरेश मोहम्मदशाह ने लोकाशाह की तीक्ष्ण-बुद्धि, ईमानदारी, त्वरित निर्णय क्षमता तथा उनके मानवीय सद्गुणों से आकर्षित होकर उन्हें राज्य का कोषाधिकारी मनोनीत किया।
8. अहमदाबाद नरेश के सत्ता लोलुपी पुत्र कुतुबशाह ने उसके पिता को विष देकर मार डाला। इससे धर्मप्राण लोकाशाह का अध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ गया तथा उन्होंने राजकीय पद का त्याग कर दिया।
9. लोकाशाह की लिखावट बहुत सुन्दर, सुपाठय तथा आकर्षक थी। इससे प्रभावित होकर यति ज्ञानसुन्दर ने उनको आगम ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने का कार्य सौंपा।
10. प्रज्ञाशील लोकाशाह आगम-प्रतिलिपि का कार्य लगन से करने लगे। वे महज लिपिकार ही नहीं थे, इसलिए एक सजग स्वाध्यायी और गम्भीर अध्येता के रूप में आप्त-वचनों को हृदयांगम करने लगे।
11. मूल आगम दशवैकालिक-सूत्र का लिपि-कार्य करते समय उनकी तर्क-मनीषा आन्दोलित हो उठी। उन्हें एक उपाय सूझा - आगमों का पुनः पुनः स्वाध्याय करने के लिए दो प्रतियाँ तैयार करना - एक दिन में, दूसरी रात्रि में। एक प्रति वे अपने पास रख लेते।
12. एक बार ज्ञानसुन्दरजी ने लोकाशाह के घर से आगम की प्रतियाँ मँगवाई। उस समय लोकाशाह घर पर नहीं थे। उनकी भद्र भार्या ने पूछा - "दिन वाली दूँ या रात वाली?" इससे लोकाशाह से आगम-लेखन का कार्य ले लिया गया।
13. इस घटना से लोकाशाह की आगम-स्वाध्याय की रुचि तीव्रतर हो उठी। श्रावक-श्राविकाओं तथा साध्वियों को भी आगम रखने और पढ़ने का पूरा अधिकार होता है, इस बात को उन्होंने आगे बढ़ाया।
14. श्रुत और आचार की एकनिष्ठ आराधना से उनकी तेजस्विता प्रखर होती चली गई। धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बर और सुविधाभोग की वृत्तियाँ देख उनका मन व्यथित हो गया। श्रमणाचार और श्रावकाचार में तेजी से पनप रहे स्वच्छन्दाचार को उन्होंने खुली चुनौती दी। उनका विरोध व्यक्ति या परम्परा से नहीं, विकृतियों से था।
15. चहुँओर लोकाशाह की चर्चा होने लगी। वे मैत्रीभाव से ओतप्रोत, सत्य के प्रति दृढ़, साधना और विचारों की ऊर्जा से भरे थे; इसलिए निर्भीक तथा निःशंक थे।
16. उनकी धर्म-क्रान्ति के शंखनाद से वातावरण बदलने लगा। वे निन्दा और प्रशंसा से परे रहकर धर्म-ध्वजा लिये

आगे बढ़ते रहे।

17. उस समय के जाने-माने श्रेष्ठी लखमसी भाई संघपति की हैसियत से लोकाशाह से शास्त्रार्थ करने के लिए प्रस्थित हुए। सत्य की सतत् साधना से आलोकित लोकाशाह के आभामण्डल में लखमसी भाई शास्त्र-चर्चा के उपरान्त लोकाशाह के समर्थक बन गये। इससे लोकाशाह के अभियान को और बल मिला।

18. उस समय अरहट्टवाड़ा, सिरोही, पाटण और सूरत के जैन संघ अहमदाबाद में थे। चारों संघों के सदस्यों ने लोकाशाह से धर्म और तत्त्व पर मुक्त चर्चा करने का विचार किया।

19. लोकाशाह शुष्क तार्किक नहीं थे; इसलिए उनकी बातों का गहरा असर होता था। चारों संघ लोकाशाह से न सिर्फ सहमत हुए, अपितु चारों संघ-प्रमुखों ने अनगार-धर्म अंगीकार करने की प्रबल इच्छा व्यक्त की; जिससे धर्म के रूढ़ि-मुक्त स्वरूप का व्यापक प्रचार-प्रसार हो सके। जबकि उस समय लोकाशाह स्वयं श्रावक ही थे।

20. चारों संघ-प्रमुखों के इस अद्भुत परिवर्तन से इकतालीस और व्यक्ति दीक्षा के लिए तैयार हो गये। चूंकि लोकाशाह स्वयं श्रावक थे, इसलिए दीक्षा के लिए ज्ञानजी मुनि को आमंत्रित किया गया। पैंतालीस व्यक्तियों ने एक साथ दीक्षा ले ली। यह घटना ऐतिहासिक, अपूर्व और प्रेरक है। चार संघ-प्रमुखों सहित 45 व्यक्तियों द्वारा एकाएक घरबार छोड़ देना तथा दीक्षा के लिए मुनिराज को आमंत्रित करना, सत्य के लिए सर्वस्व समर्पण और उदारता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

21. आगमों पर आधारित लोकाशाह द्वारा लिखित दो कृतियों का उल्लेख मिलता है - (1) लुँकाना सद्धियाँ अट्ठावन बोल, तथा (2) लुँकानी हुण्डी तेंतीस बोल। लोकाशाह के तेरह प्रश्न भी बहुत चर्चित हुए।

22. विक्रम संवत् 1536 में वीर लोकाशाह ने भी जैन आर्हती दीक्षा अंगीकार कर ली। तब तक लाखों व्यक्ति उनके धर्मक्रान्ति अभियान से जुड़ चुके थे।

23. पंथवादियों और सुविधाभोगियों को धर्म का आडम्बर -विहीन वैज्ञानिक स्वरूप नहीं जँचा। वे लोकाशाह के विरुद्ध दुष्प्रचार करने लगे, पर सफल नहीं हुए। उन्होंने कायरता का रास्ता अपनाया। श्रमणवर लोकाशाह इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) से विहार कर अलवर पहुँचे। यहाँ किसी विधर्मी ने धर्मप्राण लोकाशाह को विषयुक्त आहार दे दिया। विषाक्त भोजन ग्रहण करने के बाद उन्हें अनहोनी का आभास हो गया। समता व क्षमाभाव को कायम रखते हुए तुरन्त संलेखना संथारा ग्रहण कर वे महाप्रयाण कर गये। यह घटना चैत्र शुक्ल 11, विक्रम संवत् 1546 की है।

24- जैन धर्म की स्थानकवासी परम्परा के पुनरुद्धारक /प्रवर्तक लोकाशाह ने विष पीकर भी विश्व को पीयूष बाँटा। उनका उत्सर्ग व्यर्थ नहीं गया। भारतीय संस्कृति व श्रमण संस्कृति के इतिहास व उत्कर्ष में अनेक नये प्रेरक अध्याय जुड़ते चले गये तथा जुड़ते जा रहे हैं।

25. लोकाशाह ने अपने अनुयायियों को सदैव मैत्री-पथ पर चलने की शिक्षा दी। एक प्रसंग अत्यन्त प्रेरक है। वि.सं. 1636 में लोकाशाह के अनुयायी देवजी ने तपागच्छ के प्रभावक आचार्य हीरविजयजी को अपने यहाँ आश्रय देकर मुगलों से उनकी रक्षा की।

26. अनेक मतभिन्नताओं के बावजूद लोकाशाह का जीवन बंधुत्व और समत्व से अनुप्राणित था। अशोभनीय शब्दों में निन्दा करने वालों तथा ईर्ष्यालुओं के प्रति भी उनके मन में लेशमात्र द्वेष और कटुता नहीं थी।

27. कुछ लोगों ने लोकाशाह के जीवन के महत्त्वपूर्ण तथ्यों और साक्ष्यों को धूमिल, विकृत या नष्ट करने का प्रयास किया। संभवतः इसीलिए लोकाशाह की जन्म-तिथि, जन्म-स्थान, जन्म-कुल, गौत्र, श्रावक-जीवन, श्रमण-जीवन, स्वर्गवास-तिथि आदि के बारे में विविध/परिवर्तित जानकारियाँ मिलती हैं। कुछ मनीषियों और शोधार्थियों के द्वारा अनुसंधानों और प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर उनके जीवन के अधिकांश तथ्य सुस्थिर किये गये हैं। फिर भी नवीन शोध के द्वार हमेशा खुले रहते हैं।

28. श्रमण संस्कृति (जैन धर्म) में किसी नई सम्प्रदाय का प्रवर्तन प्रायः किसी श्रमण के नेतृत्व में होता आया है। लेकिन स्थानकवासी परम्परा का प्रवर्तन या पुनरुद्धार क्रांतधर्मी श्रावक लोकाशाह ने किया। इससे श्रावक और श्राविका का तीर्थ-स्वरूप मुखर और प्रखर हो उठा।

29. लोकाशाह ने ग्रंथालयों और पुस्तकालयों में उपेक्षित, जीर्ण-शीर्ण तथा दीमक से क्षतिग्रस्त आगमों की प्रतियों को

सहेजा। इस क्रम में उन्होंने बत्तीस आगमों की सुन्दर लिखावट में प्रतिलिपियाँ बनाईं, बनवाईं और सुरक्षित करवाईं। शास्त्र-सुरक्षा और शास्त्र-स्वाध्याय पर उन्होने बहुत जोर दिया। वे अपने समय के महान शास्त्रोद्धारक मनीषी थे।

30. आचार्य हस्तीमलजी प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास (चतुर्थ भाग) के अन्त में लोकाशाह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दो सौ से अधिक पृष्ठ समर्पित किये गये हैं। उन्होंने लोकाशाह को आचार्य देवर्द्धि क्षमाश्रमण (पाँचवीं सदी) के बाद का सर्वोच्च क्रियोद्धारक और धर्मोद्धारक बताया।

31. मरुधर-केसरी मुनि मिश्रीमलजी ने इतिहास-पुरुष लोकाशाह के जीवन पर 'धर्मवीर लोंकाशाह' पुस्तक लिखी। उन्होंने कार्तिक पूर्णिमा को लोकाशाह जयन्ती आयोजन को व्यापक बनाने के सफल प्रयास किये। आचार्य घासीलालजी की प्रेरणा से भी लोकाशाह पर लम्बी काव्य-रचना हुई।

32. लोकाशाह को अत्यंत तेजस्वी बताते हुए उपाध्याय अमरमुनि ने लिखा कि उन्होंने जन-जन के अंदर नई चेतना जगाई। नई दृष्टि दी। गृहस्थ होते हुए भी वे संत की ऊँचाई पर पहुँचे। उन्होंने ग्वालियर के राजा को इतना प्रभावित किया कि राजा उनकी चरणरज लेकर गद्गद् हो जाता था। इतने बड़े मनीषी, विद्वान थे लोकाशाह।

33. लोकाशाह की धर्मक्रांति को जीवराजजी, लवजीऋषि, धर्मदासजी, हरजीऋषि, धर्मसिंहजी प्रभृति मुनिवरों ने विशेष रूप से आगे बढ़ाया। इन्हीं श्रमणवरों की शिष्य-प्रशिष्य परम्पराओं को मिलाकर स्थानकवासी सम्प्रदाय बनी। सन् 1760 (वि.सं. 1817) में स्थानकवासी परम्परा में-से तेरापंथ सम्प्रदाय का उदय हुआ। ❖❖

जन्मोत्सव विशेष...

पूज्य प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. 'निर्भय' को नमन

- हेमंत बागरेचा जैन, राजगढ़ (मध्य प्रदेश)

मालव केसरी प्रसिद्ध वक्ता पूज्यपाद गुरुदेव श्री सौभाग्यमलजी म.सा. के अंतेवासी प्रिय सुशिष्य श्रमण संघ प्रवर्तक, मालव गौरव, संघठन शिरोमणि, पूज्यपाद प्रवर्तक गुरुदेव श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. 'निर्भय' का पावन जन्म दिवस 28 नवम्बर को आ रहा है। प्रवर्तक गुरुदेवश्रीजी ने मात्र 14 वर्ष की आयु मे संयम पथ को अंगीकार कर अपने गुरु सौभाग्यमलजी म.सा. एवं शिक्षा प्रदाता पूज्य श्री जीवनमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य को प्राप्त कर, आगम, अद्‌भुत प्रवचन कला, ज्योतिष आदि का खूब अध्ययन किया। आप गुरु आदेश को सर्वोपरि मानकर सदैव उसके अनुरूप ही संयम जीवन का निर्वाह कर रहे है। आपकी वाणी एवं ओजस्वी प्रवचन शैली का हर कोई आपके गुणगान कर रहे है। आपकी स्मरण शक्ति इतनी सजग है कि कोई आपसे 25 वर्ष पूर्व भी मिला हो तो भी आप उसे देखकर ही पहचान लेते हैं। आपकी निर्णय क्षमता इतनी मजबूत है कि आपके द्वारा दिया गया निर्णय सदैव संघ हितार्थ, जन हितार्थ, परिवार के हितार्थ ही होता है।

आप सदैव संघ एवं परिवार एकता के पक्षधर ही रहे हैं। आपका विहार क्रम मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि विभिन्न प्रांतों में रहता है। मालवा, निमाड़, डूँगर में आपके भक्तों की संख्या विशाल रुप से विद्यमान है। आपको संयम जीवन में अनेक महापुरुषों का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। आप सदैव विशाल श्रमण संघ की प्रगति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं। आपके सम्पर्क में आने वाले सभी संत-सतिया जी म.सा. चाहे वे श्रमण संघ के हो या अन्य किसी भी सम्प्रदाय के, सभी के प्रति आपका वात्सल्य एक समान रहता है। आपने, अपने संयम जीवन में बहुत कठिन संघर्ष किये। आपके गुरु श्री सौभाग्य के निर्देश के चाहे जैसी परिस्थिति बनें कभी भी श्रमण संघ नहीं छोड़ना। आज भी आप अपने गुरुदेव के आदेश का पूरी निष्ठा से पालन कर रहे हैं। आपके चेहरे पर सदैव प्रसन्नता ही विद्यमान रहती है। चाहे जो परिस्थिति हो, आपका संयम जीवन बहते जल की तरह निर्मल एवं काँच के समान पारदर्शी है। हर कोई आपसे मिलने, आपके दर्शन के लिए आतुर रहता है। आपके ना चाहते हुए भी आपके भक्त आपका जन्मदिवस प्रतिवर्ष विशाल पैमाने पर मनाते हैं। मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि इतनी विशाल रुप से भक्तों की श्रृंखला होने के बाद भी आपका वात्सल्य सदैव प्राप्त होता रहता है। आपके आगामी जन्मदिवस पर अग्रिम रुप से आपके श्रीचरणों में बारम्बार कोटि-कोटि वंदन, नमन प्रणाम! आप दीर्घायु हों, शतायु हों, आपका मार्गदर्शन सदैव जैन जगत एवं हम भक्तों को मिलता रहे, यही परमात्मा एवं आराध्य गुरुदेव सौभाग्यमल जी म.सा. से मंगल प्रार्थना करता हूँ। पुनः-पुनः आपके श्रीचरणों में बारम्बार वन्दन, नमन। ❖❖

विहार सेवा हेतु - जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा की अपील

परम पूज्य गुरु भगवंतों एवं महासाध्वीजी म.सा. के पावन श्रीचरणों में
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-राष्ट्रीय युवा शाखा, नई दिल्ली की ओर से
सादर वंदन, नमन एवं सुखसाता पृच्छा !

आध्यात्मिक चातुर्मास वर्ष 2025 की सफल एवं सुखद पूर्णता के उपरांत अब हमारे पूज्य संत-सतीवृंद का विहार आरंभ हो गया है।

इस पावन अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय युवा शाखा की ओर से विनम्र निवेदन है कि विहार यात्रा से संबंधित किसी भी आवश्यकता - आहार-विहार, आवास या अन्य सेवा व्यवस्था हेतु कृपया संबंधित प्रांतीय युवा अध्यक्ष से संपर्क अवश्य करें। युवा शाखा का प्रत्येक कार्यकर्ता पूज्य संत-साधु-साध्वीवृंद की सेवा को परम सौभाग्य मानते हुए, पूरी निष्ठा और तत्परता से सेवा के लिए उपस्थित रहेगा। हमारा संकल्प है कि पूज्य संत-साध्वीवृंद की प्रत्येक आवश्यकता का समय पर समाधान सुनिश्चित किया जाए।

आपका विहार मार्ग मंगलमय, निर्बाध एवं धर्मप्रसारकारी रहे - यही हमारी मंगलकामना।

सादर,

(विपुल जैन)
राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष

विहार संपर्क हेतु युवा शाखा के सभी प्रांतीय युवा अध्यक्षों एवं प्रांतीय महामंत्रियों के नाम एवं संपर्क नंबर नीचे दिए जा रहे हैं :-

प्रांतीय युवा अध्यक्ष		प्रांतीय युवा महामंत्री	
कर्नाटक-श्री आशीष भंसाली जैन-कर्नाटक	: 98442 50334	श्री किशोर बाफना जैन	: 98865 02636
तेलंगाना-श्री श्रेकिणराज डाफरिया जैन	: 94410 40401	श्री नवनीत नाहर जैन	: 94410 40401
तमिलनाडु-श्री मनीष अशोक कुमार जैन	: 98402 74685	श्री विनोद गुंदेचा जैन	: 99411 87240
पंजाब-श्री विनय सुरेश कुमार जैन	: 98033 70007	श्री गौरव जैन	: 98033 70007
हरियाणा-श्री अंश रविन्द्र जैन	: 98960 93861	श्री अभिषेक जैन	: 90502 31847
उत्तर प्रदेश/उत्तराखण्ड़-श्री पुनीत जैन	: 99178 59681	श्री वैभव जैन	: 99992 24685
दिल्ली-श्री विनीत कुमार जैन	: 99113 06323	श्री आशीष जैन	: 99113 06323
राजस्थान-श्री निर्मल भंवरलाल सिंघवी जैन	: 94141 63710	श्री विजेश सिसोदिया जैन	: 98292 41556
मध्य प्रदेश-श्री सुविधि कुमार झावेरी जैन	: 98262 17100	श्री अमित मोदी जैन	: 98921 99999
महाराष्ट्र ज़ोन-4 श्री हितेश कांकरिया जैन	: 81499 66001	श्री निकेतन कोठारी जैन	: 81499 66001
मुंबई-पुणे ज़ोन-5-श्री देवेन्द्र पारख जैन	: 95520 34848		
गुजरात-श्री कमलेश कुमार मादरेचा जैन	: 98258 08580	श्री हेमंत हिंगड़ जैन	: 98246 52366

समाचार प्रकाश

जैन समाज गौरव, तपोरत्न महोदधि आचार्य श्रीमद् विजय हंसरत्नसूरीश्वरजी महाराज का जैन भवन पधारने पर भव्य अभिनंदन

दिल्ली : जैन समाज के गौरव, तपोरत्न महोदधि आचार्य श्रीमद् विजय हंसरत्नसूरीश्वरजी महाराज शनिवार, 8 नवम्बर 2025 को अपने 180 दिवसीय महान उपवास व्रत के पारणोत्सव में शामिल होने हेतु जब जैन स्थानक जैन भवन पधारे, तो उनके शुभ पदार्पण से सम्पूर्ण परिसर आध्यात्मिक प्रकाश से आलोकित हो उठा।

इस पावन अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् परम पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज द्वारा प्रेषित अभिनंदन पत्र, शॉल एवं धार्मिक साहित्य भेंट कर आचार्यश्री की अद्भुत तपश्चर्या की सुखसाता पूछी और सहृदय अनुमोदना व्यक्त की।

उल्लेखनीय है कि पूज्य आचार्यश्री द्वारा यह दिव्य एवं कठोर तपस्या 8वीं बार की जा रही है, जो संपूर्ण जैन समाज के लिए गर्व और प्रेरणा का अनुपम स्रोत है।

प्रवचन प्रभावक परम पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय तत्त्वदर्शनसूरीश्वरजी महाराज तथा जैन भवन में पूर्व से विराजित महासाध्वी श्री श्रेष्ठा जी महाराज आदि ठाणे की विशिष्ट उपस्थिति ने वातावरण को और अधिक आध्यात्मिक एवं मंगलमय बना दिया।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों में राष्ट्रीय पर्यवेक्षक श्री सुभाषजी ओसवाल जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी बोकरिया जैन और राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. डॉ. अमितरायजी जैन ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से इस अभिनंदन समारोह की शोभा को बढ़ाया। यह भव्य आयोजन न केवल आचार्यश्री की अनुपम तपश्चर्या का सम्मान था, बल्कि समस्त जैन समाज के लिए श्रद्धा, प्रेरणा और अध्यात्म का एक अमूल्य, अलौकिक और स्मरणीय क्षण भी सिद्ध हुआ।

प्रेषक : अनिल श्रीवास्तव-महाप्रबंधक

दक्षिण भारत में युवा सम्मेलन एवं गुड लक अकाउंट 2.0 पुरस्कार समारोह

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के युवा शाखा (तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश/तेलंगाना) के संयुक्त तत्वावधान में दक्षिण भारत जोन-1 प्रथम युवा सम्मेलन एवं गुड लक अकाउंट 2.0 पुरस्कार समारोह का भव्य आयोजन चेन्नई में अत्यंत उत्साह, आध्यात्मिक गरिमा और युवा ऊर्जा के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 12 अक्टूबर को पुरसवाक्कम स्थित ए.एम.के.एम. स्थानक भवन में आयोजित सम्मेलन में परम पूज्य डॉ. समकितमुनि जी म.सा. का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय, प्रांतीय एवं युवा शाखाओं के प्रमुख पदाधिकारी, विभिन्न योजनाओं के प्रभारीगण तथा कर्नाटक, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना से पधारे युवा प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

इस प्रेरक सम्मेलन में दक्षिण भारत के सैकड़ों युवाओं ने भाग लेकर समाज की एकता, सेवा और समर्पण भावना का सशक्त संदेश दिया। प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री मनीषजी रांका जैन ने सभी आयोजकों, सहयोगी संस्थाओं एवं युवा साथियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की। वहीं गुड लक अकाउंट 2.0 - पुरस्कार वितरण समारोह 2 नवम्बर रविवार को चेन्नई के 3 स्थानों - ए.एम.के.एम. स्थानक भवन, पुरसवाक्कम, श्री एस.एस. जैन भवन, साहुकारपेट, श्री जैन भवन, कोडंबाक्कम-वडपलनी में अत्यंत उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। ए.एम.के.एम. स्थानक भवन में आयोजन का शुभारंभ अगमज्ञाता प्रज्ञा महर्षि पूज्य डॉ. समकितमुनि म.सा. आदि ठाणा 3 की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। साउकारपेट में कार्यक्रम

की पावन सान्निध्यता श्रमण संघीय मंत्री, राष्ट्रसंत पूज्य गुरुदेव श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' आदि ठाणा 5 की प्राप्त हुई। कोडंबाक्कम-वडपलनी में समारोह का संचालन पूज्या महासती श्री धर्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के मंगल सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य इस अभिनव योजना का मूल संदेश 'पहला कदम धर्म की ओर स्थानक आओ, ईनाम पाओ' 4 से 14 वर्ष के बच्चों एवं युवाओं में धर्म-जागरूकता, आत्मिक विकास और नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा विकसित करना है। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अनेक बच्चों ने चातुर्मास अवधि में मोबाइल/टीवी मस्खमन, जमीकंद त्याग, मौन, रात्रि भोजन त्याग, जंक फूड त्याग आदि विविध नियमों का पालन कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए।

प्रेषक : मनीष रांका जैन

राष्ट्रीय युवा शाखा की तीन दिवसीय साधु-संत दर्शन यात्रा एवं युवा संवाद सफलतापूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली-राष्ट्रीय युवा शाखा के पदाधिकारीगणों द्वारा पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड एवं दिल्ली NCR में सम्पन्न तीन दिवसीय साधु-संत दर्शन यात्रा तथा विभिन्न प्रांतों के युवा पदाधिकारियों के साथ आयोजित महत्वपूर्ण बैठकों का कार्यक्रम हर्षोल्लास एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

यात्रा का शुभारम्भ 5 नवम्बर 2025 : इस तीन दिवसीय यात्रा में राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री श्री अमित कुमार जी जैन, राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री श्री विशाल जी छल्लानी जैन, राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष श्री अतिमुक्त जी जैन श्री राजेशजी जैन बॉबी, श्री श्रमणजी जैन, श्री योगेशजी जैन, श्री जतिन्द्रजी जैन, श्री विनोदजी जैन गोयम, श्री अरूणजी जैन, श्री दीपांशुजी जैन, श्री अभयजी जैन, श्री विनयजी जैन, श्री राजीवजी जैन, श्री कुणालजी जैन, श्री रोहितजी जैन, श्री गौरवजी जैन, श्री जिनेशजी जैन, श्री लवजी जैन ने युवा पदाधिकारियों के साथ मिलकर आगामी कार्यक्रमों, संगठन की गतिविधियों तथा North Zone द्वारा अब तक किए गए कार्यों की समीक्षा की।

बैठकों में "Blood Donation Warrior App / रक्तदाता योद्धा App" तथा वर्ष 2026 के भावी कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा हुई। श्री विपुल जी जैन ने अधिक से अधिक युवाओं को जोड़कर संगठन शक्ति को प्रबल बनाने एवं सेवा-भावना से कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया।

पंजाब प्रांत साधु-संत दर्शन एवं प्रेरणा : लुधियाना - किचलू नगर स्थानक : युवा टीम ने पू. श्री पियूषमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 2 के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। यहाँ पिछले दो महीनों में आचार्य सम्राट परम पूज्य डॉ. शिवमुनि जी म.सा. के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में देश के विभिन्न जेलों में किए गए समुपदेशन, फल वितरण एवं कैदी पुनर्वास कार्यों की जानकारी प्रस्तुत की गई।

लुधियाना - सिविल लाइन्स : उपाध्याय प्रवर परम पूज्य श्री जितेंद्रमुनि जी म.सा., राष्ट्रसंत पू. श्री पीयूषमुनि जी म.सा. पंचकूलां में उत्तर भारतीय प्रवर्तक पू. श्री आशीषमुनिजी म.सा., होशियारपुर में पू. श्री शुभममुनिजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन का अवसर संपूर्ण युवा टीम को प्राप्त हुआ।

होशियारपुर : आगम ज्ञाता पू. श्री शुभममुनि जी म.सा. के दर्शन, आशीर्वाद लेकर पंजाब प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री विनय जी जैन एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री दीपांशु जी जैन द्वारा युवा कार्यकर्ताओं का विचार-विमर्श सत्र आयोजित किया गया। लगभग 27 युवाओं ने सितम्बर माह में सम्पन्न सामाजिक गतिविधियों का विवरण साझा किया। इसके उपरांत युवा टीम ने पंचकुला स्थानक में प्रवर्तक परम पूज्य श्री आशीषमुनि जी महाराज साहब आदि ठाणा के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

उत्तराखंड-देहरादून में मंगल विहार सहभागिता : 6 नवम्बर 2025, प्रातः 7 बजे, राष्ट्रीय युवा शाखा ने उपाध्याय प्रवर परम पूज्य श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 के चातुर्मास पश्चात विहार में प्रेमसुख धाम से देहरादून स्थानक तक सहभागिता की। यहाँ प्रवचन लाभ प्राप्त कर जैन कॉन्फ्रेंस के भविष्य के कार्यक्रमों पर मार्गदर्शन भी प्राप्त किया।

दिल्ली NCR-गाजियाबाद एवं त्रीनगर में दर्शन : यात्रा वापसी में युवा टीम ने कवि नगर स्थानक, गाजियाबाद

में परम पूज्य श्री सुभद्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 के दर्शन का लाभ लिया, जहाँ गाजियाबाद श्रीसंघ के अनेक मान्यवर भी उपस्थित रहे। इसके पश्चात त्रीनगर, दिल्ली स्थित गुरु रोशनलाल जी महाराज की तपोभूमि में वाचनाचार्य परम पूज्य श्री विशालमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भविष्य की योजनाएँ एवं साधु भगवंतों का मार्गदर्शन : यात्रा के दौरान युवा शाखा द्वारा भविष्य में किए जाने वाले सेवा कार्यों, सामाजिक उपक्रमों तथा "JAIN FIRST" व्यापार सहयोग मंच को सशक्त बनाने पर सार्थक चर्चा हुई। साधु-साध्वीवृंदों द्वारा संगठन विकास, सेवा संवर्धन एवं युवा शक्ति के सदुपयोग पर महत्वपूर्ण प्रेरणा एवं आशीर्वाद प्रदान किया गया। यह तीन दिवसीय साधु-संत दर्शन यात्रा न केवल आध्यात्मिक रूप से समृद्ध रही, बल्कि संगठन, सेवा और युवा शक्ति को दिशा देने वाला प्रेरणादायी एवं सार्थक अध्याय सिद्ध हुई। - **अमित कुमार जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री**

जरुरतमंद विद्यार्थियों को पाठय सामग्री का वितरण

जामखेड (महाराष्ट्र) : पू. श्री चारुप्रज्ञाजी म.सा. आदि ठाणा की प्रेरणा से जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्थ ज़ोन, कोठारी प्रतिष्ठान, समर्थ हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में होनहार और जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए पाठय सामग्री के वितरण का कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस पहल के अंतर्गत जामखेड क्षेत्र के 350 विद्यार्थियों को प्रत्येक को दो क्वायर बुक भेंट की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री आनंद भंडारी ने की।

अपने संबोधन में श्री भंडारी ने कहा कि मैं पिछले पाँच महीनों से आहिल्यानगर जिले में कार्यरत हूँ और लगभग हर दिन में श्री संजय कोठारी के समाजसेवी कार्यों की खबरें अखबारों में पढ़ता हूँ। इतनी उम्र में इतना बड़ा सामाजिक कार्य करना वास्तव में सराहनीय है। अब तक उन्होंने 6500 से अधिक लोगों की जान बचाई है। कोविड काल में भी उन्होंने सेवा कार्य जारी रखा। इतना ही नहीं, देहदान जैसे महान कार्य में उन्होंने पहल करते हुए 499 लोगों से फॉर्म भरवाए और अब तक 24 सफल देहदान, नेत्रदान कराए हैं। सड़क हादसों में घायल लोगों को रक्तस्राव की स्थिति में अस्पताल पहुँचाकर जीवनदान दिया है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा ऐसे व्यक्तियों से प्रेरणा लें, मन लगाकर पढ़ें और समाजसेवा की भावना सदैव जीवित रखें।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्थ ज़ोन के प्रांतीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी लोढ़ा जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री वसंतजी लोढ़ा जैन, विहारधाम योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कांतिलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री नंदकुमारजी भटेवरा जैन, श्री राजेंद्रजी बलदोटा जैन, श्री हेमराजजी खाबिया जैन, दी पीपल्स एज्युकेशन सोसायटी के अध्यक्ष श्री उद्धवबापू देशमुख, सचिव अरुणसेठ चिंतामणी, प्राचार्य बालासाहेब पारखे, राजेश मोरे, उद्योजक कांतिलाल कोठारी, बी.डी.ओ. शुभम जाधव, सी.ए. दिनेश राका, बालासाहेब संचेती, भारतीय जैन संगठन के जिला अध्यक्ष अमोल तातेड, समर्थ हॉस्पिटल के संचालक डॉ. भरत दारकुंडे, मैथ्सवर्ल्ड क्लासेस के प्रा. धनंजय भोसले, युवा उद्योजक मनोज दुगड, ग्रामसेवक संघ के जिला अध्यक्ष युवराज ढेरे, तालुका शिक्षणाधिकारी प्रदीप चव्हाण, शिक्षण विस्तार अधिकारी खताळ साहेब, उपमुख्याध्यापक राजमाने सर आदि उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम में कोठारी प्रतिष्ठान की ओर से उत्कृष्ट रंगोली बनाने वाले शिक्षीका का सम्मान किया गया। साथ ही एन.सी.सी. विद्यार्थियों, शिक्षक अनिल देड़े और कार्यक्रम के उत्कृष्ट नियोजन व सहयोग के लिए साई भोसले का आनंद भंडारी एवं संजय कोठारी के हाथों से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का प्रास्ताविक प्राचार्य बालासाहेब पारखे ने किया, जबकि संचालन और आभार प्रदर्शन धनंजय भोसले सर ने किया। यह कार्यक्रम केवल कॉपियों का वितरण नहीं था, बल्कि समाजसेवा, शिक्षा और मानवता का सुंदर संगम था। संजय कोठारी के कार्यों ने जामखेड और आहिल्यानगर जिले को गौरवान्वित किया है। **प्रेषक : संजय कोठारी जैन**

बैंगलोर में ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न

बैंगलोर (कर्नाटक) : बैंगलोर के एक उपनगर यलहंका जोकि उत्तर में स्थित है। यहाँ पर स्थानकवासी समाज के 10 घर है एवं मूर्तिपूजक समाज के 70 घर एवं तेरापंथ समाज के 10 घर है। यहां पर तीनों समाज को संगठित कर श्री सुमतिनाथ सकल जैन संघ यलंहका, बंगलुरु की स्थापना की एवं पदाधिकारी भी सभी संघों से बनाए गए। श्रमण संघ के ध्यान योगी पूज्य आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी महाराज साहब एवं प्रवर्तक पू. श्री सुकनमुनि जी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती पंडित रत्न रोचक व्याख्यानी वाणी भूषण पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञानमुनि जी महाराज साहब एवं सेवाभावी पू. श्री लोकेश मुनि जी महाराज साहब की सेवा में गत वर्ष हैदराबाद में आगामी 2025 के चातुर्मास की सामूहिक विनंती की। जिस पर गुरुदेव ने इस वर्ष फरवरी में स्वीकृति प्रदान करने की घोषणा की। उस समय हमारे संघ में हर्ष की लहर दौड़ गई। इस वर्ष के चार्तुमासिक प्रवेश से लगाकर आज समापन तक बहुत ही उमंग के साथ रोजाना के सुबह के प्रवचन एवं रविवारीय मध्यान्ह के प्रवचन में श्रावक एवं श्राविकाओं की विशाल आडम्बर रहित तप त्याग के साथ कार्यक्रमों में उपस्थिति रही। सभी धर्माचार्यों एवं प्रमुख साधु संतो का जन्म दिवस, दीक्षा दिवस एवं पुण्यतिथि सादगी के साथ मनाई गई।

पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. के ओजस्वीपूर्ण प्रवचन सुनने हेतु रोजाना हर क्षेत्रों से काफी संख्या में लोगों का आवागमन होता रहता था। हमारी पूरी व्यवस्था में सभी पदाधिकारियों का भरपूर सहयोग रहा। महामंत्री मनोहरलाल लुंकड़ ने रोजाना संचालन करते हुए तन-मन-धन के सहयोग किया। **प्रेषक : मनोहरलाल लुंकड़**

डिजिटलीकरण की ओर जैन कॉन्फ्रेंस का सशक्त कदम

परम पूज्य गुरु भगवंत-महासाध्वीवृंद के पावन श्रीचरणों में वंदन, नमन तथा श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज के सम्मानित महानुभावों को सादर जय जिनेन्द्र!

आदरणीय समाज बंधुओं, अत्यंत हर्ष एवं गर्व के साथ सूचित करना है कि आधुनिक डिजिटल युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन की भावनानुसार श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली अब सभी प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है। हमारा उद्देश्य है कि देशभर के श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज को एक डिजिटल मंच पर जोड़कर धार्मिक कार्यक्रम, सामाजिक गतिविधियाँ, सेवाकार्य, साधु-साध्वीवृंदों की अहम जानकारियाँ एवं प्रेरक समाचार-सभी तक शीघ्र और विश्वसनीय रूप से पहुँच सकें। आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप अपने क्षेत्र के दैनिक धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम, विहार समाचार, आयोजन, समाचार, फोटो, वीडियो आदि हमें मोबाइल नंबर : 90197 31906 पर अवश्य प्रेषित करें, ताकि उन्हें देशव्यापी समाज तक पहुँचाया जा सके।

साथ ही, आप स्वयं भी जुड़कर इस डिजिटल पहल का हिस्सा बनें। इसके लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक कर हमारे आधिकारिक सोशल मीडिया परिवार से जुड़े :-

Facebook: https://www.facebook.com/aissjc1906, Instagram: https://www.instagram.com/aissjc1906
YouTube: http://www.youtube.com/@aissjc, Blogger: https://aissjc1906.blogspot-com
Threads: https://www.threads.com/@aissjc1906, X/Twitter: https://x.com/aissjc1906
Linked-in: https://www.linkedin.com/in/aissjc1906, Website: https://jainconference.org
E-mail: aissjc1906@gmail-com, Watsapp: +91 9019731906

आपकी सहभागिता, आपका सहयोग-हमारे समाज की शक्ति है।

सादर,

डॉ. अमितराय जैन

राष्ट्रीय महामंत्री

बैरागन बहन शीतलजी जैन का नादौन जैन समाज की ओर से भव्य बहुमान एवं तिलक समारोह

नादौन (हिमाचल प्रदेश) : नादौन की पवित्र धरती पर एक अद्भुत एवं प्रेरणादायी आध्यात्मिक आयोजन आयोजित हुआ। श्रमण संघ के परम आदरणीय सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म. के सान्निध्य एवं आशीर्वाद में बैरागन बहन शीतलजी जैन का भव्य बहुमान एवं तिलक समारोह अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न किया गया। समारोह में डॉ. श्री दीपेन्द्रमुनि जी म. के 40वें जन्मदिवस की शुभकामनाएँ भी श्रद्धालुजनो ने दी।

इस अवसर पर श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री दिनेशमुनि जी म.सा. ने कहा कि दीक्षा जीवन का सबसे बड़ा और पवित्र संकल्प है। दीक्षा का अर्थ है-संसारिक मोह, माया, आसक्ति और भौतिक सुखों का त्याग कर आत्मा की शुद्धि और मोक्षमार्ग को अपनाना। यह केवल वस्त्र परिवर्तन या बाहरी रूपांतरण नहीं, बल्कि भीतरी जागृति और आत्मिक परिवर्तन की प्रक्रिया है।

बैरागन बहन शीतलजी जैन, जिनका जन्म 30 अक्टूबर 1990 को बोईसर (महाराष्ट्र) में हुआ, ने सांसारिक जीवन में रहते हुए भी धर्म, साधना और वैराग्य के पथ को अपनाने का अद्भुत संकल्प लिया। आपने B.Com और M.A. इन जैनोलॉजी की उपाधियाँ प्राप्त की, परंतु शिक्षा का अंतिम लक्ष्य आपने आत्मज्ञान और संयम को माना। बीते 7 वर्षों से वैराग्य मार्ग पर दृढ़ता और साधना के साथ अग्रसर रहने के पश्चात अब शीतल जैन 22 फरवरी 2026 को गुरुणी दक्षिण चंद्रिका महासाध्वी पू. डॉ. श्री संयमलताजी म.सा. तथा पू. साध्वी डॉ. कमलप्रज्ञा जी म.सा. के सान्निध्य में जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करेंगी।

इस पावन अवसर पर श्री एस. एस जैन सभा के प्रधान रमेश जैन, महामंत्री मनोज जैन, कोषाध्यक्ष रोहित जैन ने हिमाचल पारंपरिक टोपी व तिलक लगाया व साथ ही युवक मंडल नादौन, सन्मति महिला मंडल नादौन, व महिला मंडल की वरिष्ठ सदस्याओं तथा नगर के जैन परिवारों द्वारा संयुक्त रूप से वैराग्य बहिन शीतलजी जैन का तिलक एवं बहुमान किया गया।

प्रेषक : मनोज जैन

श्रमण संघीय उपप्रवर्तिनी तप कौमुदी महासती श्री निर्मलाजी म.सा. के पावन सान्निध्य में चातुर्मास समापन एवं कृतज्ञता दिवस कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

बैंगलोर (कर्नाटक) : राजाजीनगर श्री संघ ने तन-मन-धन से, उत्साह और लगन के साथ इस चातुर्मास में सेवा का श्रेष्ठ कार्य किया। संघ के पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्यगण, त्रिशला महिला मंडल, त्रिशला बहु मंडल, राजाजीनगर युवा मंडल, ब्राह्मी कन्या मंडल एवं जिनेश्वर युवा महावीर जैन पाठशाला के सभी सदस्यों ने विविध धार्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से चातुर्मास को एक स्वर्णिम अध्याय बना दिया है।

इस अवसर पर साध्वी श्री नंदिनीजी म.सा. ने कहा कि वीर संत लोकाशाह का स्थानकवासी परंपरा पर अनन्य उपकार रहा है। उन्होंने असंख्य लोगों को धर्म से जोड़ने का कार्य किया और आगम में निहित धर्म के स्वरूप को सरल भाषा में समझाया। लोकाशाह ने सत्य वचनों को जन-जन तक पहुँचाया और धर्म का प्रकाश फैलाया। उनका प्रभाव इतना व्यापक था कि उनके प्रवचनों में जन सैलाब उमड़ पड़ता था। उन्होंने संघ और शासन की महती प्रभावना की। आज जो स्थानकवासी परंपरा सुरक्षित और सुदृढ़ रूप में विद्यमान है, वह लोकाशाह के उपकारों का प्रतिफल है। ऐसे वीर संत के चरणों में साध्वीवृंद ने शत्-शत् वंदन नमन किया।

कार्यक्रम में अनेक श्रद्धालुओं ने साध्वीवृंद के प्रति भाव व्यक्त किए और कृतज्ञता प्रकट की। अध्यक्ष प्रकाशजी चानोदिया ने सभी का चातुर्मास सफलता पर सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया और गुरुवर्या के चरणों में कृतज्ञता अर्पित की।

कार्यकारिणी व समस्त सहयोगी संस्थाओं का व सभी समितियों का सेवा हेतु आभार व्यक्त किया। संघ मंत्री नेमीचंद दलाल ने चातुर्मास में सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संघ की एकता और सेवा भावना इस चातुर्मास की सबसे बड़ी उपलब्धि रही। हमने इस चातुर्मास में धार्मिक आयोजनों को ही नहीं देखा बल्कि संघ में एकता अनुशासन और सौहार्द का वातावरण भी देखा। इस चातुर्मास से हम एक संकल्प अवश्य ले कि हम सभी सदैव धर्म और संघ से जुड़े रहे।

इस अवसर पर संघ अध्यक्ष प्रकाशजी चानोदिया, उपाध्यक्ष रोशनलालजी नाहर, मंत्री नेमीचंदजी दलाल, कोषाध्यक्ष प्रसनजी भलगट, जंबूजी दुग्गड़, महावीरचंदजी धोका, ज्ञानचंदजी लोढ़ा, जंबूकुमारजी दुग्गड़, किशोरकुमारजी दलाल, भागचंदजी गुगलिया, जसवन्तजी छाजेड, नेमीचन्दजी बाबेल, वसंतकुमारजी रांका, विनयजी बंब, कांतिलालजी गांधी, त्रिशला महिला मंडल अध्यक्ष सुशीलाबाईजी बोहरा, मंत्री रेखाजी पोखरना, त्रिशला बहु मंडल अध्यक्ष नीतूजी लुंकड़, सहमंत्री ममताजी बागरेचा, राजाजीनगर युवा अध्यक्ष धीरजजी नाहर, आयुषजी भलगट, ब्राह्मी कन्या मंडल अध्यक्ष नेहाजी लुणावत, महावीर जैन पाठशाला से कांताजी बागरेचा, सरलाजी दुग्गड, नीमाजी देरासरीया व अन्य ने भी अपने भाव व्यक्त किए।

इस मौके पर जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक प्रांत के अध्यक्ष प्रकाशजी बुरड़, वरिष्ठ उपाध्यक्ष दिनेशजी पोखरना, महामंत्री नेमीचंदजी दलाल, उपाध्यक्ष किशोरकुमारजी दलाल, जसवंतजी गन्ना, हस्तीमलजी बाफना, गुलाबचंदजी पगारिया, अनिलजी बाफना, जसवंतजी दलाल, रत्नीबाईजी मेहता, युवा शाखा अध्यक्ष आशीषजी भंसाली, रूपेशजी सिसोदिया, सुनीलजी बंब व अन्य उपस्थित रहे।

प्रेषक : नेमीचंद दलाल जैन

जैन दिवाकर जी महाराज की 148वीं जन्म जयंती एवं जावरा गौरव श्री कस्तूरचंद जी म. की 120वीं दीक्षा जयंती का आयोजन

जावरा (निप्र) : जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल जी म.सा. भारतीय संस्कृति की धारा में श्रमण संस्कृति का विशिष्ट स्थान है। इसी श्रमण परम्परा में एक आदर्श विशिष्ट युग पुरुष सन्त का अभ्युदय हुआ। उनका नाम है श्री चौथमल जी महाराज। जिनका जन्म संवत 1934 की कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को नीमच (म.प्र.) में माता केशरदेवी की कुक्षी से हुआ, पिता का नाम श्री गंगारामजी चोरड़िया। 18 वर्ष की यौवनावस्था में संसार की असारता एवं जीवन के शाश्वत सत्य का आंकलन करने वाले आप वो चिराग थे, जिन्होंने अपने ज्ञान पुंज का प्रकाश विकीर्ण कर जगत के अज्ञान अंधकार को दूर करने तथा विषमताओं को हर्षोल्लास में बदलने का दृढ़ संकल्प लिया था।

उपाध्याय श्री कस्तूरचंद जी म.सा. का जन्म मालवा भूमि के जावरा शहर में विक्रम संवत 1948 में धर्मशीला माता फूली की कुक्षी से हुआ, पिताश्री थे श्री रतिचन्द जी चपलोत। आपकी दीक्षा संवत् 1962 की कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी को रामपुरा में गुरुदेव परम धैर्यवान आचार्य श्री खूबचंद जी म.सा. के पावन सान्निध्य में हुई। आपको ज्ञान दाता रहे दादा गुरुदेव वादीमान मर्दक श्री नंदलाल जी म.सा. एवम अखण्ड यशधारी आचार्य पूज्य श्री मन्नालाल जी म.सा. की सेवा में सलग्न रहे। उक्त जानकारी देते हुए पूर्व महामंत्री संदीप रांका एवं नवयुवक मंडल के पूर्व अध्यक्ष मनोज डांगी ने बताया की जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा. की 148वीं जन्म जयंती एवं जावरा के गौरव मालवरत्न उपाध्याय कस्तूरचंद जी म.सा. की 120वीं दीक्षा जयंती पर गुरु भक्तों द्वारा गायों का स्वामिवात्सल्य जीवदया सोसायटी पर किया गया। इस दौरान श्री संघ के पूर्व अध्यक्षद्वय बंसतीलाल चपडोद, पारसमल बरडीया, पुखराजमल कोच्चटा के साथ ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्रीपाल कोचट्टा के साथ सुजानमल कोच्चटा, संदीप रांका, मनोज डांगी, शेखर नाहर, महावीर छाजेड, पुखराज भंडारी, शांतीलाल डांगी, नवयुवक मंडल अध्यक्ष आकाश जैन, राहुल रांका, पवन डांगी, नितिन कोलन, सुधीर कोचट्टा, अजय चपलोत, ऋषभ छाजेड, संदीप जैन, पराग कोचट्टा, सौरभ दुग्गड, राहुल गादिया, प्रकाश कोठारी, अभय मंडलेचा, प्रितेष कोचट्टा, अंशुल मेहता, संदीप श्रीमाल, निखिल श्रीमाल के साथ जैन दिवाकर महिला मंडल एवं जैन दिवाकर बहु मंडल की सदस्य भी उपस्थित थे

प्रेषक : संदीप रांका जैन

गुरु विशाल जन्मोत्सव भव्य रूप से संपन्न

कानपुर (उत्तर प्रदेश) : श्रमण के महान संत वरिष्ठ उपाध्याय वाचनाचार्य पू. डॉ. श्री विशालमुनि जी महाराज के 73वें जन्म जयंती के प्रसंग पर दिनांक 12 नवंबर 2025 को उप प्रवर्तक सेवाभावी पू. श्री सतीशमुनि जी महाराज साहब, श्रमण संघ गौरव राष्ट्रसंत पू. श्री सौरभमुनि जी महाराज साहब आदि ठाणा 6 संतों के पावन सान्निध्य में भव्य गुणगान समारोह और विशाल भंडारा कानपुर में संपन्न हुआ। श्री जैन श्वेतांबर स्थानकवासी संघ खोया बाजार समाज के तत्वाधान में श्री भूपेंद्र केशवलाल शाह परिवार, प्रधान श्री दिलीप शाह परिवार एवं संपूर्ण कानपुर जैन समाज के उपस्थिति में बहुत भव्य शानदार प्रोग्राम संपन्न हुआ जिसमें सैकड़ो लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर आनंदपुरी समाज, श्वेतांबर मूर्ति पूजक समाज, दिगंबर समाज, विधायक श्रीमती नीलम कटिहार एवं भाजपा की वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित रहे। श्री महावीर युवक मंडल, महिला मंडल बहुत शानदार सेवा का लाभ रहा। **प्रेषक : दिलीप शाह**

उपाध्याय पू. श्री प्रवीणऋषि जी म.सा. के सान्निध्य में होगी कु. चैताली बहन की दीक्षा

मिरी, अहमदनगर (महाराष्ट्र) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक मालेगांव कैम्प के लिए यह अत्यंत गर्व और सौभाग्य का क्षण है कि श्रीसंघ के जेष्ठ एवं प्रतिष्ठित सदस्यों श्री प्रकाशचंदजी जैन, श्री प्रदीपचंदजी बोकड़िया जैन की भतीजी तथा श्री संतोषकुमारजी बोकडिया जैन की सुपुत्री, वैराग्यवती कु. चैतालीबहन अपनी आत्मा के कल्याण हेतु 12 मार्च 2026 को गुरु आनंद दीक्षा भूमि मिरी में श्रुतज्ञान के तेजस्वी प्रणेता उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. तथा संस्कारदाता पूज्य श्री प्रीतिदर्शनजी म.सा.के पावन सान्निध्य में दीक्षा मार्ग पर अग्रसर होने जा रही हैं। यह दीक्षा महोत्सव केवल उनके परिवार का नहीं, बल्कि पूरे श्रीसंघ का आध्यात्मिक गौरव है। उनके इस निर्णय से हम सभी के हृदय में आत्मकल्याण की प्रेरणा जागृत होती है। हम सब मिलकर इस पावन अवसर के साक्षी बनें तथा चैताली बहन के शुभ वैराग्य मार्ग पर मंगलकामनाएँ अर्पित करें। **प्रेषक : शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन**

डॉ. दिलीप धींग की पुस्तक 'समय के अश्व' का विमोचन

चेन्नई (तमिलनाडु) : हिंदी व राजस्थानी के कवि डॉ. दिलीप धींग की छठी काव्यकृति **'समय के अश्व'** का विमोचन 16 नवम्बर, रविवार सुबह टी. नगर, बर्किट रोड़ स्थित जैन स्थानक में पू. डॉ. समकितमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में हुआ। श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन एजुकेशनल सोसायटी के महासचिव अभय श्रीश्रीमाल जैन, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, मांबलम के अध्यक्ष डॉ. उत्तमचंद गोठी एवं 'चंदन तिलक' (साप्ताहिक) के संपादक डॉ. पारस संचेती ने विमोचन किया। श्रीश्रीमाल ने पहली प्रति पू. डॉ. श्री समकितमुनि जी म.सा. को भेंट की।

मुनिश्री जी ने कहा कि डॉ. धींग समाज के विद्वत् रत्न हैं। ये अपने प्रभावी लेखन और कविताओं से समाज को जगाते रहते हैं। श्रीश्रीमाल ने कहा कि बहुत कम विद्वान हैं, जो डॉ. धींग की तरह विविध विषयों पर अनेक विधाओं में लिखते हैं और निरंतर लिखते हैं। पुस्तक प्रकाशन और विमोचन को एक सुअवसर मानते हुए उन्होंने डॉ. धींग का साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दी। अध्यक्ष डॉ. गोठी ने कहा कि डॉ. दिलीप धींग के साहित्य में एकता व समन्वय के स्वर गूंजते हैं।

डॉ. दिलीप धींग ने विमोचित पुस्तक 'समय के अश्व' की दो कविताएँ सुनाई। उन्होंने मांबलम जैन संघ एवं अभुषा फाउंडेशन का आभार जताया और बताया कि 140 पृष्ठीय इस पुस्तक में 144 कविताएँ हैं, जो 101 शीर्षकों में वर्गीकृत हैं। कार्यक्रम का संचालन मंत्री महेन्द्र जी गादिया ने किया। समारोह में पू. श्री भवांतमुनि जी म.सा. और पू. श्री जयवंतमुनि जी म.सा. के अतिरिक्त बड़ी संख्या में श्रावक श्राविकाएँ उपस्थित थे। **प्रेषक : डॉ. दिलीप धींग**

शोक समाचार

पानीपत (हरियाणा) : सुश्रावक श्रीमान् राजेशजी जैन का आकस्मिक देवलोकगमन दिनांक 12 अक्टूबर को हो गया।

लुधियाना (पंजाब) : सुश्रावक श्रीमान् पवन कुमार जी जैन का दिनांक 20 नवंबर को देवलोकगमन हो गया।

पुणे (महाराष्ट्र) : सुश्रावक श्रीमान् सुमतिलाल जी लुंकड़ जैन का दिनांक 27 नवंबर को सागारी संथारा के साथ देवलोकगमन हो गया।

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

नाशिक (महाराष्ट्र) की पुण्य धरा पर पूज्य गुरुदेव युवाचार्य श्री महेंद्रऋषिजी म.सा., प्रवर्तक पूज्य श्री प्रकाशमुनि जी म. सा. का देऊर में विहार के दौरान मंगल मिलन का दृश्य, साथ में सतिया जी महाराज सा. वंदन नमन करते हुए स

देहरादून में उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा. के चातुर्मास समापन के पश्चात् विहार में सहभागिता करते हुए राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री अमित कुमार जी लोढ़ा जैन एवं अन्य युवा साथीगण।

कविनगर गाजियाबाद में प्रवर्तक पू. श्री सुभद्रमुनि जी म.सा. के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, राष्ट्रीय युवा महामंत्री अमित कुमार जी लोढ़ा जैन एवं अन्य युवा साथीगण।

जैन स्थानक पश्चिम विहार दिल्ली में विराजित राष्ट्रसंत उत्तर भारतीय प्रवर्तक पू. श्री सुभद्रमुनि जी म. आदि ठाणा के दर्शनों का लाभ लेते हुए ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश जी जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन, प्रांतीय महामंत्री श्री ललितजी ओसवाल जैन आदि।

जैन भवन, दिल्ली में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन द्वारा राष्ट्रीय पदाधिकारियों की में इचलकरंजी निवासी श्री जीवनराज जी पुनमिया जैन को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद का पद प्रतिष्ठा पत्र सौंपते हुए।

दिल्ली की मा. मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी को दीपावली के शुभ अवसर पर भेंट कर बधाई देते हुए जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोषजी जैन एवं प्रांतीय महिला अध्यक्षा, महामंत्री सहित अन्य महानुभाव।

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री रजनीश जी जैन 'राज' को 50वें जन्मदिवस के अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, राष्ट्रीय मुख्य पर्यवेक्षक श्री प्रशांत जी जैन एवं अन्य सामाजिक बंधुओं के साथ महामंत्र नवकार मंत्र जाप के पश्चात् बधाई देते हुए।

जामखेड़ (महाराष्ट्र) में जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्थ जोन, कोठारी प्रतिष्ठान, समर्थ हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में 350 होनहार और जरुरतमंद विद्यार्थियों को कॉपी वितरण के अवसर पर मौजूद जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारीगण।

RNI NO.- 2123/1957

नवम्बर 2025

Date of Publication : 23-24/11/2025

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

वाचनाचार्य उपाध्याय पू. श्री विशालमुनिजी म.सा. के जन्मोत्सव पर आदर की चादर भेंट करते हुए राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जी जैन एवं राष्ट्रीय - प्रान्तीय महिला पदाधिकारीगण।

करोलबाग (प्रेम भवन) उपप्रवर्तक पूज्य भंते गुरुदेव श्री पारस मुनि जी म.सा. के पावन दर्शन कर यमुना पार की ओर बिहार करते हुए मधुरवक्ता, सेवा श्रमण श्री रचित मुनि जी म.सा. आदि ठाणा -5

आकुर्डी जैन स्थानक में आचार्य प्रवर प. पू. विश्वकल्याण सुरीश्वरजी म. सा. को आदर की चादर समर्पण करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के हर प्रान्त जैन भवन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अशोककुमारजी पगारिया, पंचम जोन के अध्यक्ष नितीनजी बेदमुथा तथा विविध संघो के अध्यक्षगण।

जैन भवन, दिल्ली में आयडियल जर्नलिस्ट एसोसिएशन के 25वें स्थापना दिवस स्वर्ण जयंति समारोह पर स्मारिका का विमोचन करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. डॉ. अमितराय जी जैन एवं उक्त संस्था के अन्य पदाधिकारीगण।

जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांन्तीय महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पाजी खोखावत, वरिष्ठ उपाध्यक्षा रेखाजी जैन, उपाध्यक्षा किरणजी जैन, ज्ञान प्रकाश योजना अध्यक्षा पुष्पाजी सुराणा, मंत्री पुष्पाजी मोदी, मंत्री कुसुमजी डांगी एवं कार्यकारिणी सदस्या पुष्पबालाजी मेले में महिलाओं को रोजगार हेतु प्रोत्साहन देते हुए।

महाराष्ट्र नंदूरबार में मुमुक्षु श्री सुरेश जी कोटडिया शाहादा निवासी, मुमुक्षु सुश्री झील जी कोटडिया एवं मुमुक्षु बहन सुश्री झलक जी कोटडियाका बहुमान करते हुए श्रीसंघ एवं जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

अतुल जैन — राष्ट्रीय अध्यक्ष

डॉ. अमितराय जैन — राष्ट्रीय महामंत्री

विनय कुमार जैन — राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 बेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित